समयक फेड़मे मनुक्ख

(बदलैत गाम, बदलैत समय आ जूझैत मनुक्खक कथा)

समयक फेड़मे मनुक्ख

(बदलैत गाम, बदलैत समय आ जूझैत मनुक्खक कथा)

(श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक चयनित कथा)

संकलन एवं भूमिका

डॉ. राम नरेश राय

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

SAMAYAK PHEDME MANUKKH

A Collection of Fourteen Maithili Short Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal
Compiled and Introduced by Dr. Ram Naresh Roy

Samayak Phedme Manukkh is a curated collection of fourteen Maithili short stories by Shri Jagdish Prasad Mandal, one of the most prolific and significant voices in modern Maithili literature. With more than a thousand short stories to his credit, Mandal has created a vast narrative world rooted in the soil, speech, memory, labour, and moral life of Mithila. A recipient of the Tagore Literature Award (2011) and the Sahitya Akademi Award (2021), his fiction records the changing face of rural life with rare insight and human depth.

The stories in this volume reflect changing villages, shifting values, social pressure, family tensions, labour, memory, and the quiet struggle of ordinary people to preserve dignity. Mandal's storytelling grows from lived experience rather than dramatic excess. Through farmers, labourers, women, elders, and marginal figures, he reveals how society changes and how human values survive within difficult conditions.

At its core, **Samayak Phedme Manukkh** presents the individual caught in the turn of time. The collection offers a distinct entry into Mandal's story-world, where changing life and enduring humanity meet with quiet strength.

Published by: Pallavi Prakashan
Tulsi Bhawan, Nehru Marg, Ward No. 06, Nirmali, District: Supaul, Bihar: 847452

First Edition: 2026
ISBN: Apply for
Price: 300/-
Copyright: © Publisher

Printed by: Manav Art (Pallavi Prakashan)
Typesetting: Dr. Umesh Mandal, umeshberma@gmail.com
Cover Design: Mrs. Poonam Mandal, Nirmali, Supaul, Bihar- 847452

Website: http://pallavipublication.blogspot.com
Email: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
Mobile: +91 99316 54742, +91 62006 35563
Font Source: Google Fonts

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, distributed, transmitted, adapted, paraphrased, stored in a retrieval system, or processed in any form or by any means, including electronic, mechanical, digital, or artificial intelligence systems, without the prior written permission of the copyright holder or the publisher.

कथा-क्रम

भूमिका

1 बगदल गाम

2 गामक बान्ह

3 चास-बास दुनू गेल

4 किसानी छोड़ए पड़त

5 एक घोंट पानि

6 विचार हेरा गेल

7 समाजक ऐना

8 सहोदर भाय

9 विखण्डन

10 मनुक्खक मोल

11 बदलैत जीवन

12 खसैत गाछ

13 जीवन दर्शन

14 विचारवान

भूमिका

समयक फेड़मे मनुक्खः बदलैत गाम आ जूझैत मनुष्यता

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक कथा-संसारमे प्रवेश करब कथा पढ़बाक साधारण प्रक्रिया नहि अछि। ई एकटा पूरा जीवन-प्रदेशमे प्रवेश करब अछि। एहि जीवन-प्रदेशमे गाम अछि, खेत अछि, श्रम अछि, घर-अँगना अछि, टोल-पड़ोस अछि, संस्कार अछि, लोक-विश्वास अछि, अभाव अछि, संघर्ष अछि आ सभसँ ऊपर मनुक्खक भीतर बचल नैतिक विवेक अछि।

मण्डलजीक कथा पढ़ैत काल पाठक शीघ्र बुझि जाइत अछि जे हुनका लग कथा घटना भरि नहि अछि। कथा हुनका लेल जीवनक भीतर चलैत अदृश्य हलचलकेँ पकड़बाक माध्यम अछि। ओ मनुक्खकेँ ओकर बाहरी परिस्थितिमे देखैत छथि। ओकर भीतरी दुविधा सेहो देखैत छथि। ओकर विवेक, असमंजस, चोट, लाज, जिद्द आ प्रतिरोधक क्षमता देखैत छथि। एहि लेल हुनकर कथा बाहरक जीवनक वृत्तान्त होइतहुँ भीतरक जीवनक अन्वेषण सेहो बनि जाइत अछि।

मण्डलजीक लेखनक व्यापकता अपने-आपमे उल्लेखनीय अछि। हजारसँ अधिक कथा लिखब सामान्य रचनात्मक उपलब्धि नहि अछि। ई दीर्घ साधनाक परिणाम अछि। ई नियमित जीवनानुशासनक फल अछि। ई लोकजीवनक प्रति गहींर प्रतिबद्धताक प्रमाण अछि। तथापि संख्या हुनकर महत्त्वक एकमात्र आधार नहि अछि। असली महत्त्व एहि बातमे अछि जे एहि विशाल लेखनक भीतर मिथिलाक ग्रामीण समाज अपन अनेक रूपमे उपस्थित अछि। अपन तनाव सहित, अपन टूटन सहित, अपन सम्भावना सहित आ अपन बदलैत चेहरा सहित।

हुनकर कथा-संसारमे गाम स्थिर नहि अछि। गाम चलैत अछि। बदलैत अछि। अपन पुरान मानकसँ जूझैत अछि। नव समयक दबाव झेलैत अछि। कतेक बेर ओ अपनहि लोकक आँखिक आगू अपरिचित बनि जाइत अछि।

मण्डलजी एहि बदलावकेँ भावुक विलापमे नहि बदलैत छथि। ओकरा नारा सेहो नहि बनबैत छथि। ओ ओकरा जीवनक यथार्थ रूपमे देखैत छथि आ पाठककेँ सेहो ओहिना देखबाक लेल बाध्य करैत छथि।

मण्डलजीक गामक प्रति दृष्टि प्रेमपूर्ण अछि, मुदा अन्ध-आसक्तिसँ मुक्त अछि। ओ गामक धरतीक मान राखैत छथि। श्रमक मान राखैत छथि। बोलीक मान राखैत छथि। सम्बन्धक स्मृति बचबैत छथि। मुदा ओ अन्धविश्वासकेँ सेहो देखैत छथि। दायित्वहीनताकेँ चिन्हैत छथि। सामाजिक जड़तापर चुप नहि रहैत छथि। स्त्री-विरोधी दृष्टि हुनकर कथामे अनदेखल नहि रहैत अछि। स्वार्थक चेहरा ओ देखबैत छथि। जातिगत खाँचक चोट ओ चिन्हैत छथि। परिवारक विखण्डन हुनका लग गम्भीर प्रश्न अछि। नैतिक ढीलापन सेहो हुनकर कथा-चिन्ताक विषय अछि। एहि कारण हुनकर गाम न आदर्शलोक अछि, न पतनक अन्धकार। से जीवनक वास्तविक क्षेत्र अछि, जतए मनुक्ख अपन समूचा विरोधाभासक संग उपस्थित अछि।

प्रस्तुत संचयन **समयक फेड़मे मनुक्ख** एहि जीवन-प्रदेशमे प्रवेश करबाक एक विशेष द्वार अछि। एहि संग्रहमे चौदह कथा संकलित अछि: **बगदल गाम, गामक बान्ह, चास-बास दुनू गेल, किसानी छोड़ए पड़त, एक घोंट पानि, विचार हेरा गेल, समाजक ऐना, सहोदर भाय, विखण्डन, मनुक्खक मोल, बदलैत जीवन, खसैत गाछ, जीवन दर्शन** आ **विचारवान**। एहि कथासभक चयन करैत काल ई ध्यान राखल गेल अछि जे मण्डलजीक चर्चित कथासभक पुनरावृत्ति भरि नहि हो। हुनकर कथा-दृष्टिक ओ पक्ष सामने आबए, जाहिमे बदलैत समय अपन असली दबाव सहित देखाइत अछि। गामक बान्ह ढील पड़ैत अछि। खेती असुरक्षित होइत अछि। परिवार दरारि पकड़ैत अछि। मनुक्खक मोल घटैत अछि। विचारक आवश्यकता तीव्र होइत अछि।

एहि संग्रहक शीर्षकमे प्रयुक्त **फेड़** शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। समयक फेड़ समयक प्रवाह भरि नहि अछि। ई समयक दबाव अछि। ई मोड़ अछि। ई उलझन अछि। ई कसावट अछि। ई परीक्षा अछि। मनुक्ख समयक भीतर रहैत अछि। समय ओकर निर्णय बदलैत अछि। सम्बन्धक रूप बदलैत अछि। जीवनक आधार हिला दैत अछि। धैर्यक परीक्षा लैत अछि। नैतिकताकेँ जाँचैत अछि। विवेककेँ कटघरामे ठाढ़ करैत अछि।

मण्डलजीक कथामे मनुक्ख यएह फेड़मे अछि। कतेक बेर ओ फँसल देखाइत अछि। कतेक बेर असमंजसमे रहैत अछि। कतेक बेर चोट खाइत अछि। कतेक बेर चुप रहैत अछि। कतेक बेर हारि मानैत जकाँ बुझाइत अछि। मुदा कथा ओतबे पर नहि रुकैत अछि। कथा देखबैत अछि जे जीवनक दबावक बीचोमे मनुक्खक भीतर किछु बचल रहैत अछि। लाज बचल रहैत अछि। स्मृति बचल रहैत अछि। दायित्व बचल रहैत अछि। करुणा बचल रहैत अछि। प्रतिरोध बचल रहैत अछि। आ सभसँ महत्त्वपूर्ण, विचार बचल रहैत अछि।

मण्डलजीसँ हमर परिचय पाठकक परिचय मात्र नहि रहल। जहिया हम शोध-काजमे लागल छलहुँ, तहियेसँ हुनकर रचनाक प्रति हमर आकर्षण बनल। ओहि समयमे हुनकासँ भेँट भेल। हुनकासँ किछु पोथीसभ प्राप्त भेल। क्रमशः ई अनुभव गहींर भेल जे हुनकर कथा-साहित्यकेँ सामान्य ग्रामीण कथा कहि सीमित करब उचित नहि। ग्राम्य जीवनक चित्र हुनकर रचनामे अवश्य अछि, मुदा ओ चित्र सजावट नहि अछि। ओ सामाजिक अध्ययनक आधार अछि। ओ जीवनक भीतर प्रवेश करबाक माध्यम अछि।

सगर राति दीप जरय कथागोष्ठीमे सेहो हुनका संग, हुनकर कथा-परम्पराक वातावरणमे, कएक बेर सहभागी होएबाक अवसर भेटल। ओ गोष्ठी कथा-पाठ अथवा कथा-श्रवणक आयोजन भरि नहि छल। ओ कथा, समाज आ पाठकक बीच जीवित संवादक लोक-मंच छल। ओहि अनुभवसँ मण्डलजीक कथा-दृष्टिक सामाजिक पृष्ठभूमि अधिक स्पष्ट भेल। हुनका लग कथा कागजपर लिखल शब्द मात्र नहि अछि। कथा लोकक बीच लौटए चाहैत अछि। संवाद बनए चाहैत अछि। समाजक अनुभवमे फेरसँ सक्रिय होएबाक चाहैत अछि।

मण्डलजीक गाम बेरमा आ हमर गाम खड़गामा बहुत दूर नहि अछि। दुनू गामक बीच मोटामोटी पन्द्रह किलोमीटर दूरी होएत। मुदा साहित्यिक दृष्टिसँ ई दूरी भूगोलक दूरी भरि नहि अछि। ई एके सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रक भीतर अलग-अलग अनुभवक दूरी सेहो अछि। मिथिलाक गामसभ एक-दोसरासँ मिलैत-जुलैत अछि, फेरो प्रत्येक गामक अपन अलग स्वभाव अछि। खेत-खरिहानक रूप बदलैत अछि। पारिवारिक सम्बन्धक बनावट बदलैत अछि। जाति-संरचना अपन अलग दबाव बनबैत अछि। लोकाचारक भिन्न रंग होइत अछि। श्रम-विभाजनक पद्धति बदलैत अछि। स्त्रीक स्थिति अलग-अलग रूपमे

देखाइत अछि। लोक-विश्वास आ आधुनिकता एक गामसँ दोसर गाम धरि भिन्न ढंगसँ टकराइत अछि। मण्डलजी एहि स्थानीय अनुभवकेँ व्यापक मानवीय अर्थ दैत छथि। हुनकर कथा पढ़ैत काल केवल बेरमा, खड़गामा, अड़रिया, चनौरागंज अथवा कोनो एक गाम भरि नहि देखाइत अछि। एक पूरा ग्रामीण समाजक बदलैत चेहरा देखाइत अछि।

बगदल गाम एहि संचयनक आरम्भिक कथाक रूपमे अत्यन्त सार्थक अछि। बंगलोरसँ गाम आएल पात्र सरलाही जाएबाक विचार करैत अछि। ओकरा रामचन्द्रक परिवारमे चिट्ठी आ रुपैआ पहुँचएबाक अछि। माए चेतबैत छथिन। सरलाही गाम बगदल अछि। ई वाक्य कथाक केन्द्र बनि जाइत अछि। बगदल गाम बीमारीसँ ग्रस्त गाम अछि। डरायल गाम अछि। लोक-विश्वासक दबावमे फँसल गाम अछि। ओहन समाज अछि जतए आधुनिक चिकित्सा-बोध आ **माता पसरल छथि** जेहन लोक-व्याख्या आमने-सामने ठाढ़ अछि।

कथामे शहर आ गामक दूरी अछि। परदेश आ माटिक दूरी अछि। माएक चेतावनी अछि। पत्नीक असुरक्षा अछि। लोकक प्रश्न अछि। केतए जाएब? सरलाही धरि जाएबाक छोट यात्रा धीरे-धीरे गामक बदलैत मनोविज्ञानक यात्रा बनि जाइत अछि। पात्र गामकेँ चाहैत अछि, मुदा ओ गामक दैनिक जीवनसँ कटि गेल अछि। ओकर भीतर अपन गामक स्मृति अछि, मुदा वर्तमान गाम ओकरा असहज करैत अछि। एहि कथामे मण्डलजी कहैत नहि छथि जे गाम खराब भऽ गेल। ओ स्थिति सामने राखि दैत छथि। पाठक अपने देखैत अछि जे बदलावक अर्थ विकास मात्र नहि होइत। बदलाव सम्बन्धक ढीलापन सेहो अछि। अनुभवक दूरी सेहो अछि। विश्वास आ विवेकक टकराहट सेहो अछि।

गामक बान्ह एहि आरम्भिक अनुभवक सामाजिक विस्तार अछि। बान्ह एतए माटि-पानिक बाँध भरि नहि अछि। ई समाजक बन्धन अछि। ई लोक-दायित्व अछि। ई सहकार अछि। ई आपसी भरोस अछि। मृत्यु जेहन संकट-प्रसंगमे समाजक असली चेहरा खुलैत अछि। जे समाज आनक दाह-कर्ममे सहभागी होइत छल, ओ जखन अनुपस्थित होए लगैत अछि, तखन गामक आत्मापर प्रश्न उठैत अछि।

बुधियार काका सामाजिक दायित्वक प्रतिनिधि पात्र छथि। ओ आग्रहक प्रतीक्षा नहि करैत छथि। समाजक काजकेँ अपन कर्तव्य मानैत छथि। मुदा जखन

हुनके घरमे मृत्यु होइत अछि, तखन समाजक बान्ह ढील पड़ल देखाइत अछि। कथा एहि अनुपस्थितिक पीड़ासँ बनैत अछि। मण्डलजी उपदेश नहि दैत छथि। ओ परिस्थिति बनबैत छथि। पाठक देखैत अछि जे समाजक परीक्षा उत्सवमे कम, संकटमे अधिक होइत अछि। मृत्यु, बीमारी, अभाव, विवाह, आगि, जल आ खेतक काज। एहि सभ प्रसंगमे जे लोक एक-दोसराक संग ठाढ़ होइत अछि, ओही समाजक असली पहचान होइत अछि। जँ ई सहकार टूटि जाए, तँ गामक नाम बचि सकैत अछि, मुदा गामक आत्मा कमजोर पड़ि जाइत अछि।

चास-बास दुनू गेल एहि संग्रहक महत्त्वपूर्ण कथा अछि। शीर्षक स्वयं अपन पीड़ा कहि दैत अछि। चास गेल तँ खेतक आधार गेल, बास गेल तँ घरक भरोस गेल। एक दिस जमीनक प्रश्न अछि। दोसर दिस परिवारक प्रश्न अछि। सेवा-निवृत्त जीवन, पेंशन, जमीन, हिस्सा, बेटा-बेटी, जमाए, उत्तराधिकार आ सम्मान। ई सभ मिलि कथाकेँ आर्थिक संकटसँ आगू लऽ जाइत अछि। ई मनुक्खक अस्थिर जीवनक कथा बनैत अछि।

ग्राम्य समाजमे जमीन सम्पत्ति भरि नहि होइत। ओ स्मृति अछि। ओ श्रमक इतिहास अछि। ओ परिवारक आत्मसम्मान अछि। ओ पीढ़ीक सम्बन्धक आधार अछि। जखन जमीन हिस्साक वस्तु बनैत अछि, तखन सम्बन्धक भाषा बदलैत अछि। जखन पेंशन आ जमा-जिगिर परिवारक समीकरण बदलए लगैत अछि, तखन मनुक्ख अपन घरमे सेहो असुरक्षित भऽ सकैत अछि। एहि कथामे मण्डलजी ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक प्रश्नकेँ नैतिक प्रश्नमे बदलैत छथि। ई हुनकर कथा-कला केर विशेषता अछि।

किसानी छोड़ए पड़त किसान-जीवनक आधुनिक संकटकेँ सोझ रूपमे सामने अनैत अछि। खेती मिथिलाक गाममे पेशा भरि नहि रहल अछि। ओ जीवन-पद्धति रहल अछि। ऋतु ओकरासँ जुड़ल। भोजन ओकरासँ जुड़ल। श्रम ओकरासँ जुड़ल। घरक अनुशासन ओकरासँ जुड़ल। पर्व-त्योहार धरि ओकरासँ प्रभावित रहल। मुदा आब किसानक भरोस टूटि रहल अछि। रौदी अछि। बाढ़ि अछि। नीलगाय अछि। बानर अछि। बोनैया सुग्गर अछि। बाजारक दबाव अछि। श्रमक लागत अछि। उपजक अनिश्चितता अछि। किसानक मनमे प्रश्न उठैत अछि। किसानी बचत केना?

मण्डलजी किसानक संकटकेँ आँकड़ाक रूपमे नहि देखैत छथि। ओ

ओकरा घरक भीतर देखैत छथि। मनक भीतर देखैत छथि। खेत छूटब माने श्रमक अर्थ छूटब। खेती छोड़ब माने पीढ़ीक जीवन-पद्धतिपर प्रश्न उठब। गाम छोड़ब माने सामाजिक स्मृतिसँ कटब। एहि कथामे आधुनिक ग्रामीण जीवनक भयावह फेड़ उपस्थित अछि। किसान उत्पादनक साधन नहि अछि। ओ गामक समयक रक्षक अछि। किसानीक टूटन ग्रामीण सभ्यतामे दरारिक संकेत अछि।

एक घोंट पानि बाहरी रूपेँ सरल कथा जकाँ देखाइत अछि, मुदा एहि कथाक भीतर गहींर मानवीय पीड़ा अछि। पानि जीवनक न्यूनतम आवश्यकता अछि। मुदा कथामे पानि प्यासक वस्तु भरि नहि रहैत। ओ करुणा बनैत अछि। साझेदारी बनैत अछि। आत्मस्वीकार बनैत अछि। जीवनक ओर लौटबाक संकेत बनैत अछि।

विलास बाबू जेहन पात्र राजनीति, प्रतिष्ठा, अकेलापन आ भीतरक रिक्ततासँ गुजरैत अछि। अन्ततः ओकरा एक घोंट पानिक स्मृति खींचैत अछि। बाल-संगी विकासक भरोस ओकरा भीतर जीवित रहैत अछि। एक घोंट पानि एहि अर्थमे मनुष्यता केर न्यूनतम कसौटी अछि। समाजक बड़ घोषणा अलग बात अछि। प्यासल मनुक्खकेँ पानि देबाक क्षण असली नैतिकता खोलि दैत अछि। मण्डलजीक कथा-शक्ति यएह अछि जे ओ छोट वस्तुसँ पैघ प्रश्न उठबैत छथि।

विचार हेरा गेल एहि संग्रहक मध्य भागमे एक गम्भीर मोड़ बनबैत अछि। ई कथा बतबैत अछि जे समाजक संकट संसाधनक कमीसँ मात्र पैदा नहि होइत। विचार हेराए तखन संकट गहिर होइत अछि। सुवोधनी जेहन पात्र घरक भीतरक दायित्व, शिक्षा, अपेक्षा, श्रम आ मौन संघर्षक बीच जूझैत अछि। ओ शिक्षित परिवेशसँ आएल छथि। हुनका भीतर आत्मबल अछि। मुदा घरक संरचना कतेक बेर विचारकेँ साँस लेबाक जगह नहि दैत अछि।

कथामे प्रश्न उठैत अछि। विचार हेरा गेल? हारि गेल? हरण भऽ गेल? दहन भऽ गेल? एहि प्रश्नक मार्मिकता एतए अछि जे विचार कोनो बाहरी नारा नहि अछि। विचार मनुक्खक भीतरक रोशनी अछि। जँ घरक भीतर विचार दबि जाए, तँ समाजक बाहरक उजास टिकत केना? एहि कथामे स्त्रीक मन, घरक श्रम, आत्मसम्मान आ मौन पीड़ा एकसंग उपस्थित अछि। मण्डलजी एहि सभकेँ करुण भावुकतासँ नहि, जीवनक धीमा तनाव बना कऽ रखैत छथि।

समाजक ऐना मण्डलजीक साहित्य-दृष्टिक केन्द्रीय कथा मानल जा सकैत अछि। ऐना देखब सरल बुझाइत अछि, मुदा असलमे ऐना देखबा लेल आँखि चाही। साहस चाही। अपन चेहरा स्वीकार करबाक तैयारी चाही। कथामे मुम्बइसँ आएल ज्योतिकेँ गाम अन्हार बुझाइत अछि। ई अन्हार बिजलीक कमी भरि नहि अछि। ई अपरिचयक अन्हार अछि। ई कटि गेल अनुभवक अन्हार अछि। लक्ष्मण भाय आ ज्योतिक संवाद समाज, साहित्य, भाषा आ देखबाक-बुझबाक क्षमतापर प्रश्न उठबैत अछि।

कथा जँ समाजक ऐना अछि, तँ ओकर काज सजल चेहरा देखाएब मात्र नहि। फाटल चेहरा सेहो देखाएब। मलिनता देखाएब। टूटन देखाएब। सम्भावना देखाएब। मण्डलजी समाजकेँ दोष देबाक उतावलपनसँ नहि लिखैत छथि। ओ समाजक भीतरक संरचना देखैत छथि। ओकर विघटन देखैत छथि। ओकर सामूहिक जिम्मेदारी सामने अनैत छथि। एहि कथामे साहित्यक काज स्पष्ट होइत अछि। साहित्य समाजक सामने ऐना राखैत अछि, मुदा पाठककेँ अपन आँखि खोलए पड़ैत अछि।

सहोदर भाय परिवारक भीतर बदलैत सम्बन्धक कथा अछि। सहोदरता जन्मसँ बनैत अछि, मुदा ओकर मूल्य व्यवहारसँ सिद्ध होइत अछि। भाई-भाईक सम्बन्ध, हिस्सा, दायित्व, मातृ-पितृ स्मृति, विकलांग सदस्यक भविष्य आ बहिनक साहस। ई सभ एहि कथाकेँ पारिवारिक संवेदनाक गम्भीर धरातलपर लऽ जाइत अछि। ललित काका जखन शारीरिक रोगसँ बेसी मानसिक रोगक बात करैत छथि, तखन कथा परिवारक भीतरक अदृश्य संकट खोलैत अछि।

सहोदर भाय कहब सरल अछि। सहोदर बनल रहब कठिन। रक्तक सम्बन्ध अपने-आपमे पर्याप्त नहि होइत। ओहि सम्बन्धमे दायित्व चाही। स्मृति चाही। परस्पर भरोस चाही। परिवारक कमजोर सदस्यक प्रति उत्तरदायित्व चाही। कथा एहि बातकेँ भावुक घोषणासँ नहि कहैत अछि। परिस्थिति आ संवाद ओकरा स्वयमेव स्पष्ट करैत अछि।

विखण्डन एहि पारिवारिक संकटक विस्तृत सामाजिक रूप अछि। विखण्डन घर टूटबाक नाम मात्र नहि अछि। मूल्य टूटैत अछि। स्मृति टूटैत अछि। सामूहिक निर्णयक परम्परा टूटैत अछि। आत्मीयता टूटैत अछि। एक घरमे रहि कऽ लोक अलग-अलग संसारमे रहि सकैत अछि। एक गाममे रहि कऽ लोक

एक-दोसरासँ कटि सकैत अछि। कुसुमपुर जेहन गाम एहि व्यापक विखण्डनक प्रतीक बनि उठैत अछि।

समदर्शी बाबा जेहन पात्र पुरान समयक स्मृति लऽ कऽ अबैत छथि। ओ देखैत छथि जे पहिने साँझ-भोर लोक एकठाम बैसैत छल। परिवार आ गामक गप्प होइत छल। निर्णय सामूहिक अनुभवसँ बनैत छल। आब व्यवहार बदलि गेल अछि। पीढ़ीक सम्बन्ध बदलि गेल अछि। गामक आवाज बदलि गेल अछि। एहि कथामे मण्डलजी अतीत-मोहमे नहि फँसैत छथि। ओ अतीतक स्मृतिकेँ वर्तमानक कसौटी बनबैत छथि। प्रश्न ई नहि जे पुरान सभ नीक छल। प्रश्न ई अछि जे आजुक समाज अपन सामूहिक बुद्धि कतए छोड़ि रहल अछि?

मनुक्खक मोल एहि संचयनक मानवीय केन्द्रक रूपमे उपस्थित अछि। समाजमे मनुक्खक मोल की अछि? धनसँ मापल जाएत? जातिसँ? श्रमसँ? उपयोगितासँ? प्रतिष्ठासँ? आकि ओकर मनुष्यता सँ? बस-स्टैण्डक दुर्घटना, मुआवजाक चर्चा, ललितक भीतर उठैत प्रश्न आ कुशल किशोर बाबूक विचार एहि कथाकेँ नैतिक बहस बना दैत अछि।

जीवित मनुक्खक मोल हम केना लगबैत छी? मरल देहक मुआवजा तौलैत समय समाज केना सोचैत अछि? मनुक्ख जँ संख्या बनि जाए, फाइल बनि जाए, दुर्घटना बनि जाए, तखन मनुष्यता कतए रहत? मण्डलजीक कथा एहि प्रश्नक सामने पाठककेँ ठाढ़ करैत अछि। हुनका लग मनुक्खक मूल्य ओकर आचरणसँ बनैत अछि। ओकर संवेदनासँ बनैत अछि। ओकर श्रमसँ बनैत अछि। ओकर दायित्वसँ बनैत अछि। ओकर विवेकसँ बनैत अछि।

बदलैत जीवन शीर्षक स्वयं संचयनक व्यापक संकेत अछि। जीवन बदलैत अछि। ई स्वाभाविक बात अछि। मुदा बदलावक दिशा की अछि, ई मूल प्रश्न अछि। रघुवीर बाबा जेहन पात्र परिवर्तनसँ डरैत व्यक्ति नहि छथि। ओ जीवनमे अनेक बदलाव देखलनि। पारिवारिक भारक बदलाव, कृषि-सुधारक बदलाव, उन्नत बीजक प्रयोग, मशीनक उपयोग। हुनकर अनुभव हुनका अन्हारमे नहि छोड़ैत, परखक धरातलपर ठाढ़ करैत अछि।

मण्डलजी आधुनिकता-विरोधी नहि छथि। ओ अन्ध-आधुनिकतासँ सचेत छथि। ओ परम्पराक अन्ध-समर्थक सेहो नहि छथि। ओ परम्पराक भीतर बचल मानवीय अनुभवकेँ पहचानैत छथि। **बदलैत जीवन** कथा ई सिखबैत अछि जे

परिवर्तनक मूल्य ओकर चमकसँ नहि लगाओल जा सकैत अछि। ओकर असर मनुक्ख, श्रम, सम्बन्ध आ जीवनक संतुलनपर देखबाक चाही।

खसैत गाछ एहि संग्रहक अत्यन्त मार्मिक कथा अछि। गाछ मण्डलजीक कथा-संसारमे वनस्पति मात्र नहि रहैत। ओ घर-आँगनक अपनत्व, स्मृतिक गहराइ, पीढ़ीक निरन्तरता आ धरतीसँ जुड़ल जीवनक जीवित प्रतीक बनि उठैत अछि। ओ छाया अछि, फल अछि, धैर्य अछि आ जीवनकेँ चुपचाप सम्हारि राखएबला भरोस सेहो अछि। तैँ जखन गाछ खसैत अछि, तखन केवल लकड़ी नहि खसैत। स्मृति खसैत अछि। आश्रय खसैत अछि। पुरान भरोस खसैत अछि।

पुरन ठाकुर एहि खसैत गाछक मानवीय प्रतिरूप जकाँ सामने अबैत छथि। हुनकर घर असुरक्षित अछि। देह कमजोर अछि। मन भीजल अछि। जीवनक आधार ढील पड़ल अछि। मुदा कथा करुणाक भीख नहि माँगैत। ओ मनुष्यक भीतर बचल स्नेह, अपनत्व आ सहाराक सूक्ष्म रोशनीकेँ देखबैत अछि। **अहीठाम रहि जाउ** जेहन साधारण वाक्य पुरन काकाक जीवनमे असाधारण अर्थ लए अबैत अछि। ओ वाक्य सुनि हुनकर मुस्कुराहट मनुष्यता केर बचल उजास बनि उठैत अछि।

एहि कथामे मण्डलजी बतबैत छथि जे जूझैत मनुक्खकेँ सहारा हरदम पैघ साधनसँ नहि भेटैत। कतेक बेर एक आत्मीय वाक्य, एक अपनत्वपूर्ण आग्रह आ एक मनुष्यक निकटता सेहो जीवनकेँ टूटैसँ बचा लैत अछि।

जीवन दर्शन कथामे शम्भुनाथ काका असगरे दरबज्जापर बैसल आजुक परिवेशपर विचार करैत छथि। ओ जीवनसँ विमुख होइत मनुक्खक स्थिति देखैत छथि। कथा बाहरी देव-दर्शनसँ आगू बढ़ि आत्म-दर्शनक ओर संकेत करैत अछि। मनुक्ख जँ अपने-आपकेँ नहि चिन्हत, तँ ओकर समाज-बोध अधूरा रहत। जीवन-दर्शन एतए निबन्धक निष्कर्ष नहि अछि। ओ अनुभवक निचोड़ अछि। उम्र, साधना, ज्ञान, सामाजिक चिन्ता आ आत्ममंथन एहि कथाकेँ वैचारिक गहराइ दैत अछि।

मण्डलजी जीवनक कठिनाइ देखैत छथि। टूटन देखैत छथि। अभाव देखैत छथि। धोखा देखैत छथि। संघर्ष देखैत छथि। मुदा ओ निराशामे कथा समाप्त नहि करैत छथि। हुनका लग मनुक्खक भीतर विचार करबाक क्षमता अछि। परिस्थिति परखबाक क्षमता अछि। सीमित स्थितिमे नैतिक निर्णय लेबाक

क्षमता अछि। एहि लेल हुनकर कथामे जीवन-दर्शन उपदेश नहि बनैत। ओ लोक-अनुभवक सार बनैत अछि।

विचारवानकेँ अन्तिम कथाक रूपमे राखब संचयनक दृष्टिसँ बहुत सार्थक अछि। समयक फेड़मे फँसल मनुक्ख जँ विचारहीन भऽ जाए, तँ ओ परिस्थितिक धक्कासँ ढकेलल प्राणी बनि रहि जाएत। जँ ओ विचारवान अछि, तखन ओ दुखकेँ बुझैत अछि। समाजक दोषकेँ चिन्हैत अछि। परिवारक टूटनकेँ देखैत अछि। खेतीक संकटपर विचार करैत अछि। गामक बदलावक अर्थ निकालैत अछि। जीवनक दबावक भीतर अपन नैतिक आधार बचबैत अछि।

गुलाब भाय जेहन पात्र एहि विचारशीलताकेँ जीवित करैत छथि। जाति, समाज, परिवार, खेती, अनुभव, समत्व आ जीवनक व्यावहारिक बुद्धि हुनका भीतर एकसंग सक्रिय अछि। रामलखन बाबाक शुभकामना कथाकेँ ऊँचाइ दैत अछि। विचारवान बनल रहब माने जीवनक प्रति जागल रहब। विचारवान बनल रहब माने टूटैत समयमे अपनेकेँ ढहबाक अनुमति नहि देब। एहि कथामे पूरा संचयनक वैचारिक परिणति देखाइत अछि।

एहि संचयनक कथा-क्रम स्वयं एक यात्रा बनबैत अछि। आरम्भ बदलैत गामसँ होइत अछि। फेर समाजक बान्हपर प्रश्न उठैत अछि। किसानक संकट सामने अबैत अछि। पानि, जीवनक न्यूनतम आवश्यकता, मनुष्यताकेँ परखैत अछि। विचारक हेराइ गम्भीर चिन्ता बनैत अछि। समाजक ऐना सामने राखल जाइत अछि। परिवारक सम्बन्ध जाँचल जाइत अछि। विखण्डनक पीड़ा खुलैत अछि। मनुक्खक मोलपर प्रश्न उठैत अछि। बदलैत जीवनक दिशापर विचार होइत अछि। खसैत गाछ मनुष्यक असुरक्षाकेँ मार्मिक रूप दैत अछि। अन्ततः जीवन-दर्शन आ विचारवान मनुष्य धरि कथा-यात्रा पहुँचैत अछि। एहि क्रममे पाठक चौदह कथा भरि नहि पढ़ैत। ओ गामसँ समाज, समाजसँ परिवार, परिवारसँ मनुक्ख आ मनुक्खसँ विचार धरि आलोचनात्मक यात्रा करैत अछि।

मण्डलजीक कथा-कला एहि अर्थमे विशिष्ट अछि जे ओ घटनाकेँ चिल्लाहट नहि बनबैत छथि। घटना धीरे-धीरे खुलैत अछि। पात्र अपन व्यवहारसँ बोलैत अछि। संवाद जीवनसँ उठैत अछि। वाक्यक गति कतेक बेर गामक बोलीक गतिसँ चलैत अछि। कथामे प्रश्न अचानक नहि अबैत। ओ जीवनक भीतरसँ उगैत अछि। पाठक जँ धैर्यसँ पढ़ए, तँ ओ देखत जे मण्डलजीक कथामे

बाहरी घटनासँ बेसी महत्त्वपूर्ण ओकर भीतर चलैत मनोवृत्ति अछि।

हुनकर कथा-भाषापर विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता अछि। एहि भाषामे बनावटी साहित्यिकता नहि अछि। लोक-बोल अछि। व्यवहार अछि। कहबी अछि। ग्रामीण मुहावरा अछि। संवादक स्वाभाविक लय अछि। जीवनक धरातलसँ उठल अभिव्यक्ति अछि। कतेक ठाम जे अनगढ़ता जकाँ देखाइत अछि, से वस्तुतः लोक-अनुभवक असंशोधित ऊर्जा अछि। पात्र जेना सोचैत अछि, भाषा तहिना चलैत अछि। परिस्थिति जेना बनैत अछि, वाक्य तहिना साँस लैत अछि। एहि कारण पाठक मात्र भाषा नहि पढ़ैत अछि। ओ जीवनक ध्वनि सुनैत अछि।

एहि संचयनक महत्त्व शोधार्थी लेल सेहो विशेष अछि। ग्रामीण समाजक परिवर्तन, कृषि-संकट, लोक-विश्वास, आधुनिक चेतना, सामाजिक दायित्वक क्षरण, परिवारक विखण्डन, मनुक्खक मूल्य, विचारक भूमिका, प्रतीक-विधान, कथानक-संरचना, संवाद-शैली, लोक-भाषिक ऊर्जा आ नैतिक प्रश्न। ई सभ बिन्दु एहि संग्रहमे एकठाम उपलब्ध अछि। एहि पोथीकेँ आधार बना कऽ मण्डलजीक कथा-साहित्यक समाजशास्त्रीय अध्ययन कएल जा सकैत अछि। नैतिक अध्ययन कएल जा सकैत अछि। भाषिक अध्ययन कएल जा सकैत अछि। सांस्कृतिक अध्ययन कएल जा सकैत अछि। दार्शनिक अध्ययन सेहो कएल जा सकैत अछि।

समीक्षक लेल ई संचयन एक आग्रह राखैत अछि। मण्डलजीक कथा-साहित्यकेँ ग्राम्य कथा कहि सीमित नहि कएल जाए। ग्राम्य जीवन अवश्य अछि। मुदा ओहि ग्राम्य जीवनक भीतर आधुनिक समयक जटिल प्रश्न अछि। खेतीक प्रश्न अछि। प्रवासनक प्रश्न अछि। स्त्रीक प्रश्न अछि। परिवारक प्रश्न अछि। जाति आ समाजक प्रश्न अछि। विचारक प्रश्न अछि। मनुष्यताक प्रश्न अछि। एहि कारण मण्डलजीक कथा स्थानीय होइतहुँ व्यापक अछि। ओ मिथिलाक गामसँ उठैत अछि, मुदा मनुक्खक सार्वकालिक संकट धरि पहुँचैत अछि।

एहि भूमिका लिखैत काल हमर उद्देश्य कथा-क्रमक औचित्य बताएब भरि नहि अछि। उद्देश्य ई अछि जे पाठक एहि पुस्तककेँ विचार-यात्राक रूपमे पढ़थि। मण्डलजीक कथा सहज अछि, पर साधारण नहि। ओ पाठकसँ धैर्य माँगैत अछि। वातावरणपर ध्यान माँगैत अछि। संवादपर ध्यान माँगैत अछि।

मौनपर ध्यान माँगैत अछि। वस्तु, संकेत, लोक-विश्वास आ मनःस्थितिपर ध्यान माँगैत अछि। जँ पाठक कथानक खोजि कऽ आगू बढ़ि जाएत, तँ बहुत किछु छूटि जाएत। जँ ओ जीवनक ध्वनि सुनत, तखन मण्डलजीक कथा ओकरा बहुत दूर धरि लऽ जाएत।

समयक फेड़मे मनुक्ख एहि अर्थमे प्रतिनिधि संचयन भरि नहि अछि। ई मण्डलजीक कथा-संसारक एक विशेष प्रवेश-द्वार अछि। ई संग्रह बतबैत अछि जे बदलैत समयमे गामक प्रश्न गाम धरि सीमित नहि रहैत। ओ मनुष्यता, श्रम, परिवार, समाज आ भविष्यक प्रश्न बनि जाइत अछि। मनुक्ख समयक फेड़मे अछि, मुदा ओ पूर्णतः असहाय नहि अछि। ओकरा लग स्मृति अछि। अनुभव अछि। विचार अछि। करुणा अछि। लाज अछि। दायित्व अछि। जूझबाक शक्ति अछि।

मण्डलजीक कथा एहि बचल शक्तिपर भरोस रखैत अछि। साहित्यक असल काज शायद यएह अछि। समयक धक्कासँ डगमगाइत मनुक्खक भीतर बचल मनुष्यताकेँ देखब। ओकरा चिन्हब। ओकरा शब्द देब। एहि संचयनक चौदहो कथा यएह काज करैत अछि। ई गामक कथा अछि। ई समयक कथा अछि। ई परिवारक कथा अछि। ई विचारक कथा अछि। आ अन्ततः ई मनुक्खक कथा अछि। ओहि मनुक्खक कथा, जे फेड़मे अछि, मुदा अखन धरि टूटल नहि अछि।

- राम नरेश राय

सहायक प्राध्यापक

ललित नारायण मिश्र स्मारक महाविद्यालय, बीरपुर (सुपौल)

मो.: +91 97097 12118

बगदल गाम

✺

काल्हि साँझमे बंगलोरसँ आएले रही, गाड़ीक थकान रहने भरि मन अराम केलौं। बेरूका चाह पीब लेलौं, टहलै-बुलैक समय सेहो भाइए गेल अछि। ओना किछु काजक भार तँ ऊपरमे ऐछे, तँए नीक हएत जे पहिने सरलाहीए जाइ, काजो भऽ जाएत आ तीन कोस टहैलो लेब।

सरलाही जाइक कारण रामचन्द्रक परिवारमे रुपैआ आ चिट्ठी पहुँचाएब अछि। रामचन्द्रो बंगलोरेमे रहै छैथ।..पिताजी मरिए गेल छैथ, मुदा माए तँ जीवित छैथे तँए कहि कऽ जाएब नीक हएत। कहि कऽ जाएब आ आदेशसँ जाएब दुनूक दू परिस्थिति अछि। जैठाम पूर्वसँ अबैत कोनो काज अछि, ओइठाम आदेश नइ जना देब माने कहि देब अछि।

ओना पत्नियोँ लगेमे रहैथ, औझुका मनुक्ख रहितो एते तँ विचारए पड़त जे जखन दुनू परानी बंगलोरमे रहै छी, माए गाममे रहै छैथ तँए ऐठाम जेते शुभ माएकेँ जनौलासँ हएत ओते पत्नीकेँ जनौने नइ हएत...।

माएकेँ कहलयैन-

“माए, सरलाहीमे काज अछि, टहैलो-बुलि लेब आ काजो भऽ जाएत।”

एक तँ पचहत्तैर-अस्सी बर्खक बीच उमेरक माए, कानसँ सुनबो कम भऽ गेल छैन आ आँखिसँ देखबो, ओना अँगनाक काजक लुरू-खुरूमे भरि दिन नचिते रहै छैथ। ..मने-मन सरलाहीकेँ अखियासैत माए बजली-

“बौआ, सरलाही गाम तँ बगदल अछि!”

एक तँ कानसँ उच्च सुननिहारि तैपर आँखियोसँ कम देखिते छैथ, तखन जँ अलगटेंट धिया-पुता जकाँ माएसँ बकटेंट करब नीक नइ बुझि जगहक नाओं

बदैल टहलै-बुलैक आदेश लऽ ली...।

बजलौं-

"माए, अही सभमे सँ धुमने-फिरने अबै छी।"

गपमे केतौ खोंच-खाँच माएकेँ नहियेँ बुझि पड़लैन। बजली-

"बौआ! 'परदेशी' आ 'पछबा' सबेर-सकाल अपन गर पकैड़ लइए, तँए बेसी अबेर नइ करिहह।"

माइयक बात सुनि मन खुशी भेल। मुदा लगले एकटा बात मनमे उखैड़ गेल। उखैड़ ई गेल जे 'अबेर' की कहलैन? बंगलोरमे रहै छी तँ दस-एगारह बजे राति धरि डेरा अबै छी, तैठाम माए जे 'अबेर' कहलैन, से की कहलैन? फेर मनमे भेल जे सबेर-सकाल 'परदेशी' आ 'पछबा हवा' गर पकैड़ लइए? ..कोनो बात कोनो गरपर चढ़बे ने कएल। मनमे ईहो होइत रहए जे माइयक बात घुमि कऽ एला पछाइतो बुझि लेब, तइले अखन जेते समय लगाएब ओते घुमि कऽ अबैमे देरी हएत। तहूमे ने माए केतौ पड़ाएल जाइ छैथ आ ने अपने, तखन निचेनसँ किए ने बुझब। माइयो तँ माइये भेली ने जे केहनो अधला-सँ-अधला काज किए ने करी, माटि वा पाथरक मूर्ति माइक सोझामे रखि, दुनू हाथ जोड़ि कहबैन जे माए हम बड़ नमहर पापी छी, अपराधी छी, सएह कहै छी। बुझले तँ बात अछि जे केहनो कुपुत बेटा किए ने होइ मुदा माए थोड़े कुपित हेती, ओ तँ दुनू हाथ उठा कऽ आसिरवचन कहबे करती। भलेँ ओइ आसिरवचनकेँ हम किए ने अपना मने उपयोग करी।

अखन तक आँगनसँ नइ निकलल छेलौं, मुदा माए अपन विचार दैत अपना काज दिस बढ़ि गेली। जेना एक्के बेर गाछक फड़े बनि कहि देने होथि। ओना माइयक बात सुनैत रही दुनू परानियोँ आ दुनू धियो-पुतो, मुदा ओकरा दुनूकेँ माने धिया-पुताकेँ कोन मतलब छै जे बापक माइक बात सुनत, अपन माए लगमे छैहे।

..पत्नी दिस नजैर देलौं तँ बुझि पड़ल जे आँखिमे अस्सी मन पानि जमा भऽ गेल छैन जे सौनक बदलाएल मेघ जकाँ टपटपाइ छैन। भाय! टप-टपो केना ने करतैन, बंगलोरक बाजारमे एगारह-बारह बजे रातिमे दुनू बेकती टहैल-बुलि डेरा अबै छी आ ऐठाम-गाममे- तँ ने ओहन चलैक सड़क अछि आ ने घरे-घर सटल बाजार, आ ने दिनोसँ बेसी चमकदार बिजलीक इजोत, तैठाम दुनू परानी

जे दू दिस हएब, से चाहे जेतबे कालक लेल होइ, ओ नीक नहि। किएक तँ क्षणमे जखन छनाक भऽ जाइ छै तखन ई तँ दिनुका कलौक उपरान्तसँ लऽ कऽ बेरहटक कोन बात जे रौतुका भोजन विश्राम धरिक भेल। तहूमे तीन सालपर एलौं हेन, गाम-घरक केहेन रूप-रंग बनल, केहेन चालि-ढालि आ केहेन चालि-ढालिक रस्ता-पेरा इत्यादि बनल, सभ अनभुआरे-अनभुआर अछि। मुदा ईहो तँ उचित नइ भेल जे सभ दिन दुनू परानी संगे टहलै-बुलै छेलौं आ आइ असगर भऽ गेलौं।

..ओना मनमे ईहो उठैत रहए जे अँगनासँ निकलैसँ पहिने पत्नीक मेघौन मनकेँ वौस ली मुदा ईहो होइत रहए जे विरह-वेदनाक वौसबक समय निसचित नइ अछि, जँ बेसी समय लगि जाएत आ माए केम्हरोसँ औती आ देखती तँ टोकिए देती ने जे की भेलह, किए ने गेहलह। तखन की कहबैन जे ‘कनी घरवालीकेँ वौसै छी। ..मन छटपटाए लगल जे की करी। मुदा लगले एकटा जुकती फुरल। फुरल ई जे जहिना रंग-रंगक विरह-वेदना होइ छै तहिना ने ओकरा-ले रंग-रंगक खरो-खाँहिंस होइ छै, तखन तँ भेल जे जइ रंगक खर होइ कि खाँहिंस तेकर पूर्ति होइ। काजक पूर्ति ने भारी अछि, किएक तँ ओकर विकल्प नइ छै, मुदा मनकेँ तँ से नइ अछि। जँ से रहितै तँ बाल-बोधक कानबक नोर सुखलो ने रहै छै आ तइसँ पहिने जँ किछु भेट जाइ छै तँ हँसौ लगैए। सएह सोचि कहलयैन-

“हाइ रे वा! अहाँ अखन तक तैयारो ने भेलौं हेन?”

पत्नी बजली-

“अहाँ कहनौं ते एको-बेर नइ छेलौं?”

ओना ओ अदहे जीए बजली। अदहा जीए बजैक कारण भेलैन नब जगहपर आएब। बंगलोर अपन कर्मभूमि छी, जँ बच्चाकेँ बारह बजे रातिमे कोनो उपद्रव-बात हेतइ तँ ओकर माइये-बाप ने ओझा-गुनी आकि कि डॉक्टर ऐठाम जाएत। मुदा ई तँ तइसँ हटल अछि, तहूमे बंगलोरमे अपने दुनू परानीक जुति-भाँतिमे जीबै छी, ऐठाम माइयक गारजनीमे आबि गेल छी। ओना पत्नीक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे जे रोग पहिने दबने छेलैन ओ दबि गेलैन आ दोसर रोग मनमे उठि एलैन। ..अनुकूल परिस्थिति देखि बजलौं-

“दोसर साँझ धरि घुमि कऽ एबे करब।”

जखन डिबिया, लालटेन घर-अँगनामे टहलैए, वएह भेल दोसर साँझ। भाय, डिबिया कि लालटेन बिजली-बौल नइ ने छी, जे एकठामसँ दोसरठाम नइ टहलत। डिबिया तँ ओ डिबिया छी जे हाथमे बैस टहलैए। जरौला पछाइत सिरा आगूसँ उठैत घरसँ निकैल आँगन पहुँच चारू दिशा देखैत अपन जगहपर आबि बैसैत अछि।

..अँगनासँ निकैलते मन भुतिया लगल। भुतिया ई लगल जे जखन माइयक मन मणि देखै छी तखन इजोत जकाँ बुझि पड़ैए आ नजैर जखन पत्नीपर अबैए कि आँखिक आगू अन्हार जकाँ भऽ जाइए।

केतबो मनकेँ बुझा-बुझा मनाबी तैयो किम्हरो-ने-किम्हरो चुपे-चाप ससैर जाए। फेर जखन काज दिस नजैर उठए तँ बुझि पड़ए जे अनेरे मनक मोइनमे डुबै छी। भाय, सरलाही गाम जा रामचन्द्रक परिवारमे चिट्ठी आ रुपैआ देब अछि तखन अनेरे मनक जंजालमे ओझरा रस्ता रोकि ठाढ़ छी। डेग उठबैक उत्साह मनमे भेल। आगू डेग उठिते पत्नीक संगीक रूप जेना आगूसँ आबि मनकेँ घेर लेलक। घेर ई लेलक जे जँ पत्नीकेँ बंगलोर जकाँ संगे लऽ चलब तँ लोकक नजैर लगत की नइ? नजैरियो तँ अपन-अपन होइ छइ। एहनो नजैरक तँ लोक छैथे जे गुरु तुल्य छैथ, माने जिनकासँ स्कूलमे पढ़ने छी, ओ जँ आगूमे पड़ि जेता तँ हुनका प्रणाम पाती कऽ पेबैन की नहि। बाट चलैत बटोही चाहे ओ पुरुख होथि आकि नारी, अपन-अपन लिंगानुकूल टोकनिहार- टोकनिहारि होइते छैथ, मुदा जखन पति-पत्नी दुनू संगे रस्ता धेने चलैत होथि तखन तँ समस्या उठि ठाढ़ होइते अछि। अखनो गाम घरमे पुरुख अपना काजे आ महिला अपना काजे फुट-फुट निकैलते छैथ। ओना, हाट-बाजारक काज जे गामसँ हटलो अछि आ सटलो अछि, तैठामक रूप अलग होइ छइ। शहर-बाजारमे दूर-दूरक लोक रहने अनेको रंगक चालि-ढालि, बात-विचार चलिते अछि, संग-संग ईहो तँ ऐछे परिवारसँ निरमित समाजक जे रूप-रंग होइ छै, से नइ छइ। मुदा समाजो निरमानक तँ यएह-टा रस्ता नइ अछि। हँ! ईहो अछि, ईहो ऐछे नहि अखनो गाम-समाजक यएह रूप-रंग अछि।

..अनेरे दलानक कोण लग मन वौआए लगल। मनकेँ समटैत सरलाहीक रस्ताकेँ हिया कऽ देखलौं तँ बुझि पड़ल जे तीन कोस अबै-जाइमे डेढ़ घन्टा लगत, अदहा घन्टामे काज निपटाएब दू घन्टा भेल। अखन चारिए बजैए छह बजे

तक घुमि कऽ चलि आएब।

गामक सीमानपर पहुँचते अपन गामसँ जेबा कालक सीमान मोन पड़ि गेल जे गामसँ किए गेलौं? जखन पिताक देल पाँच बीघा जमीनमे सभ किछु छल। माने अन-पानि उपजैबला खेतसँ लऽ कऽ गाछी-कलम आ पाँच कट्ठाक पानिक एकटा डबरा सेहो तखन? ..सीमापर ठाढ़ भेल, ने आगू डेगे उठए आ ने मने मानए। मन ठमकल। ठमैकते उठल अही गामक ने हमहूँ बी.ए. पास पढ़ल-लिखल छी। हमरा सन-सन आरो बहुत गोरे छैथ, कियो डॉक्टर छैथ तँ कियो इंजीनियर, मुदा जइ गाममे जन्म भेल, की ओइ गाममे हमर खगता नइ छै आकि हमरे रहि कऽ जीबैक खगता नइ अछि? मुदा..!

आगू दिस डेगे ने उठए। मुदा लगले मनमे भेल जे जहिना बकरी चरौनिहार धिया-पुता बकरीकेँ चरैले खेतमे छोड़ि रस्तापर बैस गरदा-माटिक अँगना-घर बना गबैए जे 'खेलै छेलिऐ धुपै छेलिऐ रोपै छेलिऐ धान, मने-मन विचारै छेलिऐ जेबै जगरनाथ..।' तहिना किए ने डेगे-डेग रस्तो काटब आ मने-मन विचारबो करब जे बी.ए.पास केलाक पछाइत गामसँ किए चलि गेलौं! एतबो ने अपने बुझै छी जे जखन बी.ए. तकक बोध परिवारमे आबि गेल तखन ओइ परिवारक ऐगला सन्तानक लेल स्नातकक रस्ता भेट गेल। ओना, अनेको प्रश्न बीचमे अछि, मुदा ओ अखन नहि। गामसँ बेकतीकेँ हटने बेकतीक गुण सेहो हटि जाइए जेकरा बेच उपार्जन करैए। मनमे उठल- जगरनथिया गीत नचिते रहए, आगू विदा भेलौं।

जहिना डेग सरलाही गाम दिस बढ़ल तहिना मन पाछू उनैट अपना गाम दिस बढ़ल। बी.ए.क जखन विद्यार्थी रही, अर्थशास्त्रक विद्यार्थी रही, अपन जे पैतृक सम्पैत अछि ओकर जखन अर्थशास्त्रीय तुलापर आँकी तँ बुझि पड़ए जे एकटा नीक परिवार बना ठाढ़ भऽ सकै छी। बिसवाससँ मन भरल रहए। ने नोकरी मनमे उठल आ ने परदेश सोझमे आएल। मुदा पछाइत?

..मन हहरए लगल। हहरैत सभ हरियरी झड़ि-झड़ि धरतीपर खसैत-खसैत खसि पड़ल। किए खसल? अखनो मन हारि मानैले तैयार कहाँ अछि जँ दस कट्ठा खेत अछि तँ पाँच गोरेक परिवारक भरण-पोषन किए ने हेराएल रहत। मुदा जँ अपनो ओइमे हेराएल रहब तखन ने। भरि दिन चौक-चौराहापर ताश भाँजब आ खेतमे हरियरी तकबै, से केना औत। ओहू वृत्तिमे घाटा थोड़े अछि, ताशेपर ने जुआ सेहो चलै छइ। अखनो मन कहि रहल अछि जे चाहे डॉक्टर होथि

कि शिक्षक आकि आन-आन, सबहक खगता गाममे अछिए। मुदा धोखा भऽ गेल अछि जे सभ रेडीमेड तकै छिऐ। मुदा हमरा सेने एतबे नइ भेल, जखन हाँसू-खुरपी-कोदारि नेने खेत पहुँची तँ जहिना कनही गाइक बथान फुट कऽ बनबैए तहिना कनहा-कनही सभ तेते ने किचारलक जे लाजे गामसँ पड़ा गेलौं। कहू जे ई होइ जे छीतना सन लोक, जे मटिया तेल औंठा निशान लगा कऽ उठबैए, से मुहेँपर कहलक- "घुरन भैया, अहाँ तँ पढ़ल-लिखल छी, अहूँ जखन घासे छिलबै तखन हमरा सन मुरुख आ अहाँ सन पढ़ल-लिखलमे की अन्तर भेल?"

छीतनाक बात सुनि मन छिड़िया कऽ जेना भ्रमित हुअ लगल। भ्रमित ई जे गाममे सभ छैथ, डॉक्टर-प्रोफेसर-शिक्षक इत्यादि, मुदा सभ जखन अपन पूर्वजक सम्पैतकेँ छोड़ि, गामकेँ छोड़ि बाहर चलि जाइ छैथ तखन जँ हम सोची जे गाममे नीक जकाँ परबरिस चलि सकैए, ई केते दूर तक सम्भव अछि?

छीतनाक बात सुनि बकार बन्न भऽ गेल रहए। की जवाब दैतिऐ, जे जवाब छै से ओ बुझि नहि पबैत आ किछु कहि मनकेँ बहला दैतिऐ से अपन मन कबुल नहि करए। आइ धरि तँ अहिना सभकेँ सभ बहलबैत-फुसलबैत आबि रहल अछि। तहिना करब नीक होएत। मुदा तेतबे नहि भेल, रंग-रंगक गन्हकी कीड़ी हवामे सेहो उड़ए लगल। कियो, 'पढ़ै फारसी बेचै तेल' कहि ताना मारए, तँ कियो भुसकौल विद्यार्थी कहि हँसुआ-खुरपीसँ आगूक विचारे ने बुझलक। कियो बगदल मन कहि बताह बुझए, तँ कियो किछु, कियो किछु...।

मुदा प्रश्न एकेटा अछि जे मातृभूमि आकि देशक धरती, जे सोना उगलैक गुण अपना पेटमे रखने अछि, तेकर दिशा-दशा की अछि, ई तँ विचारए पड़त। मुदा अपन हारल आ घरनीक मारल बजबो करब नीक नहियेँ अछि। एकेटा बुझू जे गामसँ हारि परदेश गेलौं।

सरलाही आ हमरा गामक बीच माधोपुर पड़ैए। अपन गामक सीमान टपि माधोपुर प्रवेश करिते रही कि की धिया-पुता आ की चेतन, जे रस्ता कातमे ठाढ़े रहैत वा कोनो काजे करैत रहैत, सबहक मुहसँ यएह निकलैत-

"केतए जाएब?"

ओना मनमे ईहो शंका होइत रहए जे अनेरे किए सभ पुछैए! जरूर किछ बात हेतइ। दस हजार रुपैआ संगमे अछि, जखने कहबै सरलाही जाइ छी, तँ पुछबे करत जे किए जाइ छी? झूठ केना बाजब! गाम-गामक छीछा तँ अखनो

एहेन ऐछे जे असगर-दुसगरकेँ पाइ-कौड़ी लोक छीन लइए। ओना, रूपमे कनी बदलाव आएल अछि, बदलाव ई जे गाड़ी-सवारी बढ़ने कोनो बाल-बोधकेँ रस्तापर खेलाइएले वा ठाढ़े होइले कहत, आ जखने ओ तेज सवारी देखि डरे कानए लगत तँ अनेरे ओइ गाड़ीबला केँ रोकि जेबीक सभ पाइ जुरमाना तरे छीन लेत। खाएर जे हौउ...।

मनमे उठल, प्रश्न तँ उनटौलो जा सकैए, जइसँ अपन तरी-घटी छीपा प्रश्नकर्तेक तरी-घटी किए ने बुझि लेब। ..कनियेँ आगू बढ़लौं कि एकटा अधबेशू महिला अपन अँगनाक मुहथैरपर ठाढ़ रहैथ, देखिते पुछली-

"बाउ, केतए जाएब?"

रूकि कऽ ठाढ़ भऽ गेलौं। मने-मन हियबए लगलौं जे की उनटा कऽ पुछिऐन। गर अँटल, बजलौं-

"अहूँकेँ कोनो काज अछि?"

हमर बात सुनिते ओ महिला बजली-

"नइ, अपना तँ काज नइ अछि, अहींक काजे बजलौं।"

हुनकर बात सुनि जिज्ञासा बढ़ल, बजलौं-

"से की?"

बजली-

"रस्ता धेने उत्तर-मुहेँ जा रहल छी, ऐ टोलक पछाइत सरलाही गामक सीमा छइ जे अखन बगदल अछि।"

बगदल की अछि! कोनो अरथे ने लगए। गामो बगदैए से पहिले दिन सुनलौं। ओना, बगदै-बगदैक अनेको कारण अछि। जइमे एहनो कारण अछि जे केतौ बेकती बगैद गाम बगदा दइए तँ केतौ गामे बेकतीकेँ बगदा दइ छइ। मुदा मनमे भेल अखन रस्ता चढ़ल छी, काजे जा रहल छी, घुमि कऽ आएबो अछि, अनेरे जे रस्ता-पेरामे अबैर कऽ लेब तखन या तँ काजे बिथुत हएत वा घुमि कऽ अबैमे अबेर हएत।

बजलौं-

"दादी, की बगदल अछि?"

जहिना शास्त्र-पुराणक कथामे व्यासजी निमग्न भऽ प्रवचन करै छैथ तहिना दादी बजली- “आइ पनरह दिनसँ सरलाहीमे माताक आगमन भेल अछि, पहिने छोटकी भेल, पछाइत मैझली होइत अखन बड़की भरि गाममे पसरल छैथ, तँए कहलौं जे आगू नइ बढ़ू।”

दादीक बात सुनि थकमका गेलौं। थकमका ई गेलौं जे ई तँ चेचक बेमारी छी, जेकर इलाज एते उन्नैत कऽ गेल अछि जे जखने खसरासँ बेमारी शुरू होएत, तखनो रोकल जा सकैए।

ओना दादीक विचारक असर आनपर जे हौउ मुदा अपनापर ओते नइ पड़ल जे घुमि जइतौं। बंगलोरक अस्पतालमे देखल-सुनल इलाजो आ रोगो तँ ऐछे तँए केकरो-मुहेँ सुनलासँ अपनापर अबिसवास करी, सेहो नीक नइ बुझि पड़ल।

..बजलौं-

“दादी, बंगलोरमे रहै छी, एकटा संगीक चिट्ठी पहुँचाएब अछि।”

ओना हमर बात सुनि दादी ठमैक गेली मुदा सोलहन्नी पाछू नइ हटि बजली-

“बाउ, चारू-कातक देवघारा सभमे जे ओझहा सभ भाउ खेलाइ छैथ ओ सभ कहै छथिन जे सरलाही गामक लोक धरम-करम नइ करैए तँए गामकेँ भुजि कऽ खेबइ।”

ओना, दादीक बात सुनि हँसियो लगए मुदा अपनासँ उमेरदारक ओही बातपर ने खुलि कऽ हँसी जे हँसबै-जोकर होइ। मुदा दादी तँ गम्भीर मुद्रामे कहि रहली अछि, तखन हँसब नीक केना हएत...।

अपनाकेँ सम्हारैत बजलौं- “चिट्ठी पहुँचाएब जरूरी अछि, तँए गाम तक तँ पहुँचबे अछि। ओना, जँ कियो रस्तामे भेटता तँ हुनको चिट्ठी थमा देबैन।”

कहि आगू बढ़लौं। सरलाही गामक सीमा टपि गेलौं मुदा ने गामक कियो आन गाम दिस जा रहल छला आ ने आन गामक गाम दिस। ईहो नइ बुझि पेलौं जे गामक सीमान केतए छइ। बढ़ैत गेलौं, बढ़ैत गेलौं। एक टोलक पछाइत दोसर टोलमे प्रवेश केलौं। संजोग नीक रहल, रस्तेपर रामचन्द्रक माए भेट गेली। हुनके पुछलयैन- “रामचन्द्र ऐठाम जाएब।”

रामचन्द्रक माए बजली-

“केहेन काज अछि, हमहीं माए छिऐ।”

चिट्ठी आ रुपैआक चर्च करैत बजलौं-

“दरबज्जापर चलू, दस हजार रुपैयो अछि आ चिट्ठियो अछि।”

रामचन्द्रक माए बजली-

“एतै दऽ दिअ। गाममे माता पसरल छैथ, तँए चाहो-पानक आग्रहो नहियेँ करब।”

की बजितौं, रुपैयो आ चिट्ठियो दऽ देलिऐन आ दुनू हाथे प्रणाम करैत विदा भेलौं।

❑

शब्द-संख्या: 2405

रचना-तिथि: 6 सितम्बर 2016

गामक बान्ह

✳

करीब नअ बजे भिनसरमे झंझारपुर बजारसँ एलौं कि पत्नी कहलैन-

“बुधियार कक्काक माए मरि गेलखिन।”

ओना ओही रस्ते, माने हुनके घर लग होइत आएल रही तँ कन्ना-रोहट नइ सुनने रही, जँ सुनने रहितौं तँ अनेरे रूकि कऽ जिगेसा कऽ नेने रहितिऐन। मुदा से सुनबे ने केलौं।

तँए पत्नीक बातपर कनी-मनी बिसवास भेबो कएल आ कनी-मनी नहियोँ भेल। ओना गामक गोटि-पँगरा जनिजातियो आ बच्चो कैँ बुधियार कक्काक आँगन जाइतो आ निकैलतो देखने रही, मुदा एनाइ-गेनाइक माने मरनीए नइ होइ छै, आनो-आनो माने होइते छै, तँए किए बिसवास होइतए जे बुधियार कक्काक माइये मरि गेलैन।

रस्ता-पेरा, आनसँ भेँट भेला पछाइत कुशल-छेम तँ होइए मुदा से तँ होइए जिनगीक आन-आन काजक लेल, ‘के मरल’, ‘के नइ मरल’, से थोड़े होइए। तँए लोकक आवा-जाहीसँ किए पुछितिऐ।

जलखै नइ केने रही, तँए जलखैयक तिसना लगिये गेल रहए। मुदा सोझमे तेहेन बात पत्नीक मुहसँ खसल जे अग-दिगमे पड़ि गेलौं जे पहिने जलखै करी आकि देखऽ जाइ। फेर भेल जे पहिने जलखैए कऽ ली।

जलखै-खेनाइसँ पहिने मनमे उठल जे आन काज तँ छी नहि जे खा-पीब, पान-सुपारी चिबबैत जिगेसा करब। मृत्यु छी!

मुदा लगले मनमे आएल- भाय मृत्युकेँ तँ लोक चोराइओ कऽ किछुकाल रखैए। किए ने हमहूँ मनमे चोरा कऽ रखि ली आ जलखै केलाक पछाइत पत्नीकेँ

कहिऐन जे दादीकेँ देखने अबै छी।

ओना हमर बात पत्नीकेँ नीक नइ लगलैन। किएक तँ ओहो गामक आने स्त्रीगण जकाँ खोटिकर्मा सेहो छथिए। मृत्युक नाओं सुनला पछाइत ओइ दिन संलग्न परिवारक लोक लेल अन्न तँ अन्न रहैए नइ जे मुँहमे लेत, ओ एकादशीक अन्न जकाँ अन्न नहि पील रहैए! मुदा गल्तियोकेँ नपैक की कोनो एकेटा तराजू अछि, केतौ डोमाउ तराजूसँ काज चलैए, तँ केतौ टीन-चदराक पलड़ासँ। केतौ आँखिक तराजूसँ काज चलैए, तँ केतौ राटन-कमानीदार तुलासँ।

जखने रंग-रंगक तराजू रहत तखने रंग-रंगक तौलो हएत आ रंग-रंगक ओजनो हएत किने। देखिते छी जे गाममे कोनो उत्पात होइए, तँ तील ताड़पर चढ़ि जाइए आ ताड़ भार तर सठियाइत चलि जाइए। फेर मनमे भेल जे जँ दादी मरिये गेल हेती तँ किए ने तैयारे भऽ कऽ जाएब आ सभ वृतान्त निमाहनहि आएब। कनी देरीए-सँ ने पहुँचब, कहबैन जे काका कनी नून-तेल आनऽ झंझारपुर चलि गेल छेलौं, तँए अबैमे थोड़े देरी भऽ गेल। नइ जँ कहीं अपने रस्ता दिस तकने हेता आ टपैत देखने हेता तैयो तँ बुझिए गेल हेता। नइ जँ मृत्युक नाओं सुनि रूकैत नहि देखलैन तँ ओहो तँ अँगनासँ चिक्कैर नहियेँ बाजल छला। मुदा दुनियाँक देवता ने कम खाधुर छैथ, घरक देवता तँ बेसी छथिए। बुधियार काकाकेँ कहबैन तँ मानि जेता मुदा पत्नी थोड़े मानती?

तत्खनात मनमे उठल, जखैन दुइये गोरेक बीचक बात अछि, तेसर तँ ने सुनलक आ ने कहबे करबै, तखन तँ भेल विचारकेँ मानब। से तँ खेला पछाइतो मानल जा सकैए तइले भुखले लहालोट हएब नीक नहि। मुदा से अपने विचारे थोड़े हएत? खाइले पीढ़ियापर बैसब अपन काज भेल, मुदा चिनवारपर सँ आनि कऽ तँ वएह ने देती। जँ कहीं ऑफिस जकाँ 'पेन डाउन हड़ताल' भेल तखन की अपने चिनवारपर पहुँच जाएब? भुखलमे तमसा कऽ पहुँचियो जाएब मुदा पुरुखसँ मौगी बनैमे तँ...। तखन?

हँ तखन एकटा उपाए अछि। गाइक बच्चा जकाँ, वौसैत देह परहक माछी-मच्छर भगैबते ओ विचार सुनैले तैयार भइये जेती। अपन भार कटैत बजलौं- "हम ने झंझारपुर गेल छेलौं, कोनो कि घर-दुआर उठा कऽ लऽ गेल छेलौं, अहाँ देखि एलिऐन की नहि?"

चोर-मोट पकड़ाइते पत्नी सहमली। मनमे उठल अनेरे दोसर गप चालब

अनुचित हएत। कहलयैन-

"घरसँ जलखै नेने आउ, खेबो करब आ बुझा कऽ कहबो करब।"

हमर बात पत्नीकेँ जेना मधनोनसँ मीठनोन जकाँ लगलैन। बजली-

"पुरुखक काजक कोनो ठेकान अछि, कखन आएब केतए जाएब। जँ केतौले घरसँ निकली ते नइ भात-रोटी तँ एक लोटा पानियोँ जरूर पीब निकली।"

गाए-गौड़ुक मिलान तँ ठेहुनो पानि दुहान। पत्नीक चपचपी देखि कहलयैन-

"गप-सप्प की केतौ पड़ाएल जाइए, नइ अखन गर लागत ते साँझोमे सुनाइए देब। मुदा पहिने भरि पेट जलखै करा दिअ।"

अपना मनमे भेल जे- शवोत्सर्ग साधारण काज नइ छी, कहुना-कहुना तँ पान-सात घन्टा लगिये जाइए।

जे रोगीक मन भावए से वैद फरमाबए। थारीक साँठसँ बुझि पड़ल जे मनेटा नइ भरि पोखो भोजन हएत। खेनाइओ शुरू केलौं आ गपो-सप्प शुरू केलौं। मनमे जेना खीझ उठि गेल तहिना कहलयैन- "अहाँ देखैले किए ने गेल छेलौं?"

जही टोनमे कहलयैन तही टोनमे टोनियबैत पत्नी बजली-

"कहाँ जा भेल! तेते ने अँगनाक काज पसरल अछि जे साँसो लइक की पलखति होइए।"

सरदर गपसँ तँ बुझि पड़ल जे साँस रोकि जहिना साधक सभ साधना करै छैथ तहिना भैरसक ईहो केली! मुदा ई तँ बजैक चमत्कार भेल। असल चमत्कार तँ काजमे अछि। पुछलयैन-

"अहाँ बुझलिऐ केना जे दादी मरि गेली?"

अपन बातकेँ मजगूतीसँ सत्यापित करैत पत्नी दर्जनो गवाहीक व्यान दर्ज करौलैन। कोटे-कचहरी जकाँ तेते गवाही भऽ गेल जे जाबे सुनवाहि हएत ताबे मुदालहे मरि जाएत। तखन ओइ फैसलाक मोले की?

पुछलयैन-

“अहाँ काजमे लगल रही आ ओ सभ रस्ते-रस्ते बजैत जाइ-अबै छेली जे अहाँ एते गोरे मुँहक बात सुनलौं?”

हम जे पुछऽ चाहै छेलिऐन से ओ बुझिए ने पबै छेली। तथापि धाँइ-दे बजली-

“सुगिया दादी तेना कानि-कानि कहली से छाती दड़कि गेल! ओहिना टक-टक दादी आँखि तकै छैथ, मुहसँ हँसी निकैल रहल छैन, जेना बुझिए ने पड़ैए जे दादी मुइली अछि।”

हाँइ-हाँइ खेबो करी आ गपोमे लाड़ैन-चालैन चलबैत रही। पुछलयैन- “एतेखान जे एतेक गोरेसँ गप-सप्प करैमे लगा देलौं, मुदा एक लपकन अपनेसँ जा नइ देखलयैन, सएह ने?”

यकायक जेना मुँह निच्चाँ लटैक गेलैन। बजली किछु ने मुदा बुझि पड़ल जे भीतरे-भीतर गुम्हैर रहली अछि। चुपचाप हाथ-मुँह धोइ कऽ बुधियार काका ऐठाम विदा भेलौं।

रस्तामे आपस होइत ओना केते गोरेकेँ देखिऐ, मुदा किछु पूछब रस्ता रोकबो आ रूकबो हएत। माने जेते समय बुधियार काका ऐठाम जाइमे लागत, रस्तामे रूकने ओते आरो बेसी समय तँ लगबे ने करत। ओना अधिकतर महिलेकेँ आपस होइत देखिऐ। जइसँ किछु पुछब आरो उचित ने बुझि पड़ए। पुरुखसँ तँ ऐगला किरिया-कर्मक विषयमे गप-सप्प करैक प्रयोजनो पड़ैए तँए ई भेल काज निविते काज, तँए एकरा रस्ता-रोकब नइ कहबै। ओना पुरुखक आपसी नहियेँ जकाँ देखमे अबए, तँ सीटियाएल रस्ता बढ़ैत-गेलौं, बढ़ैत गेलौं।

मनमे एकटा खटका उठि गेल। पुरुख हुअए कि महिला ऐगला प्रक्रियाक जे काज अछि ओ पुरुखक भेल, भलेँ महिला यादस्वरूप अबैत होथि। ओना महिलाक डाह-प्रक्रियाकेँ पुरुखक सहयोगोसँ जँ महिल पुरा करैथ तँ ओ बेसी नीक।

अँगना पहुँचते बुधियार काकाकेँ माइयक आगूमे बैसल देखलयैन। प्रेमा काकी जिगेसु सबहक उसार-बैसारमे व्यस्त रहैथ। मिसियो भरि बुधियार कक्काक मुँह मलिन नइ देखलयैन। दादीक मुँह परहक कपड़ा हटल, बाँकी सौंसे देह झाँपल। ओहिना टकटक तकैत, मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे आब बजती तब बजती मुदा बोलता पुरुख तँ मुँह मुनि नेने छेलैन।

दादीक खिलैत मुँह देखि मनमे उठल- जेना पुरान वस्त्रकेँ लोक बदलैए तहिना दादी बुधियार काका सन बेटापर छोड़ि अपने धरती बदैल रहल छैथ...।

गाममे ओहन बेकती बुधियार काका छैथ जे परिवारसँ आगू बढ़ि किछु काजकेँ सामाजिक बुझि, मनमे कहियो ने रखलैन जे सामाजिक काजमे कियो कहत तखन जाएब, आग्रहक पछाइत काजमे हाथ बटाएब। अपन कर्तव्य-कर्म बुझि बिनु केकरो कहने एहेन-एहेन काजमे माने डाह-कर्ममे हाथ बटाएब अपन दायित्व बुझै छैथ। पचीसो परिवारक एहेन काजमे माने मृत्युक पछातिक डाह-कर्मक प्रक्रियामे बुधियार कक्काक संगे हमहूँ रहि चुकल छी। मुदा आइ बुधियार काकाकेँ सिरचढ़ काज छैन, तँ एकोटा पुरुखक लसि नइ देखि रहल छी! एना किए?

ओना दादीक सिरहौनेमे बुधियार काका सेहो बैसल रहैथ आ कनियेँ हटि कऽ हमहूँ बैस दादीक यादिमे आँखि बन्न केने रही। मुदा मनमे यएह घुरियाइत रहए जे अँगनामे बुधियार कक्काक संग दोसराइत हमहींटा छी। अनेको काज अँगनामे उपस्थित अछि। बजारसँ वस्त्र आनब, बाँस काटि चचरी बनाएब, डाहैले लकड़ीक ओरियान करब, इत्यादि-इत्यादि...।

आँखि बन्न, मनमे किछु फुरबे ने करए जे आँखि खोलि बुधियार काकाकेँ पुछयैन- जारैनक ओरियान करए, बँसवाड़िसँ बाँस काटए, बजारसँ कपड़ा कीनए कियो गेल की नइ गेल, की केना काज चलि रहल अछि...।

फेर मन कहलक- केना पुछबैन जे काजक की रूपरेखा अछि, हम हुनकर घरक गारजन तँ छी नइ जे हिसाब पुछबैन। बेसी-सँ-बेसी यएह ने कहबैन जे काका हमहूँ आबि गेलौं, काजमे बेसी देरी नइ करू।

मुदा लगले मनमे उठि गेल जे काजकेँ की बुधियारे काका देरी केने छैथ जे कहबैन? कोनो गरे ने भेटए जे आँखि खोलि बुधियार काकासँ किछु पुछयैन। हलाँकी बहन्नो रहबे करए; आँखि मुनने रही।

कनियेँकालक पछाइत मनमे उठल- बुधियार काकासँ काजक हिसाब नइ पुछबैन मुदा एते तँ पुछिये सकै छिऐन ने जे सुनील आ सुधीरकेँ आँगनमे नइ देखै छिऐ...।

सुनील-सुधीर दुनू बेटा। ओना बुधियार कक्काक बिसवास जहिना हमरापर छैन, तहिना हमरो हुनकापर अछि। जे से गामक केते गोरे बजबो तँ

करिते छैथ जे एकपेटुआ दुनू छी।

ओना एकपेटुआ सहोदर भाए-बहिन होइए, मुदा अपनो बीरान आ बीरानो अपन तँ होइते अछि।

पुछलयैन- "काका, दुनू भाँइ नजैरपर नइ आबि रहल अछि?"

सवुरदानाक फलहार कएल एकादशीक व्रतधारी जहिना टनगरसँ बजैत तहिना बुधियार काका बजला-

"एक भाँइ बजारक काज करए गेल आ दोसर असमसानक काज करए।"

सोझ-साझ जवाब तँ बुधियार काका दS देलैन मुदा बिच्चेमे भकचका गेलौं। भकचका ई गेलौं जे असगरे बजार गेल आकि कियो दोसराइतो? तहिना असमसानोक सम्बन्धमे भेल। अछिया खुनब अछि, जारैन काटब अछि, तहूसँ जरूरी पहिने बाँसकेँ काटि-खोंटि, फाड़ि-चीर कS चचरी बनबैक अछि, तहूमे चचरियो कि कोनो बाँसेटा सँ बनत। तइले साबेक जौड़ो बाँटए पड़त किने। तहूमे साबे कि पटुआक सोन छी जे लगले हाथपर चढ़ि जाएत, ओकरा तँ पहिने पानिमे भीजैले दिअ पड़ै छै। तहूमे 2008 इस्वीक बाढ़िक प्रतापे तँ साबेक ओधियो नइ बाँचल। प्लास्टिकक जौड़ी जे भेटबो करत तँ फेर ने कहीं तेसरे बखेड़ा ठाढ़ भS जाए। जहिना दरभंगाक अस्पताल बनैकाल जे अफवाह उठल आकि सिमरिया पुलक समय लकड़-सुंगहाक जहिना अफवाह भेल, तहिना ने कहीं भS जाए।

मनेमे अग-दिग हुअ लगल। मुदा लगले फेर भेल जे अँगनोमे तँ कम-सँ-कम दू गोरेकेँ जिगेसा केनिहारि स्त्रीगण सभ देखबो तँ करिते हेती। नइ पत्नीक रूपमे तँ अभिभावको रूपमे तँ अपन-अपन पुरुख-पात्रकेँ कहबे करतैन। मुदा लगले मन भिन-भिना गेल, समाजो कि समाज रहल! सभ लोक-लाज उठा सबहक सभ ठकदरूआ बनि गेल। विवेकाभूषणक चर्च बेइमानी छी। एक तँ मृत्युक पछातिक डाह-कर्म पहाड़ सन भारी काज अछि, आ तैठाम जँ लोकक अभाव भS जाएत तखन ओ पहाड़ उठत केना? किछु फुरबे ने करए।

मुदा लगले भेल जे जँ दूओटा पुरुख आँगनमे छी, तखनो जँ दादीक भजन-कीर्तन नइ हेतैन, सेहो तँ नीक नहियेँ भेल...।

कहलयैन- "बुधियार काका, अहाँ बड़ भागशाली छी, मरितो समय दादी

नीक मौसम बना मरली।"

हमर बात जेना बुधियार काकाकेँ नीक लगलैन। बजला-

"किछु छी तँ माए माइये छी किने। किएक वेचारीक मनमे बेटाक प्रति कखनो कलुषता अबितैन।"

मुड़ी डोलबैत हुँहकारी भरैत बजलौं-

"काका, ने माघ मास सन दुरकाल समय आ ने हथियाक सतैहिया झाँट, केहेन सुन्नर चैतक मध्यमास समय अछि, जेहने दिन तेहने राति, सभ काज निचेनसँ हएत।"

मनमे ईहो रहबे करए जे तेहेन नीकसँ खा नेने छी जे पान-सात घन्टा टनाटन देह करैत रहत। तँए मनमे खुशी रहबे करए। मुदा काजक हिसाबसँ लोककेँ नहि देखि मनमे हुअए जे पुछयैन- 'किए ने कियो हुलकियो मारैले आबि रहला अछि!'

बुधियार काका अनकर भागी थोड़े छैथ, जे अनकर बात कहता। जहिना ओ भागी नइ छैथ तहिना ने हमहूँ भेलौं। किए केकरो तीत-मीठ बात बुझिऐ। मुदा लगले जेना मन धिक्कारऽ लगए जे पचीसोसँ ऊपर समाजक परिवारमे दुनू गोरे संगे मृत्युक डाह प्रक्रिया पुरा केने छी, मुदा आइ जखन हिनका सिरचढ़ काज छैन तँ ऐठाम समाजक दोसराइत कियो ने। वाह रे समाज!

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रही कि सुनील दूटा बाँस, बँसवाड़ियेसँ पाङ्गि दुनू कन्हापर कन्हेठने पहुँचल। काज लग जँ अकाज बनि रही, ईहो नीक नहि, मुदा मनमे घुरियाइत रहए जे किछु विचार तँ बुधियार कक्काक हेबे करतैन, से बाजि नहि रहला अछि। मुदा हमहीं किए पुछियौन। अपन देहक कियो मालिक अछि, जे नीक बुझि पड़त, से करब।

मनेमे झिका-तीरी हुअ लगल, एकटा कहए जे कनी गामक गमगमी कक्काक मुहसँ सुनि ली। अखन धरि तँ मानिते एलिऐन जे काका अपना विचारक अपने मालिक छैथ, आ मलिकाना केना चलैत रहतैन तही पाछू दिन-राति तवाह रहै छैथ।

दोसर मन कहए जे जखन गामोक लोक एकपेटुआ बुझिते अछि, तखन किए ने कहबै- 'जे लोरिकक भात खाएत ओ लोरिकक बरियात जाएत। भाय,

बरियाती दुनू होइ छै, बिआहोक होइ छै आ मृत्युक एक प्रक्रियामे सेहो होइ छै।

मनमे अबिते बुधियार काकाकेँ पुछौ ने लगलयैन जे काका कनी काज देखै छिऐ। ओतए-सँ उठि गेलौं। टोने-टोनी चीर-फारि देबइ, जैठाम पहाड़ सन आगूमे काज पसरल अछि तैठाम करैबला गिनतीमे कम पड़ै छी, तखन तँ यएह ने हएत जे कनी बेसी समय लगत। तइले कण्ठ लग तक जलखै काइए आएल छी।

सुनीलकेँ कहलिऐ- "बौआ, तूँ बाँसक टोन-टान करह आ हम चारि हाथ साबे खड़ैर लइ छी।"

सोबेक नाओं सुनि सुनील बाजल-

"साबे घरमे कहाँ अछि।"

दोहरबैत पुछलिऐ-

"मूजो घरमे नइ छह?"

कहलक-

"नहि।"

अपनो घरमे ने साबे अछि आ ने मूज, तखन तँ भेल समाजसँ माँगब। समाजक मनमे अनोन-विसनोन अछि से देखिते छिऐ। तँए बुधियार काकासँ बिनु पुछने आगू बढ़ि किछु करब अनुचित हएत। ससैर कऽ बुधियार काका लग पहुँच कहलयैन-

"काका, साबे तँ नइए। जौड़ कथीक वाँटब जे चचरी बनत?"

तही बीच सुधीर बजारसँ कपड़ा नेने पहुँच गेल। साइकिलक कैरियरपर मोड़ल-सोड़ल कपड़ा। बीचमे ठाढ़ चारू दिस ताकी तँ बुझि पड़ए जे केना पार लागत। बेसी-सँ-बेसी तँ हम एतबे ने करबैन जे तत्खनात जइ काजक जरूरत अछि से नजैरपर देबैन। तीनू बापूत बुधियार काका तीन घाटपर ठाढ़, एकमुहरी विचार केना हएत? परिवार-समाजक बीच तना-तनी बुझिए पड़ैए।

बुधियार काका लग पहुँच कहलयैन- "काका, अहाँ जेहने अँखिगर छी तेहने पँखिगर सेहो छी, परिवारक काज छी तँए चारू गोरे एकठाम भऽ काजक एकराय बना करब।"

बुधियार काका हमर बात बुझि गेला। बुझिते जेना मन खिललैन। खिलबो केना ने करितैन, जइ परिवारमे दूटा समकश काज केनहार पुरुख आ तैसंग दुनूक समकश नारीकेँ जँ परिवारक मोटा उठा चलैक संकल्प मनमे आबि जानि तँ मोटा कोनो मोटा नइ रहत...। बजला-

“बौआ, बेसी-सँ-बेसी यएह ने हएत जे जेते अनिवार्य काज अछि ओतेकेँ पुरबैत काज पुड़ाएब। मुदा तोहीं कहह जे जइ मृत्यु-प्रक्रियाक जेते काज समाजमे केलिऐ, ओ केतए गेल! अढ़ाइ साङ्गि सभपर अछि। मुदा कियो समाजक दायित्व बुझि करैए आ कियो नइ करैए, तेकरा हम की करबै।”

कहि जेना आगूक विचारकेँ बुधियार काका रोकि लेलैन। मुदा बजैले मुँह लुसफुसाइते रहैन। बिच्चेमे सह दैत कहलयैन-

“से की कोनो चोराएल अछि।”

बुधियार कक्काक मनक चपचपी सौन जकाँ बढ़ऽ लगलैन। दुनू भाँइ-सुनील आ सुधीर अपन-अपन काजमे जी खोलि कऽ लागल। अपने त्रिशंकु जकाँ बीचमे लटैक गेलौं जे ने कोनो काज कऽ रहल छी आने विचार फरिछा रहल अछि।

बुधियार काका जेना मनक बात बुझि गेला। बजला-

“बौआ, दुनियाँमे जेते काज अछि, ओइ संग ओइमे ओकर फलो निहित अछि। मुदा अखन बेसी नइ कहबह।”

आरो मन ओझरा गेल जे चारि गोटे जे चचरी उठाएब सेहो ने छी। सुनील लग जा बाँस टोनियबऽ लगलौं- “बौआ, केना जारैनक ओरियान करबह, केना असमसान घाट जेबह?”

मुदा जेना तीनू बापूतक एके पेट। पेट ई जे अपन परिवार छी, अपने केलासँ नीक आकि अधला, परिवारक गाड़ी चलैत रहत। रहल बात समाजक, ओ तँ ताबे तक ओहिना ढहैत-ढनमनाइत रहत जाबे बेकती परिवारसँ ऊपर समाजकेँ नहि बुझत।

हुँहकारी भरैत बजलौं-

“हँ से तँ...।”

सह पाबि बुधियार काका बजला-

“मनुक्ख माल-जाल थोड़े छी जे ओकरा बाँस वा लकड़ीक खुट्टामे मोटगर डोरीसँ बान्हि कऽ राखल जाएत। ओ तँ बुधिक मालिक विवेकी छी। अपन कर्मक बन्धन अपने ने बना चलत। से जँ नइ चलत तँ नै चलत। अपन काज छी, नीक कि बेजए पार-घाट लगबे करत किने।”

❑

शब्द-संख्या: 2437

रचना-तिथि: 03 जुलाइ 2015

चास-बास दुनू गेल

✳

बहुत दिनक पछाइत देवलाल काका भेटला। तइ भेटैमे देवलालो कक्काक दोख नै छैन, से बात नइ। ओना, दोख अपनो नै अछि सेहो नहियेँ कहल जेतइ। ई तँ कहले जाएत जे गामक जुआन-जहान जँ बुढ़-बुढ़ानुसक हाल-चाल नै पुछैन, तँ की ओ रजे-दैवक भरोसे रहि जाइथ तेकरो तँ नीक नहियेँ कहल जाएत। मुदा दोखो किए लागत, किए ने टहैल-बूलि कऽ सभसँ भेँट-घाँट करैत, हाल-चाल बुझैक कोशिश करब। तीन किलोमीटर चक्कर मारैले पएर दुरुस अछि, मुदा ओही पएरे किनकोसँ भेँट करब से मनहानि हएत। मुदा तइमे देवलालो बाबाक दोख ई तँ छैन्हे जे हुनका लग समैयक ठेकान नै छैन। आब कहू जे सभ चाहैए जे लखिया छी तँ करोड़िया बनी, करोड़िया छी तँ अरबिया बनी आ हम काका लग बैस जे समय गमाएब से उचित हएत। गोर लागि पुछलयैन-

"काकाजी, की हाल-चाल रखने छी?"

जेना पहिनेसँ बुझैत रहथिन कि की, ऐगला बात अपन पछुआएले रहए जे 'किछु हमरो सभकेँ दिअ' मुदा बिच्चेमे बजला-

"चास-बास दुनू गेल।"

देवलाल काका सरकारी नोकरीसँ निवृत साहित्यसँ रूचि रखैबला छैथ। ओना, जहिना अपन कीर्तमे रंग-रंगक नाउओं आ आभूषणो पहिरा-पहिरा ठाढ़ करै छैथ तहिना गामोक लोक नाउओं आ आभूषणोसँ हुनका सजौनहि छैन। माने ई जे साइयो नाओंसँ अपनो विभूषित छैथ, कखनो जोगिया तँ कखनो भोगिया कहले जाइ छैथ। तइमे मिसियो भरि कुवाथ मनमे नै होइ छैन। जहिना लोकक नाओं हम बीछिलौं तहिना हमरो बीछलक। ओना, नाओं तँ कतेको लोक पहिरौने

छैन मुदा बेसी लोक कविजी कहै छैन। ओना, कियो झामोलाल कहै छैन तँ कियो कथाकार। कियो नटकिया कहै छैन तँ कियो फटकिया सेहो कहिते छैन। मुदा तइ सभले मन साफ छैन, भाय! भगवान जखन बजैले सभकेँ मुँह देने छथिन तँ कियो अपना मुहेँ बाजत किने, तइले अनका तामस किए उठत। जे कियो हमर कविता पढ़लक आकि सुनलक, ओ जँ कवि कहलक, तँ कोन अनरगल कहलक। तहिना जँ कियो नाटक पढ़ि नटकिया कहैए तँ कोन अनुचित कहैए। आ जे किछु ने पढ़लक ओ जँ झामेलाल कहैए तँ कोन बेजए कहैए। कियो नाटक देखलक मुदा पढ़लक नहि, ओ जँ फटकिये कहैए तँ कोन अनुचित कहैए। तहिना जँ कियो कथोकारे कहैए तँ किए लागत। गौंआँ-घरुआ जकाँ हम की कथाकेँ गारि बुझै छी जे हमरा लागत।

तीन साल पहिने देवलाल काका जिला कार्यालयसँ सेवा-निवृत भेला। गामेमे रहै छैथ। ओना, नोकरियो-समय गामसँ सम्बन्ध बनौने रहला, मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत सोलहन्नी गामेमे रहै छैथ। स्पष्ट विचार छैन जे जइ जगहक चर्च रचनामे करै छी, जँ ओइ जगहपर ठाढ़ भऽ रची तँ ओ बेसी नीक हेबे करत। किरानीक नोकरीमे रहितो देवलाल कक्काक मन कहियो ने अलसेलैन। जे भरि दिन ऑफिसक फाइल तैयार करैत-करैत हाथक पाँचो आँगुर काजे ने करैए। भरि दिनक तेते थकान अछि जे ने पेन दिस आँखि उठैए आ ने कागज दिस। मुदा तइसँ फराक जिनगी देवलाल कक्काक रहलैन। अपन नियमित काजक सिलसिला रखने छला जइसँ ऑफिसोक काज नै बेसिआइ छेलैन। तइमे एकटा ईहो गुण बनौने छला जे आन संगी-साथी जकाँ नै जे आनो-आनो ऑफिसक फाइलक ठिकौती लइ छला। दरमाहापर संतोख छेलैन। ओना, घूस कहि कऽ घूस नइ लइ छला, मुदा जहिना सरकारी रेट काजमे बान्हल अछि तहिना ऑफिसक कर्मचारीक फीस काजे-काज बान्हल रहिते अछि। जे सभ बुझै छैथ। तेकरा देवलाल काका अधला नै बुझि उलफी कमाइ करैत रहला, आ स्पष्ट बजबो करै छला जे खाइते-पीविते रामलला। जे आएल से खाइ-पीबैमे गेल। दरमाहा दिन दरमाहा भेटबे करत। तइसँ ई छेलैन जे ऑफिसक जेते साहित्यसँ रूचि रखैबला छला तिनका सबहक बैसार एकठाम कैरते छला। जे से एकटा समदर्शी समाज बनले छेलैन। तइमे खर्चो होइते छेलैन, तैसंग ईहो छेलैन जे अपनो पत्र-पत्रिका आ किताब पढ़ैक चसकी लगले छैन। परिवारक लेल एते जरूर केलैन जे बेटा-बेटीकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ आ बिआह-दान दरमाहाक

पैसासँ करा कऽ निचेन भऽ गेल छैथ। अपनो बुझले छेलैन जे फल्लाँ दिन तक दरमाहा भेटत, पछाइत पेंशन भेटत। तैसंग जे जमा-जिगिर अछि सेहो भेटबे करत, निचेनसँ जिनगी खेप जाएब। तँए जहिया तक सेवा निवृत भेला तहिया तक ने मनमे मलिनता आ ने मुँहमे उदासी आएल छेलैन। एबो केना करितैन। दरमाहा अधिया हएत, तेकर भरपाइ तँ जमासँ भइये जाएत। सोझ हिसाब रहैन जे बैंकक सूदि ओकरा भरि देत, तँए जिनगीमे केतौ टुट-फाँट नै बुझि पड़ैन। जखन टुटे-फाँट नै तखन मुहेँ किए मलिन। मुदा से भेलैन नहि, कचहरिया जमाए, धुरुफन्दा लोक, अपन हिस्सा-ले विरोध कऽ देलकैन। भाय, सर्वे भवन्तु सुखिन: ई सूत्र भेल, मुदा अपन बेटो-भातिज आकि दियादोवाद किए बेइमान कहैए, घेँटकट कहैए? जखन बेटा-बेटीक बीच बाप एकरूपता नै आनि सकैए तखन दुनियाँक सभ मनुक्ख मनुक्खे छी से केना भऽ सकैए? आ केते सम्भव अछि? जखने जमाए विरोध केलकैन कि दुनू बेटा फाँड़ बान्हि विरोधमे तैयार भऽ गेलैन। किछु छी तँ माल-पत्तर छी किने। अपने देवलाल काका पाछू हटि देखैथ तँ हिसाब केतौ ने गड़बड़ बुझि पड़ैन। तहूमे रामायणमे पढ़नहि छैथ जे रावणकेँ एक लाख बेटा, सवा लाख नाइत छेलैन। बेटा-नातिक चर्च अछि नइ कि बेटा-पोता आकि बेटी-नातिक। माने ई जे बेटा संग पुतोहु तेकर धिया-पुता पोता-पोती भेल, तहिना बेटी संग जमाए आ धिया-पुता नाइत-नातिन भेल। दुनू तँ एकरंगाहे भेल तैबीच अपने पड़ि गीजम-गीज हएब से नीक नै बुझलैन, जे से दुनूकेँ- बेटो आ बेटीओकेँ- कहि देलखिन जे अहाँ सभले कमेबो केलौं आ जमो केलौं हमरा ओइसँ कोनो मतलब नहि। जमा छोड़ि पाछू ऐ खियालसँ हटला जे दरमाहा जकाँ नै महीने-महिना पेंशन भेटबे करत तखन चिन्ते कोन अछि। अनेरे जे बूढ़ देहकेँ कोट-कचहरीमे रगड़नियाँ देब तइसँ नीक ने भेल जे कमसँ कम केकरोसँ ने मुहाँ-ठुठी हएत आ ने अपन दौड़-धुप। बुझले अछि जे कोट-कचहरीक रगड़ केहेन होइ छइ। नामक एकटा अक्षरक गलती सही करैमे तीन बर्ख लगै छइ। तहूमे पाइ-कौड़ीक बात छी रगैड़ते-रगैड़ते सभटा झाड़ि लेत। अनेरे फेड़मे पड़ब हएत।

मनमे भेल जे जहिना मन खसल छैन तहिना मुहसँ निकललैन जे 'चास-बास दुनू गेल।' गिरहस्तक चास जोता जमीन भेल आ बास धराड़ी भेल मुदा जे जिनगी भरि नोकरी केलैन, नोकरी जीवनक आधार छेलैन, तिनका मुहसँ निकैल रहल अछि जे 'चास-बास दुनू गेल!' हिनकर चास भेलैन दरमाहा आ बास भेलैन भाड़ाक डेरासँ लऽ कऽ अपन घर-दुआर, तखन किए एहेन बात बजला? फेर मन

चनकल, चनकल ई जे साहित्यिक लोक छैथ, जँ किछु घुमा कऽ कहि देने होइथ जे बुझिये ने पबैत होइ। मुदा अनेरे एते मनकेँ बोन-झाँखुरमे किए वौआएब, जखन सोझहेमे छैथ तखन पुछिए किए ने ली जे अनेरे गुन-धुनमे पड़ल रहब। पुछलयैन-

“काका, की चास-बास चलि गेल। देखै छी जे केहेन निरोग बनि सेवा-निवृत भेलौं, अनका जकाँ ने कहियो घूस-घास दुआरे जहल गेलौं, आ ने कहियो एको दिनक दरमाहा कटेलौं आ ने एकोबेर सस्पेंड-डिसचार्ज भेलौं, तखन किए एहेन अशुभ बात मुहसँ खसल?”

हमर बात केते नीक लगलैन आकि अधला लगलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन छ-पाँच करए लगलैन से बुझि पड़ल। किछु बाजि नै रहला अछि, एना किए भऽ गेलैन, से नै बुझि पबै छेलौं। ओना, देवलाल काका बजैक वेगमे तँ बाजि गेला जे ‘चास-बास दुनू गेल’ मुदा पछाइत मनमे एलैन जे अनेरे एहेन बात किए बजलौं। जैठाम मुहेँसँ सभ काज होइ छै तैठाम अधला काजक चर्चे फाजिल। केकरो कियो एक साँझ खाइयोले दइ छइ जे पेट जुड़ेने मनो जुड़ाएत, आ जुड़ेलहा मने नीक-अधलाक विचार करत। मुदा देवलाल काकाकेँ जिनगीक संघर्ष तोड़ि देने छेलैन। बाल-बच्चाकेँ पोसै-पालैसँ लऽ कऽ पढ़बै-लिखबै, बिआह-दान करैमे कहियो अर्थक अभाव नै खटकलैन, तेकर कारणो छेलैन जे जाबे तक परिवारमे रहि बाल-बच्चा पढ़लकैन ताबे तक कोनो बेसी भारो ने बुझि पड़लैन, तहिना कौलेजक शिक्षामे सरकारी लोन उठा पढ़ेबो-लिखेबो केलैन आ बिआहो-दान केलैन। ओना, लोनक असुली दरमाहामे सँ होइन मुदा सबदिना आमदनी रहने कहियो बुझि नै पड़ैन। मनोमे बेसी भार कहियो ने पड़लैन जे से कनी ठेकानसँ जिनगीक बात बुझितैथ, ऊपरे-ऊपर चलैत रहलैन। हँसी-खुशीसँ मन मगन रहलैन। मुदा सेवा-निवृत्तिक पछाइत जेना अट्ठा-बज्जर मनमे खसलैन। केतबो बेटा-पुतोहु आ बेटी-जमाइक बीच अपनाकेँ समान्य राखए चाहलैन ओ नै रहलैन। नै रहैक कारण ई भेलैन जे जखन बेटा आ जमाइक बीच, जमा रुपैआक हिस्सा-ले मुकदमाबाजी भेलापर सबहक मुहसँ यएह निकलै जे सभटा बुड़हेक चकरचालि छिऐन। एमहर बेटा-पुतोहुक तर्क होइ जे दुनियाँमे कोन बापक सम्पैत बेटी-जमाएकेँ भेल जे हमर नै हएत। जँ बुड़हा स्वीकारि लितैथ तँ की होइतै। तहिना बेटी-जमाइक तर्क होइत जे सभ दिन ऑफिसेमे रहला आ कानून-कायदासँ भेँटे ने भेलैन। परिवारक सबहक मुहेँ गंजन सुनि मन गीजम-गीज भऽ गेल रहैन। तहूमे जहिना लूटमे चरखा नफा होइए तहिना दोसर नफा

ईहो भेलैन, ने बेटा-पुतोहु घुरि कऽ तकै छैन आ ने बेटी-जमाए। मुदा तैयो जँ भरि पोख अन्न, भरि पोख अराम भेट गेलापर मन थीर होइत-होइत थीर भऽ जाइए, सेहो ने भेलैन। बेर-बेर पत्नी कहैन- "सभ दिन हमरा नवकिये कनियाँ बनौने रहब आकि साउसो बनए देब?"

मुदा देवलाल कक्काक कोन शक जे मन मानि गेल छेलैन जे देहसँ लऽ कऽ परिवार-समाज सभटा तँ लंके छी। मनुक्खक सूत्र सबहक मनसँ लंक लऽ कऽ पड़ा गेल अछि। घोर-मट्ठा भेल मने देवलाल काका बजला-

"बौआ, एतेटा जिनगीमे जे कमेलौं, सबटा चलि गेल।"

मसुआएल बोले देवलाल कक्काक बात सुनि अपनो मन मसुआ गेल। पुछलयैन-

"केना चलि गेल?"

बेथाएल मन देवलाल कक्काक, कुहैर-कुहैर बजला-

"बौआ, तीनटा अपन चास छल आ तीनटा बास छल, मुदा सब चलि गेल।"

'तीनटा चास आ तीनटा बास'क अरथे ने बुझलौं, जे दृष्टिकूटमे काका की बाजि गेला? मुदा हमर अकबकी देखि ओ बुझि गेला। बुझि ई गेला जे तीन चास आ तीन बासक अर्थ नै बुझलक। व्याख्या करैत बजला- "तीन चासक माने भेल, तीन सीराउ, जइमे एकटा भेल पारिवारिक जिनगी, दोसर भेल- अपन श्रम लगा जे पाइ कमेलौं आ तेसर भेल- साहित्यसँ रूचि रहने जे किछु सिरजन केलौं।"

सोझ-साझ कक्काक बात सुनि कहलयैन- "केहेन बढ़ियाँ तँ तीनू चासो अछि आ तीनू बासो अछि।"

मुदा जेना ओ बुझि गेला तहिना बजला- "परिवारमे तेहेन कटौज शुरू भऽ गेल अछि जे बेटा बेटी दिस टाड़ैए आ बेटी बेटा दिस। सूप महक बैंगन भेल छी। की कहियह, पाँच रंगक किताब नोकरी-समय छपबौने छेलौं आ हाथसँ लिखि घरोमे रखने छेलौं। पाइक कहियो अभाव नै रहल तँए उद्धारसँ जे छपेलौं, विलैह देलिऐ। अपना-ले किछु ने बँचल, सभटा हेरा गेल। दोहरा कऽ छपबैक तागत आब रहल नै जे छपाएब...।"

कहि जेना किछु सोचए लगला। मुदा सोचो तँ सोच छी केमहर बहैक

जाएत तेकर ठीक नहि। तँए पुछलयैन- "बास की कहलिऐ?"

'बास' सुनि देवलाल विस्मित होइत विह्वल भऽ गेला। बिहुसैत बजला- "बौआ, कोन मुँह लऽ कऽ अपना बासपर जाएब। किछु ने रहल।"

❑

शब्द-संख्या: 1615

रचना-तिथि: 29 जनवरी 2015

किसानी छोड़ए पड़त

✺

अप्पन देश भारत सभ दिनसँ किसान प्रधान रहल अछि। तेकर कारण अछि जे अपना देशमे समतलो भूमि आ उपजाऊ भूमि अधिक रहल अछि। अपना देशमे करीब दू करोड़ अस्सी लाख हेक्टेयर भूमिसँ अधिक उपजाऊ भूमि अछि। माने कृषि योग्य भूमि अछि। दोसर कारण ई रहल अछि जे अप्पन देश हजारो बरख धरि विदेशी शासकसभक अधीन रहल अछि। ओना, आइ जेते टा देश देखि रहल छी, से पहिने नहि छल। छोट-पैघ राजा-रजबारक बीच देश बँटल छल। जइसँ राज्य-राज्यक बीच भाषा-संस्कृति आ जीवनमे सेहो अन्तर छेलैहे।

दुनियाँ छअ महादेशमे बँटल अछि: एशिया, यूरोप, अफ्रिका, आस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका आ दक्षिणी अमेरिका। अपने माहदेश जकाँ, माने एशिया जकाँ दक्षिणी अमेरिका आ अफ्रियामे सेहो औद्योगिक विकास ओइ रूपेँ नहि भेल जइ रूपेँ यूरोप, उत्तरी अमेरिका आ आस्ट्रेलियामे भेल। छोट-छोट देश–जनसंख्यो आ रकबोमे–यूरोपमे रहितो जइ रूपेँ औद्योगिक विकास भेल तइ रूपेँ अपना देश–भारत–मे नहियेँ भेल।

ओना, औद्योगिक विकासक लेल भूमिगत सम्पदा, माने जमीनक भीतर रहैत खनिज सम्पदा सेहो, आ जमीनमे उत्पादित वस्तुसभ होइए सेहो, दूनू आवश्यक अछि; कल-कारखानाक विकास ऐ दुनू आधारपर होइते अछि।

जहिना खनिज पदार्थसँ कल-कारखाना चलैए तहिना जमीनसँ उपजल वस्तु जेना पटुआ-पटशन, कुशियार-तेलहन इत्यादि वस्तुसँ सेहो कल-कारखाना चलिते अछि। मोटा-मोटी यएह मानल जा सकैए जे पचास प्रतिशत कल-कारखाना जँ खनिज पदार्थसँ चलैए तँ पचास प्रतिशत कृषि आधारित वस्तुसँ सेहो चलिते अछि। खाएर जे अछि, मुदा एते तँ कहले जा सकैए जे अपना देशमे

यूरोप आ उत्तरी अमेरिकाक अपेक्षा औद्योगिक विकास नहि भेल। एशिया महादेशमे चीन सन विशाल देश सेहो अछि आ जापान, कोरिया सन छोट देश सेहो अछिए। ओना, जनसंख्याक हिसाबसँ चीन विशाल देश अछि, जखन कि जापान आ कोरिया सन छोट देश सेहो अछिए। मुदा औद्योगिक दृष्टिसँ दुनू–कोरियो आ जापानो–बहुत आगू बढ़ि गेल अछि। अप्पन देश पनरह अगस्त उन्नैस साए सैंतालिसमे अंगरेजक शिकंजासँ मुक्त भेल आ चीन तीस सितम्बर उन्नैस साए उनचास-कँ मुक्त भेल। मुदा अपना देशक अपेक्षा ओ–चीन–भलैं पछाइत किए ने मुक्त भेल मुदा औद्योगिक दृष्टिसँ ओ अपना देशसँ अगुआ गेबे कएल अछि।

आधा अखाढ़ बीत गेल। अखन तक बर्खाक एक्को बून पानि नहि खसल अछि। माने रौदी जकाँ भऽ गेल अछि। कालिदास सेहो मेघदूत काव्यक शुरूहेमे लिखने छैथ- 'आषाढ़स्य प्रथम दिवेशे'। ओना, आद्रा नक्षत्र सेहो समाप्त भऽ गेले अछि। एक तँ आम कम फड़ल छल आ जेहो फड़ल छल तहूमे ओहन सुआद नहियेँ भेल जेहेन आन साल होइ छल।

छअ बजे बेरुका समय। भागेसर बाबा बाध दिससँ घुमिकऽ आबि असगरे दरबज्जापर बैसल अप्पन दिन-दुनियाँक विचार कऽ रहल छला। मने-मन सोगसँ एतेक सोगा गेल छैथ जे भीतरे-भीतर बुकौर लगि रहल छैन। आँखिमे नोर सौनक मेघ जकाँ टप-टप कऽ रहल छैन मुदा कहबो केकरा करथिन। चिन्तामग्न दरबज्जापर बैसल-बैसल सोचि रहल छला जे ऐ बेर भगवान बेपाट भऽ गेल छैथ। अप्पन खेतीक दशा देखि जहिना मने-मन चिन्तामे डुमल छला तहिना मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे जखन किसानक खेत नहि उपजत तखन ओकर परिवार केना चलत? जेहने दशा अप्पन परिवारक हएत तेहने दशा गाम-समाजक किसान परिवारकेँ सेहो हेबे करत। एक सालक रौदीक प्रभाव पाँच साल तक परिवारकेँ प्रभावित करैए। आँखि बन्न केने भागेसर बाबा मने-मन चिन्तामे डुमल औना रहल छला।

तहीकाल लक्ष्मीनाथ सेहो बाध दिससँ घुमिकऽ भागेसर बाबाक लगमे आबि बाजल- "बाबा, गोड़ लगै छी।"

आँखि बन्न रहने भागेसर बाबा बोली नहि अकानि सकला मुदा आवाज सुनि जखन आँखि खोललैन तखन लक्ष्मीनाथकेँ आगूमे ठाढ़ देखि बेवहारिक

रूपमे बजला- "नीके रहह, बौआ।"

भागेसर बाबाक बोलीमे ओ ध्वनि नहि छेलैन जेहेन शान्तचित्तक होइए। भरभराएल जकाँ आवाज छेलैन। ओना, लक्ष्मीनाथ सेहो बुझि रहल छल जे भागेसर बाबा रौदीक चिन्तासँ तेना ग्रसित भऽ गेल छैथ जे बोलीक स्वर बदैल गेल छैन। रौदीक चिन्ता लक्ष्मीनाथकेँ सेहो छल जे जखन धान नहि उपजत तखन लोक अपने की खाएत आ माल-जालक खोराकी केतएसँ आनत। जँ एक गोरेक खेत नहि उपजैत आ समाजक उपजैत तखन तँ ओ दोसर-तेसरसँ आनि गुजर कऽ लइत मुदा जखन गामक-गाम नहि उपजत तखन के केकरा मदैत करत। ओना, लक्ष्मीनाथक मनमे ओहन चिन्ता नहि छल जेहेन भागेसर बाबाक छेलैन, किए तँ लक्ष्मीनाथक बेटा, जे मुम्बैमे नोकरी करैत अछि, ओ रौदियाह समय देखि मोबाइलसँ कहि देने छेलैन जे बाबू सुनै छी रौदियाह समय भऽ गेल अछि। एको बीत खेती-पथारी नहि भेल अछि तेकर चिन्ता नहि करब। जेते पाइ मासे-मास खर्चाले पठा रहल छी तेकर अतिरिक्त अपनो-सभकेँ खाइ-पीबैले आ मालो-जालक चारा ले पठा देब। तँए, मनमे कोनो तरहक चिन्ता नहि करब। जइसँ लक्ष्मीनाथक मनमे ओहन चिन्ता नहि छल जेहेन चिन्ता भागेसर बाबाक मनमे छेलैन।

भागेसर बाबाक आगूमे चौकीपर बइसैत लक्ष्मीनाथ बाजल- "बाबा, एहेन समय कहियो ने देखने छेलौं। तेसर सालक जे समय भेल, से तँ मोने अछि। तेते बरखा भेल जे केते लोकक घरो खसल आ तेहेन बाढ़ियो आएल जे बाधक बाध धानकेँ दहा देलक।"

लक्ष्मीनाथक विचार सुनि भागेसर बाबा बजला- "पहिलुका लोकक कहब छैन जे जँ ढेनुआर समय होइए, माने जइ साल बेसी बरखा होइए आ दहार होइए, जँ एक्को कोण उपैज गेल तँ रौदियाह समयसँ सात कच्छे नीक। मुदा रौदी तँ रौदी छी।"

बजैत-बजैत भागेसर बाबा चुप भऽ गेला। विचारक क्रममे भागेसर बाबाकेँ चुप भेल देखि लक्ष्मीनाथ बाजल- "बाबा, चुप किए भेलिऐ?"

मनक विचारकेँ सोझरबैत भागेसर बाबा बजला- "लक्ष्मीनाथ, जखन अपने स्कूलक पढ़ाइ छोड़ि पिताक काजमे, माने परिवारक काजमे हाथ बँटबए लगलौं तखन मनमे यएह छल जे खेतीसँ जीवन-यापन करब सभसँ नीक जीवन

छी।”

बिच्चेमे लक्ष्मीनाथ बाजल- “हँ, से तँ पुरनो लोकक कहब छैन जे ‘उत्तम खेती, मध्यम वाण, निर्घिन सेवा, भीख निदान’।”

लक्ष्मीनाथक मुहसँ पैछला कहबी सुनि भागेसर बाबा बजला-

“लक्ष्मी, जखन अपने दसमामे पढ़ैत रही, तखन पिताजी कहलैन, ‘बौआ, अपना गुजर जोकर अपने खेत-पथार छह तखन दोसराक पामौजी किए करबह। अपनो विचार एहेन बनले छल जे जखन अपने खेत-पथार ओते अछि, जइसँ गुजर चलिये जाएत तखन अनेरे किए स्कूल-कौलजमे समय बिताएब। पढ़ाइ छोड़ि खेती करए लगलौं। संयोग एहेन भेल जे किछुए सालक पछाइत उन्नैस साए छियासैठ-सरसैठ इस्वीक रौदी भेल। जे चारि सालक भेल। तइ समयमे अखुनका जकाँ नहि बुझै छेलौं, कहुना-कहुना रौदी काटि लेलौं। मुदा ऐ बेर बुझि पड़ैए जे आगूक दिन पहाड़ जकाँ भऽ जाएत; तँए मनमे होइए जे किसानी छोड़ए पड़त।”

‘किसानी छोड़ए पड़त’ सुनि लक्ष्मीनाथ बाजल- “बाबा, एना अगुतेने काज चलत। किसानी छोड़ि देब तखन जीबैले की करब?”

नम्हर साँस छोड़ैत भागेसर बाबा बजला- “बौआ लछमी, बाढ़ि आ रौदी तँ प्राकृतिक छी। जेकरा भगवानक देल सेहो कहि सकै छी। उन्नैस साए छियासैठ-सरसैठमे रौदी भेल आ उन्नैस साए सतासीमे तेहेन बाढ़ि आएल जे घर-अँगनामे भरि छाती पानि लगि गेल। केते मालो-जाल आ लोको गाममे मरल। मुदा ओ बीतल दिनक घटना भेल। हाल-सालमे जे भेल अछि से कहै छिअ।”

आँखि उठा लक्ष्मीनाथ मोन पाड़ए लगल। मुदा अपने किछु ने मोन पड़लै। बाजल- “की घटना, बाबा?”

भागेसर बाबा बजला- “साँढ-पाराक उपद्रव तँ थोर-थार सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि। साँढ़-पाराक जरूरत समाजकेँ सेहो छैन्हे। जइसँ लाभ होइए तइसँ जँ कने-मने हानियो भेल तँ ओइ हानिकेँ लोक हानि नहि बुझैए। मुदा...।”

लक्ष्मीनाथ बाजल- “की ‘मुदा’ बाबा?”

भागेसर बाबा बजला- “अपना सभ जेकरा बनगदहा कहै छिऐ, तेकरा

किछु लोक नील गाए सेहो कहै छैथ। अपना इलाकामे नील गाए नहि छल। बोन-झाड़मे रहै छल। मुदा आठ-दस बर्खसँ देखिते छहक जे ओकर उपद्रव केते बढ़ि गेल अछि। बाधक-बाध जजातकेँ नष्ट कऽ रहल अछि।”

लक्ष्मीनाथकेँ सेहो बुझल रहबे करै तँए बाजल- “हँ, से तँ देखिये रहल छी।”

लक्ष्मीनाथक स्वीकारोक्ति सुनि भागेसर बाबा बजला- “बनगदहाक उपद्रवकेँ नियंत्रण लेल सरकार कोनो प्रबन्ध नहि कऽ रहल अछि। लोकक विचारो असथिर नहियेँ छइ। एक दिस किसानक जीवन प्रभावित भऽ रहल अछि तँ दोसर दिस लोक ईहो कहि रहल अछि जे ओकरा नियंत्रण केने–माने बनगदहाकेँ भगौने–पर्यावरण प्रभावित हएत। यएह खेल अछि। आब तोहीं कहह जे किसान केना जीब सकत! जँ ओकर खेतीए चौपट भऽ जाएत तखन ओकर जीवन केना चलत?”

मुड़ी डोलबैत लक्ष्मीनाथ बाजल- “हँ, से तँ भइये रहल अछि।”

लक्ष्मीनाथकेँ स्वीकार करैत देखि भागेसर बाबा बजला- “बरख पाँचम, हजारक करीब बानर गाममे आबि गेल; जे अपना गाममे पहिने नहि छल। देखिते छहक, बाड़ी-झाड़ीक तरकारी, फल-फलहरीसँ लऽ कऽ घर-अँगनाक वस्तु-जातकेँ नष्ट करैए।”

बानरक उपद्रव लक्ष्मीनाथ सेहो देखिये रहल अछि तँए बाजल- “हँ, से तँ कइये रहल अछि।”

सह पाबि भागेसर बाबा बजला- “अपना गाम सभमे सुग्गर डोम पोसैए, जइसँ खेतीक ओते नोकसान नहियेँ भऽ रहल अछि मुदा जेरक-जेर बोनैया सुग्गर तेते आबि गेल अछि जे देखिते छहक जे खेती-पथारीक कि दशा भऽ गेल अछि। आब तोहीं कहह जे किसानी केना हएत; किसानी छोड़ए पड़त कि नहि।”

❑

शब्द-संख्या: 1336

रचना-तिथि: 10 फरवरी 2026

एक घोंट पानि

✳

बहत्तैर बर्खक वयसमे विलास बाबू अपन पैंतीस बर्खक संसदीय जिनगीक संग पचपन बर्खक राजनीतिक जिनगीकेँ तिलांजलि दैत, बिना किछु केकरो कहने घरसँ निकैल गेला। जेना गाम-घरमे होइए जे कोनो बाते दुनू परानीमे झगड़ा भेने एक परानी नैहरक बाट पकैड़ नैहर दिस विदा ई सोचि भऽ जाइ छैथ जे भीखो-दुख मांगि माइयो-बापक सेवा करब, मुदा एहेन घर आ घरबलाक मुँह नइ देखब। ओना विलास बाबूकेँ से नइ भेलैन, मुदा एते तँ भेबे केलैन जे एतेटा दुनियाँ अछि, तइमे एते बड़का-बड़का समुद्र अछि, पानिक भण्डार अछि तखन हमरा एक घोंट पानि नइ भेटत जे मरि जाएब, तखन अनेरे किए एहेन जिनगी बनौने जा रहल छी जे जैठाम मनुक्खक सेवाक उदेससँ कौलेजक जिनगीमे राजनीतिक जिनगीक बीच पएर रोपलौं, जे अबैत-अबैत आइ ने लगमे एकोटा लोक बिसवास पात्र अछि आ ने लोके आकि परिवारेक बिसवास पात्र अपने बनल रहलौं..!

यएह सभ विचार विलास बाबूक मनकेँ तेना ने ममोरि देलकैन जे एक घोंट पानिक आशा करैत वेरागी-सन्यासी जकाँ घरसँ निकैल गेला।

ओना, ने केकरो-समाजसँ लऽ कऽ राजनीतिक संगी तककेँ ऐ बातक जानकारीए देलखिन आ ने केकरोसँ विचारबे केलैन। तइसँ कियो किए बुझत जे विलास बाबू पैछला जिनगीक सभ किछु छोड़ि नव जिनगीक खोजमे घरसँ निकैल गेला। तँए अपना मनमे नव विचारक नव दशा-दिशा रहितो आन लेल-माने अखन धरिक संगियोँ-साथी आ कुटुमो-परिवार-ओहिना छैथ जहिना अखन धरिक जिनगी अडेंजने आबि रहल छला...।

घरसँ निकलला पछाइत विलास बाबूक मनमे एलैन जे जखन पैछला

जिनगीक सभ किछु छोड़ि देब तखन केकरो ऐठाम जाएब उचित नहि। ओना, जिनगी जेहेन हुअए मुदा खाइ-पीबैले अन्न-पानि, रहैले घर, पहिरैले वस्त्र चाहबे करी, से तँ सभठाम राखल नइ अछि, जे जेतै मन फुरत तेतै रहि जाउ आ सभ किछु आगूमे मौजूद रहत। ओना दुनियाँ अही सभसँ भरल अछि मुदा तैयो तँ अपना-ले सभकेँ अपन-अपन ठौर-ठेकान बनबैए पड़ै छइ।

घरसँ निकैल रस्ता टपैत विलास बाबूक मनमे उठलैन- जखन सभ किछु छोड़ि एक घोंट पानिक आधार बना जीबैले ठानि लेलौं, तखन अनेरे किए छिछिआएल घुमब। से नइ तँ भने पीपरक गाछ रस्तापर ऐछे, ऑक्सीजनक भण्डार छीहे, एतै किए ने चैनसँ अरामो करब आ रस्तो ताकब...।

ई तँ गुण रहलैन जे ने रस्ताकातक माइल-स्टोनपर नजैर गेलैन आ ने मोबाइले-घड़ी संगमे रहैन जे तइसँ मिला माइलिक अन्दाज कऽ लितैथ। फेर अपने मन कहलकैन-

“धुर बतहा! वौआइत-वौआइत सौंसे दुनियाँ वौआ एमे, मुदा दुनियाँ देखबे ने करबीही।”

विलास बाबूक पहिल मनक विचार दोसर-तेसर मन सेहो मानि लेलकैन।

आगूमे पीपरक चतरल गाछ, हवा तँ नइ बहैत रहै मुदा अपने फुरने पीपरक पात हिलैत-डोलैत रहइ। नमगर-पातर डण्टी रहने आकि की, मुदा हिलैत-डोलैत जरूर रहइ। ऑक्सीजन-पर-ऑक्सीजनक बिलहा-बाँट होइते रहइ। ऑक्सीजन पबिते विलास बाबूक नजैर ऑक्सीजनक जड़ि दिस बढ़लैन। गाछ-बिरीछ अपन साँस ऑक्सीजन छोड़ैए...। फेर अपने मन पुछलकैन-

“की पीपरे गाछटा ऑक्सीजन छोड़ैए आकि आरो-आरो गाछ छोड़ैए?”

एक आ एकसँ अधिकक बात उठिते रंग-रंगक विचार विलास बाबूक मनमे उठए लगलैन। दोसर मन बिच्चेमे तराक-दे बाजल-

“आमोक गाछ तँ ऑक्सीजन छोड़ते अछि, तैसंग खाइले आमो तँ दइते अछि। आ तेतबे किए, मरि गेलापर सेहो अपन लकड़ीक हबन करैत माघक जाड़ोक रक्छा आ खेबा-पीबाक ओरियानोक संगी तँ ऐछे, मुदा पीपर तँ से नइ अछि। सुगरक गोबर जकाँ ने नीपै-जोकर आ ने पोतै जोकर।”

मनक बतकटौबैलमे विलास बाबूक मन ओझरा गेलैन। ओझराइते

एकटा मन भनभनेलैन-

“जेकरे डरे भीन भेलौं सएह पड़ल बखरा। भाय, जखन घरसँ निकैल गेलौं तखन अनेरे घुरमुरियामे घुरिआइ छी।”

मनक धिक्कारसँ दोसर तेसर मन ठमकलैन। ठमैकते पहिल मन विचार देलकैन-

“भाय, दुनियाँकेँ एना नइ ने चीनबीही। ओकरा तँ ऐनामे रखि, चेहरा देखने ने चीनबीही।”

मनमे उठिते विलास बाबू गाछ-बिरीछकेँ धड़ियाबए लगला। धड़ियेलैन ई जे केते रंगक गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजन दइए। तइ धारीमे तुलसी, पीपर, बड़, पाखैरक संग नीमो नजैर पड़लैन। नीमपर नजैर पड़िते मन फेर भिनभिनेलैन- “ई केना भेल! तीतहा गाछमे मीठ फल केना लगि गेल?”

कोनो गरे जे हिसाब विलास बाबू जोड़ैथ से हिसाबे ने मिलैन। अकैछ कऽ मन अकछा गेलैन मुदा हिसाब नइ सोझरेलैन। कखनो पात दिस नजैर बढ़ैन तँ पीपर, बड़, पाखैरक पात छह-छह करैत आँगन जकाँ चिक्कन बुझि पड़ैन, तँ लगले नीमपर नजैर पड़िते होइन जे ई केना भेल। टुकड़ी-टुकड़ी पात जहिना कटल अछि, तहिना सौंसे देहक सिर झकझक करै छइ। मुदा लगले मन आगू घुसैक कऽ सिरपर पड़लैन। नीमक सिर मुसरा बनि माटिक बीच अपन माटिक ऊपरक चढ़ल गाछक समतूल भार उठौने अछि, जखन कि एकरा सभकेँ माने बड़, पीपर आ पाखैरकेँ मुसरा-सिर होइते ने अछि। जल्ला सिर होइए, जइसँ घरतीक ऊपरके भागमे घुरियाएल घुमैए। कनियेँ हवा-विहाड़ि उठने अड़ी-अड़ी खसैए। भलेँ मने-मन गुड़-चाउर किए ने फाँकह जे माटिकेँ माइट कहह जे अकासमे उठल गाछक डारियोमे हमर सिर जनमैए...। विलास बाबू जेते गाछक ऑक्सीजनक विचार करै छला तेते अपन ऑक्सीजन घटित होइत गेलैन। घटैत-घटैत एकटा आड़ि धऽ अँटकलैन। अँटैकते मनमे उठलैन- “एना नै फड़ियाइत, तँए कोन-कोन गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजनो दइए आ आनो-आन साधनसँ मनुक्खकेँ वा अन्यकेँ जीबैक उपाय करैए।”

मनमे ऐबते विलास बाबूक मन शान्त भेलैन। ओना, एक तँ रस्ताकातक पीपरक गाछ, तैतर असगरे विलास बाबू बैस मने-मन अपन शेष जिनगीकेँ चलबैक बाट ताकि रहला अछि। मुदा गाछक ऑक्सीजनेमे तेना ओझरा गेला जे

सोचै-विचारैक ने सस चलैन आ ने कोनो बसक बासे होइन...।

मुदा किछु छी, छी तँ पीपरक गाछ किने, जेकरा पचांगम सेहो कहल जाइ छइ। जेकर जड़िसँ लऽ कऽ छीप धरिक सभ किछु शिवमय अछि...।

लगले फेर विलास बाबूक मन चाणक्य जकाँ चनकलैन। चनैकते भेलैन जे समस्या जँ मनकेँ खा गेल, माने मनक विचारकेँ समस्या पछाड़ि देत तखन मन उठि कऽ चलत केना? समस्या तँ पनचानबे-छियानबे प्रतिशत मनुक्खे निर्मित छी, बाँकी परोछ सत्ताक छी। जेकरा दैवी सेहो कहल जाइ छै...।

फेर भेलैन जे किछु समस्या एहनो अछि जेकर सामना नइ कएल जा सकैए, मुदा अपन आक्रान्त जिनगीकेँ पुनर्निमित तँ कएले जा सकैए। आ तेतबे किए, ओकर अध्ययन करैत ओकर समाधानक हल्लुक-सँ-हल्लुक उपायक बाटो तँ तकले जा सकैए...।

हृदयक साँस जेना विलास बाबूक छुटलैन। छुटिते मन हल्लुक भेलैन, हल्लुक होइते, जाड़मे शीताएल फूल कहियौ आकि पानिमे नहाएल चिड़ै जहिना एक पाँइख आ दोसर पंखुड़ी फड़फड़बए लगैए तहिना विलास बाबूक मन सेहो फड़फड़ेलैन। फड़फड़ाइते चाणक्यक कुश-उखारपर नजैर पड़लैन आकि फुलाइत विलास बाबूक मन फलैक उठलैन-

"चाणक्यो बड़ रगड़ी छला।"

दोसर मन आगू बढ़ि सह देलकैन- "तइसँ की कम झगड़ी छला।"

तेसर बाजल- "रगड़ी-झगड़ी बिना बनने कियो पगड़ी बान्हि लेत।"

चारिम बाजल- "रगड़ी, झगड़ी पगड़ीक भाँजमे अनेरे पड़ै छह, सभ संगे-संग रहबो करह आ दिवसो गुदस करह।"

बेथाएल विलास बाबूक बेथित मनमे विचड़लैन। विचैड़ते उठलैन- "गाछ-बिरीछक ऑक्सीजन।"

ऑक्सीजन ऐबते मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे अनेरे कोन महजालक भाँजमे पड़ए चाहै छी, दसे-बीसटा गाछ-बिरीछ थोड़े अछि जे ओकरा ठिकिया कऽ बुझबै जे फल्लाँ-फल्लाँ बेसी आक्सीजन दइए आ फल्लाँ नीक फल आ फल्लाँ ऑक्सीजनक बदला ऑक्सीजनेकेँ विगाड़ैए तँ फल्लाँ ऑक्सीजन लैये कऽ मेघ दिस पड़ाइए। ओह! अनेरे मनकेँ वौआबै छी...।

विलास बाबूकेँ मोन पड़लैन अपन संकल्प। जखन एक घोंट पानिक आशापर सभ किछु छोड़लौं तखन अनेरे गाछ-बिरीछक ओझरीमे पड़ै छी। जेते फल खाएब आकि ऑक्सीजन लेब, तेतबेक खगता ने अछि। तइले अनेरे दुनियाँक बोन-झाड़मे मनकेँ वौआबै छी...।

मनमे चैन एलैन। चैन ऐबते मन चनयेलैन। चनियाइते चनचनेलैन-

"असगरे केना जीब।"

'असगरे केना जीब' मनमे ऐबते विलास बाबू उठि कऽ ठाढ़ भेला। मुदा ठाढ़ हएब आ चलैत ठाढ़ रहब, दुनू दू भेल। मनमे ऐबते विलास बाबू दोसर संगी संग चलबाक विचार जगलैन। मुदा जखन पैछला जेते संगी-साथी छल, से छोड़ि ने घरसँ निकललौं! जखन संकल्पक संग निकैल गेलौं, तखन घुमि कऽ ओमहर नइ ताकब...।

उत्प्रेरित करैत मन विचार दऽ देलकैन- "संगियोँ भेटब की असान अछि! एक संगी ओहन होइए जे सून-बिसुन पेब घरोवालीकेँ लऽ भगैए आ एक एहनो तँ होइते अछि जे रणभूमिमे रक्तक धार बनि रहैए...।"

मन मानि गेलैन जे से तँ अछिए। तखन? तखन तँ यएह ने जे संगीक संगपनाक जेते खगता अछि तइले संगी चाही मुदा ओहन उट्ठा संगी जखन भेटत तखने ने समैयक हिसाबसँ संग पुरब...।

मन पत्नीपर गेलैन। दू समाज मिलि संगीक हाथ पकड़ा संग धरा देलैन, मुदा से बनाइन कहाँ भेल? कहियो मनक तृप्ति कहाँ भेल? जँ से होइत तँ दोसर बिआह करैक जरूरते होइत। कहू जे ई केहेन भेल जे अपने पत्नी आ बाल-बच्चा कपार फोड़ैपर लागल अछि..!

मन थकथका गेलैन। पीपरक गाछक निच्चाँमे ठाढ़ विलास बाबूक पएर आगू बढ़ैले तैयारे ने होइन। असकताएल जकाँ पएरक शक्ति, आगू उठैले तैयारे ने होइन। असकताइत पएरकेँ रपैट कऽ वीणाक वाणी कहलकैन- "एहने पग, जेकरा डण्डिये ने! बिना पगडण्डिये बाट बनै छै आ चलनिहार चलैए?"

विलास बाबूक दोसर मन कनखरलैन। कनखैरते उठलैन-

"जहिना भक्तक पाछू भगवान वेहाल तहिना ने भगवानक पाछू भक्तो वेहाल रहैए। जे धरतीकेँ अपन बुझि छाती लगौत तेकरे ने धरतियो अपन बुझि

छातीक दूध पिऔत।”

मनमे नव उत्साहक संग नव जिनगीक उत्प्रेरित विचार सेहो जगलैन। बिनु संगीक संग भेने जीवियो तँ नहियेँ सकै छी। ओना संगियों केतेको रूपमे संग पुड़ैए। गुरु बिनु चेला आ चेला बिनु गुरु जहिना असम्भव अछि तहिना दिनक संगी राति आ रातिक संगी दिन नइ अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तखन दूध-पानि बेराएब जटिल तँ अछिए। बिनु पानियेँ दूध बनबे केना करत, जे ओइमे पानि फेटि पाइ बना लेब...।

विलास बाबूक ठाढ़ मन ठेहिया गेलैन। संगी बिनु बनत नइ आ संगी सभकेँ छोड़ैक संकल्प मनमे बान्हि लेलौं..! फेर भेलैन जे जइ जिनगीक संगी ओ सभ छला, ओ जिनगी जखन बदलैए चाहै छी, तखन तँ नीक हएत जे ओहो सभ अपन जिनगी बदैल फेर संगी भऽ जाए। मुदा मनक ऐना झलकलैन। झलकलैन ई जे अपन केहेन जिनगी ठाढ़ भेल से तँ मनेमे अछि, आ संगी बदैल संग औता से सोचि रहल छी। एकरे ने लोक बचपना कहै छै...।

लगले दोसर मन रपटैत कहलकैन-

“यएह छी बतहपनी। दिन-राति बड़बड़ाइत रहब आ करनी चलोले ने हएत, तखन केहेन घर आ घरनी पाएब, से तँ धुनियाँक धुनैबेर ने बुझब।”

विलास बाबूक मन ओहन धरतीपर पहुँच गेलैन जेतए कोनो बाटे ने सुझैन। ठाढ़सँ बैस गेला। बैसते चित्त चेतबैत कहलकैन-

“संगी दू रंगक होइए, एकटा होइए भेटुआ आ दोसर होइए गढ़ुआ। गढ़ुआक माने भेल जे संग-संग जीवन गढ़ैए। आ भेटुआ ओ भेल जे केतौ जाइ छी, रस्तामे जे भेट कऽ संग भऽ गेला। मुदा दुनूक फलाफल दू रंगक अछि। भेटुआ जँ हेरा गेल तँ ओते मन नइ दुखाइए जेते गढ़ुआकेँ हेरेने दुखाइए।”

गुम-सुम विलास बाबू पीपरक गाछक निच्चाँमे बैसल अपन काल्हि धरिक जिनगीकेँ सौरखी-करहरक गाछ जकाँ पानिक ऊपरक पातकेँ पकैड़ नाल पकड़ैत जड़िमे पहुँच हँथोरि फड़ कियो देखैए, तहिना हौंथरैत अपन जिनगीकेँ विलासो बाबू देखलैन। देखलैन ई जे जखन कौलेजमे पढ़ैत रही, सड़कपर चलैत कौलेजेक छात्रा संग छेड़खानी भेल, जेकरा विरोधमे जे छात्र आन्दोलन भेल, जइमे जेल गेल रही। जेल गेनिहार तँ दर्जनो संगी भेला, जइमे विकासक संग जे अपनत्व बनल, ओहन दोसरक संग नइ बनल। मुदा कौलेजक

पछाइत जे दुनू गोरे अपन दुख-धंधामे लगलौं से बीचक जिनगीकेँ खाली बना देलक। तँए नीक हएत जे पहिने विकास ऐठाम जाइ...।

विकास कुमार आ विलास कुमार दुनू सी.एम. कौलेज दरभंगामे आइ.ए.सँ लऽ कऽ एम.ए. तकक संगी।

उन्नैस सए सरसैठक राजनीतिक हवामे दुनूक बीच उभार एलैन। ओना दुनू राजनीति शास्त्रसँ एम.ए. केने रहैथ। मुदा एम.ए. आकि बी.ए.मे जँ एक दिस निचला श्रेणीक अपेक्षा विषय-वस्तु कमैए तँ दोसर दिस ईहो तँ होइते अछि जे समटले विषयमे छिड़ियाएलो विषय रहिते अछि। ओइ छिड़ियाएल विषयमे विलास कुमारक जे विषय रहैन तइसँ भिन्न विकास कुमारक रहैन। मुदा दुनू गोरेक विषयमे किछु एहेन विषय रहैन जे मन-लग्गु रहैन आ किछु एहेन रहैन जे मन-घिच्चु रहैन आ किछु एहनो रहैन जे मन-छिप्पू सेहो रहैन। तहीमे दुनूक मन दू दिस भऽ गेलैन।

जे विषय विलास कुमारक मन-लग्गू से विकास कुमारक मन-छिप्पू आ जे विषय विलास कुमारक मन-छिप्पू ओ विकास कुमारक मन-लग्गू। तइसँ किलासमे दुनूक पहचान तँ बनल मुदा दू शिक्षकक बीच। जइसँ एक-दोसरक संगियोँ-साथी बिलैग गेल। ओना, किछु छात्र संगी विकास कुमारकेँ चिन्तू भाय कहैन। चिन्तू भाय ऐ दुआरे कहैन जे किलासमे केता दिन प्रोफेसर पढ़बैक क्रममे बजै छला जे जे चिन्तन (Though) सन कठिन विषयक पकड़ विकासक अछि, ओ अद्भुत अछि। छात्रक बीच परीक्षण, ट्यूटोरियल क्लासमे सभकेँ सभ देखबे करै छला।

ओना, बिहारेटा नइ, सौंसे देशमे शासनक विरूद्ध हवा उठल। मुदा ओ हवा कोनो एकरंगक नइ रहइ। गजपट हवा, जइसँ सत्ता पार्टीकेँ तँ धक्का लगबै कएल, मुदा धक्का देनिहार बीचक पार्टीमे वैचारिक समरसता नइ। ओना सभ राज्यक अपन-अपन समस्यो रहै आ विचारो रहै, मुदा रहै तँ सभठाम सत्ताक विरोधेमे।

बिहारी हवामे विलासो आ विकासो कुमारक उभार आएल। सरसैठक चुनावमे सत्ता बदलल।

1972 इस्वीक चुनावमे विलास कुमार विधान सभा पहुँच गेला जखन कि विकास कुमार परिवारसँ लऽ कऽ समाजक बीच जे कुसंस्कारी-बेवहारक जाल

पसरल अछि, ओइ जालमे ओझरा गेला। जइसँ ई भेल जे परिवारक संग-संग गामे नीक-अधलाक बीच ओझरा गेल। जेकरा विकास कुमार शुभ संकेत बुझि अपनाकेँ ओइ ओझरीकेँ सोझरबैमे लगि गेला। मुदा अखनो धरि वएह निष्ठा आ समर्पण छैन, जे शुरूक जिनगीमे छेलैन। मुदा हवा-विहाड़िमे उड़ि-उड़ि विलास कुमार सत्तामे सटले रहला, भलेँ दर्जनो बेर किए ने पार्टी बदललैन...।

पीपरक गाछतर बैसल विलास बाबूक मनमे उठलैन- संगी तँ सस्तामे अपने भेटबो करैए आ छुटबो करैए मुदा केकरो ऐठाम नइ जाएब, निर्णय करब अनुचित अछि। जँ केकरो ऐठाम नइ जाएब तखन संगी के हएत, बिनु संगीक चलि केना सकै छी। जखन चलिये ने सकै छी तखन अथबल बनि जीविये कऽ की करब। तँए केतौ-ने-केतौ तँ जिनगीकेँ अड़ियाबै पड़त, बिनु अड़ियेने चलब शुरू केतएसँ करब। तहूमे दुनियाँक कतियाएल बीचमे ठाढ़ छी...।

मन ओझरा गेलैन। ओझराइते नजैरपर एलैन अपन जिनगी। अपन जिनगी नजैरमे ऐबते जेना मनमे नव वस्तु भेटलैन। भेटते कौलेजक गढ़ुआ संगी विकास कुमारपर नजैर गेलैन। जाइते मोन पड़लैन जे दुनू गोरे जहलमे विचारने रही जे संगी बनि दुनू गोरे संग-संग जिनगी बिताएब। मुदा ओ तँ छूटि गेला..!

लगलेमे विलास बाबूक मन आगू बढ़ि जहल जाइक कारणपर गेलैन। छात्राक ऊपर भेल छेड़खानीक विरोधमे दुनू संगी बनि जहल गेल रही। नारी अत्याचारक विरोधमे।

मुदा अपने जे अछैते पत्नियेँ बिआह कऽ लेलौं, की ई नारी अत्याचार नइ भेल? अपनो परिवार अछि, जइमे पत्नी आ बाल-बच्चा सभ अछि तखन..?

अनुचित भेल। मुदा उपाय?

लगले विलास बाबूक मन अनुचितसँ आगाँ बढ़ि उचितपर चलि गेलैन। आइ जेकरा मन अनुचित मानि रहल अछि ओ ओइ दिन किए ने बुझलौं। एम.ए. पास तँ तहू दिनमे रही। चूक केतए भेल..?

बोनमे वौआइत बटोही जकाँ विलास बाबूक मन अपन जिनगीक उचित-अनुचित रस्ताकेँ पकैड़ जखैन पैछला जिनगीमे किछु डेग आगू बढ़ला, तखन देखलैन जे समैयक हवाक धारमे भँसिया गेलौं। भँसिया ई गेलौं जे अपनासँ पछुआएल लोकक जिनगीकेँ अपना छातीमे नइ सटाएब तखन अपन प्रगतिशीलते की रहल। मुदा के केकरा छाती लगाबए ईहो तँ एकटा जटिल प्रश्न

अछिए। जँ अपना पत्नी, बाल-बच्चा नइ रहैत तखन जँ पछुआएलकेँ उठा छाती लगैबतौं तखन अपनो मन कहैत आ आनो कहैत जे एकटा गिरल (खसल) परिवारकेँ उठैक अवसर भेटल। मुदा से कहाँ भेल। तखन की भेल? मुदा, अखनो अपन मन ई कहाँ चाहैए जे अनुचित भेल। किछु लोक तँ नीक कहिते छैथ...।

थकिआइत विलास बाबूक मन थथमारि अपन जिनगीक विचार करए लगला। भकुआएल लोककेँ जहिना भक्क खुजिते करियाएल दुनियाँ फरिच देखैमे आबए लगै छै तहिना भेलैन। फरिच होइते मन कहलकैन-

“हर मनुक्खकेँ जिनगी चाही, तैबीच खाँच-खरोंच किछु-ने-किछु अधिकांशकेँ ऐछे, जइसँ अतीतक पतीतमे पहुँच गेल अछि, जँ ओकरा भैरसक पवित्रक ढंग धरौल जाए तँ निसचित कल्याण हेबे करत।”

मुहसँ निकैलते विलास बाबू नमहर साँस छोड़लैन। साँस छुटिते मनमे एलैन जे सही-गलतीक बीचक रस्तासँ जिनगी चलैए। जेते सही तागैतवर अछि तइसँ कनियेँ कम माने लंकाक उनचास हाथ जकाँ गलतियो तँ तागैतवर अछि, तहूमे हवाक जे झोंक उठै छै, ओ मनुक्खक कोन बात जे देशक-देशकेँ कखनो सही दिशामे तँ कखनो विपरीत दिशामे तेना ठेल दइए जेकरा भरपाइ करैमे पीढ़ियो समाप्त भऽ जाइए। तखन?

अपन कृत्य तँ आइयो जीवित अछि जे ओहन छेड़खानी आजुक कौलेज-जिनगीमे नइ अछि। विकास भाय हमर बाल संगी छैथ, जँ हुनका ओतए जाएब तँ जरूर ओ छाती लगा एक घोंट पानिक आग्रह करबे करता...।

मनमे ऐबते विलास बाबू उतकण्ठित होइत उठि कऽ ठाढ़ भेला। ठाढ़ होइते बुझि पड़लैन जे भरिसक जिनगीक पहिल शुभ दिन छी...।

❑

शब्द-संख्या: 2516

रचना-तिथि: 10 जनवरी 2016

विचार हेरा गेल

परोपट्टाक सभसँ पैघ प्राइवेट कोचिंग शिक्षण संस्थानमे ज्योतिक नाओं लिखबए देवचन जेता, जे सूचना काल्हिये पुतोहुकेँ दऽ देने छेलखिन। बी.ए. पास सुवोधनी, ससुरक आदेश-बात सुनि चुपेचाप काजक रूप-रेखा मनमे तैयार कऽ लेलैन। एहेन कोनो बीचमे बाधा सेहो नहि जे प्रश्न रूपमे उठि कऽ ठाढ़ होइतैन। चारिम बर्ख चढ़ि गेल, विद्यालयमे दाखिलाक उचित समय ज्योतिक छी। पाँच बजे भोरेसँ काजमे लगि जाएब। काजो कम नहि, बेटीक संग ससुरकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ, तैसंग बेटीकेँ वस्त्राभूषण सजौनाइक संग साज-शृंगार सेहो करब अछि। सात बजे धरि सभ काज सम्पन्न करैत दुनू गोरेकेँ सुढ़िऔनाइ अछि। तइमे जँ एको मिनट बिलम हएत, तँ गहुमन साँप जकाँ ससुरक फुफकार सुनए पड़त। से किए हुअ देब..?

सुवोधनीक मन सुवोधनीकेँ धकलैत कहलक। ज्योति बेटी विद्यालय जाएत। पाँच बजेसँ काजमे लगल सुवोधनी पौने सात बजे काज निपटा साँस छोड़लैन।

ज्योतिकेँ ब्रह्मचारिणीक रूपमे आगूमे ठाढ़ देखि सुवोधनीक मन अपन विद्यालयक जिनगी दिस बढ़ि गेलैन। वएह धार ने धारा बनि आगू बढ़त। ओना, ज्योतिकेँ घरसँ निकलैमे पनरह मिनट समय बाँकी अछि, सुवोधनीक सिरे कोनो काज पछुआएलो नहियेँ छैन, तइसँ मनमे खुशी छैन्हे। देवचन अपने कनी पछुआएल छैथ, ओना, समैयक हिसाबे ओहो नहियेँ पछुआएल छला, धोती-कुर्ता पहीरि नेने छैथ, चद्दैर आ जूता खाली ऊपर-निच्चाँ ओढ़ब-पहीरब पछुआएल छैन। ज्योतिक ज्योतिमे अपन ज्योति मिलैबते सुवोधनीक मन बिहुसल, बिहुसिते बकार फुटल–

“की महाभारतक अर्जुन जकाँ अपन लक्ष साधि सकलौं। मनमे की रोपि जिनगी जीबैक सोचने छेलौं आ की भोगि रहल छी! आकि विचार हेरा गेल? नइ विचार हारि गेल। हारबो ने कएल, वौआ गेल!”

‘विचार हेरा गेल आकि हारि गेल’ ऐठाम आबि सुवोधनीक बकार बन्न भS गेलैन। बन्न होइक कारण भेलैन एक संग मोती-झाबा फूल जकाँ एकेबेर विचारक घोंदे फुला गेलैन। विचार हेरा गेल, कि हारि गेल, हरण भS गेल आकि दहन भS वौआ गेल...! सुवोधनी अकवका गेली। तैबीच देवचन दरबज्जेपर सँ चिल्होरि जकाँ टाँहि देलखिन–

“ज्योति ई इ इ!”

ससुरक टाँहि सुनिते सुवोधनी आँगनसँ ज्योतिकेँ अगुएने डेढ़ियापर पहुँच गेली। ‘जय गणेश मंगल गणेश’ करैत देवचन निकलला मुदा जेना रस्तेपर आगूमे केतौ किछु ठाढ़ रहै तहिना मनमे पइस गेलैन। पैसते उठलैन, आइ गुरु दिन कहाँ छी, माने वृहस्पति। विद्यालय प्रवेशक लेल शुभ दिन मानैक धारणा सभमे बनले अछि। आइ तँ शनि छी। मुदा छी तँ प्रवेशक अन्तिम तारीख। आइ जँ दाखिला नइ हएत तँ साले पछुआ जाएत। साल कि पछुआएत पढ़ैक साल पछुआएत।

ओना, परिवारक गारजनी साठि बर्खक देवचन अपने दुनू परानी हाथमे रखने छैथ मुदा अपना सन पत्नी नहि छैन। दुनूक दू गति-मति तथापि पति-पत्नीक बीच जिनगी। पत्नी- कामिनी- परेखी तँए काजसँ परिवारकेँ अँकैत। अपन दुनू परानीक काज कामिनीक मनकेँ खुशी रखनहि छैन। किए ने रहतैन, गाममे दुइए गोरे प्रोफेसर बनला, तइमे एकटा तँ अपने बेटा छैथ। बेटा- रूपचन- गामसँ हटि पनरह किलो मीटरपर कौलेजक प्रोफेसर छथिन। मोटर साइकिलसँ अबै-जाइ छैथ। ओना, दुनू गौंआँ ओही कौलेजमे काज करै छैथ मुदा दुनू दू टोलोक आ दू जातियोक। तँए पारिवारिक जिनगीमे अन्तर सेहो छैन। दुनूक पत्नियोँ बी.ए. पास मुदा सुवोधनी घरेमे घुरियाएल छैथ, जखन कि सरोजनी हाइ स्कूलक शिक्षिका छैथ। नोकरीक पाछू सेहो दू कारण, सरोजनीक परिवार निच्चाँसँ उठैत तँए नोकरीकेँ जीविकोपार्जनक साधन बुझि करैत, मुदा सुवोधनीक सम्पन्न परिवार, तँए महिलाक बीच नोकरी-चाकरीकेँ निकृष्ट नजैरसँ देखि निषिध बुझल जाइत अछि। एक तँ ओहुना नोकरी-चाकरी हेय छीहे। एक तँ अपन सम्पन्न परिवार कामिनीक तैपर बेटोकेँ नीक कमाइयो आ प्रतिष्ठो तँ छैन्हे। ओना, ज्योतिकेँ

विद्यालयमे प्रवेश जहिना सुवोधनीक मनमे नचैत तहिना कामिनियोँक मनमे, मुदा दुनूक दू-दिशाह नाच छेलैन। कामिनीक मनमे नचैत जे अपना बेटी नइ रहने परिवारमे विद्याक प्रवेश तँ पुतोहुए-जनीसँ भेल, मुदा अप्पन परिवारक चमकी ज्योतिमे चमकैत देखबे केलैन। अपने कामिनीकेँ एको अक्षरक बोध नहि। पोतीक संग पतिकेँ विद्यालय गेने दरबज्जा खाली भइये गेलैन, जे कामिनीकेँ पसिन्न नहि तँए आँगन छोड़ि दरबज्जे पकैड़ लेलैन। असगरे सुवोधनी आँगनक पुबरिया घरक ओसारक चौकीपर देवाल लगल ओंगठल, मने-मन अपन माता-पितापर नजैर देलैन। की जानि माता-पिता पढ़ौलैन, आ की पाबि रहल छी.!

प्रोफेसर माता-पिताक बेटी सुवोधनी, पढ़ै-लिखैक वातावरणमे पलित सुवोधनी। जइसँ हाइए-स्कूलसँ अपन पहिचान निखारऽ लगल छेली। जेहने पढ़ैमे तेहने लिखैमे आ तेहने बजैमे गुरुत्व रूप सुवोधनीक। अपन आत्मबल शुरूहेसँ एहेन जगल जे कहियो परीक्षाक रिजल्ट अधला नइ भेलैन। हाइयो-स्कूलक वार्षिक पत्रिका आ कौलेजोक पत्रिकादिमे कविता, कहानी, निबन्ध सभ प्रकाशित भऽ चुकल छेलैन। जइसँ मनमे किछु लिखैक जिज्ञासा सदैत रोपाएल रहै छेलैन। मुदा परिवारो तँ परिवार छी। हजारो पहियापर चलित गाड़ी...।

आइ तीन बर्खसँ माने ज्योतिक जन्मसँ लऽ कऽ चारिम बर्ख चढ़ैत विद्यालय जेबासँ पहिने चौबीस घन्टा आठो पहर प्रहरीक रूपमे रहए पड़ल, ने सुतैक ठेकान आ ने खाइक ठेकान, ने नुआँ-विस्तरक सेखी, देहसँ ओछाइन धरि रहल, तैपर ससुरक सोझहा केहेन बनि जाइ, सासुक सोझ केहेन, पतिक सोझ केहेन आ बेटीक बीच केहेन...।

..फेर लगले माता-पितापर नजैर गेलैन, जहिना माए प्रोफेसर तहिना तँ पितो छैथ, की हमर जिनगीकेँ हमरो जन्ममे नहि बुझि सकली जे बेटियोकेँ एहेन जिनगीक टपान अछिए। से जँ बुझल रहैत तँ पहिनेसँ ने क्रियाशील बनल रहितौं। आब छोड़ि कऽ भागियो केना जाएब। सृष्टिक कर्ता-धर्ता हम छिऐहे किने। मुदा लगले मन ठमकलैन, घट-घट घटवारीकेँ घटे-घट काजक आकर्षण-विकर्षण होइ छै, जिनगीक किछु काज एहनो तँ ऐछे जे स्वयं-भोगी बेसी सक्कतो आ बेसी नीको होइ छइ। माता-पिताक बीच सुवोधनी अपने उलैझ गेली। उलैझ ई गेली, हम अपना बुधिये विचारै छी आ विवेके निर्णय करै छी मुदा जँ ऐसँ फरिक्को दोसर रस्ते जँ ओ दुनू सोचने-विचारने होथि तखन अनेरे हुनका ऊपर अपन दोख

लगाएब उचित नहि। अपन जे काज अछि, चाहै ओ पढ़ै-लिखैक होइ, दिनचर्याक होइ चाहै पारिवारिक होइ ओ तँ अपने केने हएत। लगले फेर नजैर अपन कौलेजक जिनगीपर गेलैन। अखन परिवारक भारक बीच पड़ि गेल छी, तँए किछु लिखि नै पबै छी। मुदा बिआहसँ पहिने, किछु खास गनल-चुनल पत्रिकामे दू-चारिटा कविता आ कहानी छपल। लोक जानलक आ कवि-कहानीकार मानलक मुदा लोकक मानकेँ हम रखि सकलिऐ? निमाहि सकलिऐ..?

..लगले फेर सुवोधनीक मन समयपर गेलैन। समय तँ जहिना अखन चौबीस घन्टाक अछि तहिना तहियो छल। अखन परिवारक केते काज करै छी, भलेँ अपन मन-मुद्रा दबाएले किए ने रहि गेल हुअए, मुदा जे श्रम करै छी, तेकरो नकारल तँ नहियेँ जा सकैए...।

..फेर मन आगू घुसैक देखलकैन तँ बुझि पड़लैन जे अपन पढ़ैक धार तँ नीक रहल, एहेन नीक रहल जे कोशी-कमला जकाँ अपन पेटकेँ के कहए जे आनो आनक चास-बास धरिया गेल छल। जे लिखैक बाट छोड़ि मंचपर बजैक बाट पकड़ा देलक। लिखबो-ले वौस चाही बजबो-ले वौस चाही। सुवोधनीक मन धारक मोनिक पानि जकाँ नचलैन, नचिते मनमे उठलैन, गाँधीजीक शहादत दिवसपर देल गेल भाषण। गाँधीजी एशिया महादेशक भारत, आ अफ्रिका महादेशक बीच गुलामीक विरोधमे महाभारतक कृष्ण जकाँ शंख फुकलैन। की ओ नइ जनै छला जे गुलामीक केहेन-केहेन जाल अछि। गाँधीजीक ओही विचारकेँ बुझै पाछू अपन समय चलि गेल। एशिया महादेशक सउदी अरब, यमन, ओमान, भूटान लाओस जहिना, तहिना अफ्रिकाक माली, वरकिना, नाइजर, टागो, सेनेगल मनकेँ घेरि मुड़ीकेँ गोंति गोंतिया कहा-बधी करा नेने छेलैन जे गाँधीजीक शहादत दिवसपर पोथीक रूपमे लोकार्पण करब, कहाँ भेल! किए ने भेल?

..अनायास सुवोधनीक मन मोनिक पानि जकाँ घुमैत प्रोफेसर पतिपर एलैन। जीवन संगी। प्रोफेसर गौड़ीनाथक परिवारक एहेन ढर्ड़ा पकैड़ नेने जे भरि दिन मोटर साइकिलपर चढ़ल-चढ़ल चुरम-चूर रहै छैथ। ढर्ड़ा ई जे एक तँ नामी-गामी देवचनक परिवार, तहिना सासुर, गौड़ीनाथक मात्रिक, सर-सम्बन्धी सभसँ झमटगर बनल। तैसंग अपन कौलेजक प्रोफेसरक नव समाजक बीच बास, तँए बिआह-श्राद्ध आ जन्मसँ मृत्यु धरिक, मूड़न, उपनैन इत्यादि सइयो काज सालमे

पूरऽ पड़ै छैन, तैसंग पाबैनक न्योता-पिहानी सेहो, तेतबे नइ तैसंग जन्म दिनक हकार सेहो। जे दरमाहा उठबै छैथ ओ नते-हकार आ भोजे-भातक पाछू चलि जाइ छैन, जइसँ पत्नी- सुवोधनी-कैँ पतिक मासक दरमाहा देखब खाली सपने रहलैन। पतिक प्रेम भरल सिनेह संवेदनशील सुवोधनीकैँ कहियो पतिसँ प्राप्त नहि भऽ रहल छैन। दिनमे भिनसरे नहा-धो तैयार भऽ गौड़ीनाथ किछु जलखै खा चाहे चाहेटा पीब धड़फड़ाइत बजैथ–

“पहिने फल्लाँठाम मूड़नक असीरवाद दैत कौलेज जाएब, पछाइत चारि बजेमे जखन निकलब तँ फल्लाँठाम श्राद्धक डाली पूरैत आएब।”

एहेन जिनगी गौड़ीनाथक जोड़ीक बीच जे जखन दुनू बेकती- गौड़ीनाथ आ सुवोधनी- एकठाम होइत तखन अपन चुरम-चूर बेथा पत्नीक सोझमे रखि दैत। जे पति अपने बेथे बेथाएल ओइ पतिसँ केते आशा करती। भाग्यकैँ कोसव छोड़ि दोसर कोन उपाय...।

सुवोधनीक मन पुनः घुमैत प्रोफेसर पितापर गेलैन। ओ की बुझि पोसलैन जनमदाता आ पितामे अन्तर होइत। जाधैर हुनका ऐठाम रहलयैन ताधैर कहियो कोनो दुर्वचन नहि कहलैन। ने कहियो पढ़ै-लिखैमे कोताही केलैन आ ने कहियो कोनो विचारक दाब देलैन। ओना, हुनकर मन हमरा काजसँ सदिखन खुशी रहै छेलैन। जँ से नहि रहै छेलैन तँ केना लोककैँ कहै छेलखिन–

“सुवोधनी सरोजनी नाइडू जकाँ वक्ता हएत।”

तखन? भरिसक हुनका मनमे ई तँ ने भेलैन जे बेटा जन्मसँ लऽ कऽ पिण्डदान तकक हकदार अछि, गारि पढ़ियो कऽ आकि सुनियोँ कऽ, बेटा सबदिना भेल, जबकि बेटी जनगीक एक कालखण्डक। माने बिआहसँ पूर्ब धरिक मात्र! तहूमे समाजो एहेन बहुरंगी अछि जे कोनो विचारकैँ बुझैए ने चाहैत। कन्याँगत अपना कन्याँकैँ जेते बेसी पढ़ा-लिखा नीक मनुक्ख बना दुनियाँक रंगमंचपर अबै जोकर बना संगबे देथिन तँ संगबैयेक कोनो ठेकान नहि! एक तँ अपन जिनगीकैँ काटि-छाँटि नीक अध्ययनक बेवस्था बेटीकैँ करब पछाइत जखन संगी तकैले जाएब तँ जेते सेवा बेटीक केने छिऐ सभ पानिमे जा कहत जे बाबू अहाँक ई दोख नइ जे हमरा पढ़ेलौं, दोख ई जे समाज बेटी-जातिकैँ विद्यासँ वंचित रखि अपन बुधि-विवेक जगै ने देलकै। जँ जागऽ देल जाइतै तँ रूपक संगी गुणो होइतै, मुदा से कहाँ अछि। केतौ रंग-बेदरंग करैत तँ केतौ अर्थ वेदरंग करैत

समाजेकेँ बहुरंगी बेदरंग बना देने अछि। जँ कन्याँकेँ घरसँ निकालि पढ़ऽ देबैन तँ पर्दाक पाठ पढ़ा अनुचित कहल जाइ छै, तँ केतौ संवेदनशीलाकेँ कठोरशीलामे जोति जिनगीक भार कन्हापर लटका देल जाइ छइ।

हमर संवेदनशीलताकेँ पिता जानि कऽ जब्बह केलैन आकि कोनो वाध्यता छेलैन। बीचमे बाजब सुवोधनीकेँ उचितो तँ नहियेँ कहल जा सकै छइ। अभिभावक किछु छैथ तँ हमरासँ बेसी अनुभवी छैथे, मुदा तँए कि ओहो जानि कऽ गरदैनमे छुरी चलौने हेता? केना कहबैन, जनमदाता छैथ। मुदा हमर संवेदनकेँ ओ तखन आँखिक सोझक ताखपर रखि विचार केलैन जखन लेन-देनमे प्रोफेसर पति सुवोधनीक संगी बनि जाइ तँ की हर्ज। समाजोक बीच लोक-लाज तँ बँचल रहत। प्रोफेसर माए-बापक बेटी, प्रोफेसर पतिक संग रहत तँ कि अपना जिनगी सद्दश सुवोधनीकेँ नहि भेटतै, जरूर भेटतै...।

..पिता-बेटीक सम्बन्धक बीच बाटमे सुवोधनीक मन वौआ गेलैन। अपन पितापर सँ नजैर हटि सुवोधनीक राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधीपर गेलैन। जहिना सिनेमाक उन्टा रील नचैत तहिना गाँधी बाबा सुवोधनीक मनमे नचला। गाँधी बाबा अपन लीलसा पूरा कऽ लेलैन। हुनक लिलसा रहैन जे शहीद होइ, जे भेलैन। मुदा हुनके मंचपर अपन कएल संकल्प केना राँड़-बाँड़ भऽ छिड़िया रहल अछि..? जिनगीक शुरूआती तीस बर्ख बहुत भेल आ किछु ने भेल। जँ कनी-मनी विघ्न-वाधामे अँटैकितो जँ बाट धऽ चलैत चलनिहारक लेखे किछु ने भेल, मुदा विपरीत बाट धऽ चलनिहारक लेखे बहुत भेल। बहुत ई भेल जे ओ तीसे नै तीस बर्ख पुरबैमे साठि बर्ख गमबए पड़तै। सुवोधनीक मनमे सवुर भेल। सवुर होइते गाँधीजीक शहादत दिवसपर लेल संकल्प मनमे उठलैन। मनमे उठिते मुहसँ फुटलैन–

"देशक सटले सीमानक कातक देश भूटान अछि, जैठाम रेलगाड़ी नसीव नइ भेल। छियालीस हजार छह साए वर्ग किलोमीटरमे पसरल देशक पनरह-सोलह लाख देशवासीक भाग्य निर्माण, तहिना सउदी अरब जे भूटान जकाँ सटल नहि मुदा महादेशक दूरियो नहि, सउदी अरब, यमन, ओमान लाओसटा नहि अफ्रिकाक माली जे बारह लाख चालीस हजार एक साए बियालीस वर्ग-किलोमीटरमे पसरल देशक अठहत्तैर लाख लोकक जिनगी, जइमे अदहासँ बेसी जमीन मरुभूमिये अछि, अदहामे सहेल सवाना घास उपजैए, तहिना बरकिना जे

दू लाख चौहत्तैर हजार एक साए बाइस वर्ग किलोमीटर जमीनमे पसरल सरसैठ-अरसैठ लाख लोक ओहने ठाम ने अछि जैठाम एक दिस सहारा मरुभूमिसँ गुजरैत सर्द हवा जीवन-मरणकेँ सदिकाल झुलबैत रहैए। मुदा तैयो गिनीक मानसूनी हवा जीवनो तँ दइते छइ। तहिना नाइजर, टोगो इत्यादि-इत्यादिक अछिए।”

‘इत्यादि-इत्यादि’ सुवोधनीक मनमे उठिते रहैन तखने सासु दरबज्जापर सँ आँगन आबि आदेश दैत कहलखिन–

“कनियाँ, बुड़हाकेँ अबै बेर भऽ गेलैन, तँए पहिनेसँ अपन ओरियान-बात कऽ लिअ।”

सुवोधनियोँकेँ सुतरलैन। सुतरलैन ई जे अखन तँ अँगने नहि दरबज्जोक मालिक साउसे छैथ, बजली–

“अखनो बुड़हे सोहाइ छैन मुदा चारि बर्खक पोती नइ सोहाइ छैन।”

पछड़ैत कामिनी कनी पाछू घुसकैत बजली–

“बुड़हा कि कम सियाखी छैथ अपनो गुप-चुप खेनहि-पीनहि हेता आ पोतियोकेँ खियौनहि हेता की।”

एक संग दुनू- सासु-पुतोहु-क आँखि, कान, विचार आ मुँह सम बनैत ठहाका मारि आत्मसात करए लगल।

❑

शब्द-संख्या: 1917

रचना-तिथि: 1 मार्च 2015

समाजक ऐना

✺

मुम्बइसँ परिवारक संग ज्योति परसू गाम आएल। सोलह बर्खक ज्योतिकैँ गाम अन्हारे-अन्हार बुझि पड़इ। ऐठाम अन्हारक माने अपरिचिते-अपरिचित आ अनभुआरे-अनभुआर बुझब, नहि कि मासक शुक्लपक्षक आकि कृष्णपक्षक इजोरिया-अन्हरियाक अन्हार। सोलह बर्खक ज्योति गामक लेल सोल्होअना नव लोक अछि। नव आ पुरानमे एतेक अन्तर तँ अछिए जे नव भेल औझुका आ पुरान भेल कौल्हुका।

सोलह बर्खक ज्योति बारह बर्खक पछाइत अप्पन बाप-दादाक घर-घराड़ीक संग गामो-घर आ गामक जीवन सेहो देखि रहल अछि। ओना, ज्योति मुम्बइया रंगमे सोल्होअना रंगि गेल अछि, तँए कहब जे बाप-दादाक गाम सेहो बिसैर गेल, एहेन बात नहि अछि। माइक मुहसँ अखनो ज्योति अप्पन गाम-घरक संग परिवार-वंशक चर्च सेहो सुनिते अछि, मुदा ओइ सभकेँ बीतल दिनक बात बुझि मात्र खिस्सा मानैए, नहि कि जीवन-दर्शन करए चाहैए। ओना, एते तँ ज्योतिकैँ बुझल अछिए, माने वैचारिक रूपमे नहि कि बेवहारिक रूपमे, जे जहियासँ अप्पन पुरुखा शीतलपुरमे बास लेलैन तहियासँ ओही गाममे रहैत एला। अप्पन पिता माने सिनेहानन्द सेहो बीस बरख तक ओही गाममे बितौने छैथ, तँए अप्पन अतीतक विसर्जन भऽ गेल सेहो बात नहियेँ अछि। जखन ओहन चिन्तामणि, चिन्ता-मणिक माने भेल चिन्तन-मनन, एतेक उग्र रूपमे प्रकाशित अछि तखन लगले थोड़े मिझा जाएत।

सिनेहानन्द जइ समय दरभंगा कौलेजमे पढ़ै छल, तइ समय छात्रसभकेँ विशेष छूटपर सिनेमाक टिकट भेटै छेलइ। सिनेहानन्द अठबारे सिनेमा देखै छल। ऐठाम एकटा बात फरिछा ली, चारिटा सिनेमा घर दरभंगामे छल। छोट बाजार

रहने ओइठाम नामियो-गामी फिल्म महिना-दिन जाइत-जाइत उखैड़ जाइत रहए। खाएर जे होइत रहए, मुदा एतेक तँ जरूर छल जे, जे कोनो फिल्म दरभंगामे अबइ, सिनेहानन्द देखबे करए। तेतबे नहि, साहित्यक विद्यार्थी रहने सिनेहानन्द सतयुगक राजा-रजबारसँ लऽ कऽ बीतल दिनक कलयुग तकक इतिहास सेहो पढ़िते छल। एकाएक सिनेहानन्दक विचार गामसँ उड़ल, माने गाम-सँ-शहर दिस उन्मुख भेल, से तेतेक उग्र रूपमे जे माए-बाबूकेँ बिना पुछने-आछने मुम्बइ चलि गेल।

दरभंगेसँ माने कौलेजे जीवनसँ सिनेहानन्दक मनमे लटैक गेल जे सिनेमा कलाकार बनब। अइले सिनेहानन्द मने-मन केते कौबुलो-पाती कऽ नेने छल जे जँ सिनेमाक कलाकार बनब तँ अहूँ सभकेँ चढ़ौआ चढ़ाएब। ओना, सिनेमा जगतमे केतेको रंगक कलाकार छैथ मुदा से नहि, सिनेहानन्दक मनमे अभिनेता बनब छल।

सिनेमा जगतक तड़ी-घटी जखन सिनेहानन्दकेँ बुझल रहैत तखन ने, से तँ छल नहि। सालभरि वौआइत-वौआइत जखन घरसँ आनल पाइ सिनेहानन्दकेँ सठि गेलै तखन मुम्बइक सड़कक बोध भेलइ। मुम्बइ-सड़कक बोध होइते सिनेहानन्दकेँ गामक संग माए-बाप मोन पड़ए लगलै। एकाएक जहिना मेघ हरहराइ-गड़गड़ाइए आकि लौकै-तड़कैए आ तखन जहिना भगवानो बिसरा जाइ छैथ आ माए-बाप मोन पड़ि जाइ छैथ, तहिना सिनेहानन्दकेँ सेहो भेल। मुदा से भेनहि की हुअए, आइन-अपगराइन सेहो तँ मनुक्खक सोभावमे अछिए। सिनेहानन्दकेँ अपनेपर गरानि हुअ लगलैन। अपने मन कहलकैन जे माए-बाप अखन तक आँखि मुइन कऽ विश्वास करैत कोनो वस्तुक अभाव नइ हुअ देलैन, तिनकासभक संग हम दगावाजी केलौं.! मुम्बइये एबाक छल तँ पुछिकऽ अबितौं..!

ओना, मातो-पिता तँ माते-पिता ने भेला जे बाल-बोधक गलतीकेँ गलती नहि बुझि कहिते छैथ, 'मनुक्खक बच्चा छी, दुनियाँक कोनो कोणमे किए ने रहह, मुदा रहह सुख-चैनसँ'।

टुटल मनक धारमे बहैत सिनेहानन्द किनछैरमे आरा लगल। आरा लगिते मनमे संकल्प उठलै जे एहनो तँ लोक भेबे केलाह अछि जिनकर परिवारक आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहि रहितो अप्पन ज्ञानबल, अप्पन बुधिबलसँ ट्यूशन पढ़ा

आई.ए.एस; आई.पी.एस.क शिखरपर पहुँचला अछि। देखो-देखी तँ सीखा-सीखी होइते अछि।

अप्पन संकल्पसँ कहियौ आकि अप्पन मनक रोपसँ सिनेहानन्द मने-मन ताँइ कऽ लेलक जे कलाकार बनब उपयुक्त नइ अछि मुदा ट्यूशन तँ पढ़ा सकै छी। असगरक जान अछि, बड़ भारियो तँ नहियेँ अछि। जखन अप्पने जीवन-यापन, गुजर-बसर करए लगब, तखन गाम जाएब आ माता-पितासँ गलती मानि कहबैन जे गलती केलौं जे अहाँसभक आदेश नेने बिना गामसँ चलि गेलौं। सोझे चलि गेलौं, से नइ कहबैन, कहबैन जे नोकरी करैक खियालसँ गेलौं। सभ माता-पिता तँ चाहिते छैथ बेटा-बेटी अप्पन भार उठा आगू बढ़ए।

सकल्पसँ पूर्व जे इच्छा जगैए वएह इच्छा अप्पन शक्तिकेँ जगबैत कर्म शक्तिमे उन्मुख करैए जइसँ कर्मशीलताक आगमन होइए आ वएह कर्मशीलता कर्म-शक्ति बनि इच्छित फलक धरतीपर ठाढ़ करैए। खाएर जे से, सिनेहानन्द अपना मनमे रोपि लेलक जे दुनियाँमे सभ खालीए हाथे ने अबितो अछि आ जेबो तँ करिते अछि, तखन तँ भेल तइ बीचक दुनियाँक कालखण्डक जीवन, जे तीत-मीठ दुनू होइते अछि।

सिनेहानन्दक मनमे ट्यूशन पढ़बैक विचार तँ जगलै मुदा अखन तक पढ़बैक किछुओ अनुभव तँ छेलै नहि। ओना, सिनेहानन्दक विचारमे एतेक धक्का बेर-बेर उठिते छेलै जे बी.ए.मे पढ़ै छेलौं तेकरा छोड़ि कऽ भागलौं.! ओइ समयक अप्पन नाप एतबे छल जे अपने तँ बी.ए. केने छी, मुदा बहुतो नामी-गामी कलाकार भेबे कएल छैथ जिनका हाइयो स्कूलक डिग्री नइ छैन। हारल-मारल सिनेहानन्द विचारि लेलक जे कौलेजक विद्यार्थीकेँ नहि, मुदा हाइस्कूल तकक बच्चाकेँ तँ पढ़ा सकै छी। ओना, जेते तक अपने पढ़ने छी, माने बी.ए. तक, तेते तकक बच्चाकेँ पढ़ाइये सकै छी। सिनेहानन्दक मनमे विश्वास जगलै आ बच्चा सभकेँ ट्यूशन पढ़ौनिक बाट पकैड़ चलए लगल। कर्मपथपर चलैत-चलैत सिनेहानन्द आइ एकटा नीक कोचिंग संस्थान चला रहला अछि।

ज्योतिकेँ शीतलपुर गाम एलाक आइ तेसर दिन छी। दू दिनमे ज्योति मने-मन ठेकना लेलक जे गाममे लक्ष्मण भाइक नामसँ जानल-मानल एक बेकती छैथ जे साहित्य-कलासँ जुड़ल छैथ तँए हुनकासँ पहिल भेँट करब। गमैया गति छोड़ि, माने जेकरा गमैया चालि सेहो कहै छिऐ, ज्योति मुम्बइया गति (शहरक)

पकैड़िये नेने अछि, तँए असगरो केतौ जाएबकैँ अबूहगर नहियैँ बुझैए। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, ओ अछि शहरी जीवनसँ? चारि महानगरक बीच की एकरूपता अछि आ की विद्रूपता, एकरा बिना बुझने सभ महानगरकेँ एक्के रंगक महानगर मानि लेब केतेक उचित हएत, से तँ जखन अप्पन देखल रहत तखने बुझब।

आइ एते तँ सुविधा भइये गेल अछि जे गामो-घरमे गाड़ी-सवारीक आंशिक बेवस्था भइये गेल अछि। आंशिक ऐ दुआरे जे जहिना मानसूनक प्रभावसँ बरखा होइए, तैसंग नदी-नाला अछि आ जेकरा अपना सभ सिरा कहै छिऐ, माने ऊपर, तइमे पाथर भरल पहाड़ रहने ओहो पानि, माने दुनू रंगक पानि, बर्फसँ पिघललो, जेकरा हिमजल सेहो कहै छिऐ आ मानसूनी बर्खाक पानि सेहो जे उत्तर-सँ-दच्छिन दिशामे तेना बहैए जे साले-साल क्षेत्रक रूप-रेखा सेहो बदैलिते रहैए। खाएर जे किछु, टेम्पूसँ ज्योति लक्ष्मण भाय ऐठाम पहुँचल। सिनेहानन्दक जानकारी लक्ष्मण भायकेँ भऽ गेल रहैन मुदा मनमे कोनो तेहेन रुचि रहबे ने करैन जे किछु जिज्ञासा रहितैन। गामक लेल सिनेहानन्द अनाड़ी भइये गेल अछि। ओना, गाम-घरमे एहनो कहबी अछिए जे ‘गामक फेदार मोरंगक दफेदार।

ज्योतिकेँ देखि लक्ष्मण भाय मने-मन बुझि गेला जे सिनेहानन्दक बेटी छी।

ज्योति ठाढ़े-ठाढ़ एकहाथे लक्ष्मण भायकेँ अभिवादन केलकैन। अनुभवी लोक रहने लक्ष्मण भाय मानि लेलैन जे अपने चालिये-ढालिये ने लोक चलैए। कहैकाल तँ सभ कहिते अछि जे मिथिला देशेक गुरु नहि, दुनियाँक गुरु छी से सोझे भाषणे टा मे नहि ने अछि, सच्चाइयो अछि किने। दुनियाँक झमेल छोड़ू, देशेक चर्च करू। खाइ-पीबैक मामलामे, बंगाल छोड़ि, बाँकी कोनो राज्यक लोक ने एते रंगक भोज्य विन्यास बनबैक कलाकार छैथ आ ने हुनकामे एते कलाकारी अखन तक एलैन अछि। खाएर जे से, सभकेँ अप्पन-अप्पन सनातनसँ चलि अबैत जे पद्धति छैन तइ अनुकूल चलि रहला अछि। एते तँ लक्ष्मण भाइक मनमे खटकबे केलैन जे अपना ऐठाम, माने मिथिलांचलमे, दुनू हाथ जोड़ि पएर छुबि प्रणाम कएलो जाइ छल आ अखनो चलि रहल अछि। दुनू हाथ जोड़ैक माने अछि, जेकरा धार्मिक भाषामे पूर्ण समर्पण कहै छिऐ, जैठाम भक्त-भगवानक भेद पटि जाइए। तइ रूपमे पएर छुबैक चलैन चलैत आबि रहल अछि। प्रश्न अछि जे

समयक गतिक अनुकूल ओइमे बदलाहट सेहो अबिते अछि। एबो कएल अछि आ आबियो रहल अछि, तेकरे ने समयानुकूल बनबैत चलब कलाकारी भेल।

लक्ष्मण भायकेँ अपना लगमे जे कुरसी रहैन, तइ दिस ज्योतिकेँ इशारा करैत बैसैले कहलैन। लगमे बैसिते ज्योति बाजल-

"दादाजी, जहिया जन्म भेल तइमे शुरूक चारि बरख छोड़ि दइ छी, बाँकी सोलह बर्खपर गाम एलौं हेन।"

लक्ष्मण भाय मने-मन विचारि लेलैन जे बाल-बोधकेँ बाले-बोधक स्तरक शब्दमे ने जवाब देब बेसी नीक हएत। लक्ष्मण भाय बजला-

"खुशीक बात तँ भेबे कएल जे देरो-सबेर गामक मुँह देखलह। अप्पन बाप-पुरखा सभ कहने छैथ, भरि दिनक हेराएल जँ साँझुओ पहर आबि जाए तँ ओ हेराएल, हेराएब नइ भेल।"

मुम्बइक परिवेश ज्योतिक संग परिवारेकेँ प्रभावित कइये देने अछि। लक्ष्मण भाइक विचारकेँ ज्योति तारतम केने बिना बाजल-

"दादाजी, अपनेक नाम मुम्बइये सँ सुनै छी, आइ साक्षात्कार भेलौं।"

ज्योतिक विचारकेँ गम्भीरतासँ पकड़ैत लक्ष्मण भाय बजला-

"केना मुम्बइमे सुनलह?"

ज्योति बाजल- "अपने मैथिलीमे लिखै छिऐ, हमरा मैथिली थोड़-थोड़ बाजल तँ अबैए मुदा पढ़ल-लिखल नइ होइए।"

ज्योतिकेँ धन्यवाद दैत लक्ष्मण भाय बजला-

"बाजबो की कम भेल। कमसँ कम जँ बजितो रहबह तँ भाषा जीबैत जरूर रहत। मुदा..?"

'मुदा' सुनिते ज्योति पुछलकैन- "मुदा की?"

लक्ष्मण भाय बजला-

"मुदा यएह जे फोर्सोमे आ सिपाहियोमे, भोजपुरी भाषा देश भरिमे पसरल अछि मुदा अप्पन देश-कोस केहेन अछि से तँ वएह सभ ने अपना मुहेँ बजता।"

सुनैक क्रममे ज्योति कान ठाढ़ केनहि छल मुदा सुनलक केते से तँ ज्योतिक मने ने कहत, जहिना अपना धुनिमे लक्ष्मण भाय तहिना अपना धुनिमे

ज्योति। धुनियो तँ धुनि छीहे, तँए ने भोरक बसन्तक टाँहि, माने धुनि सौंझुका साँझसँ, माने संध्याक टाँहिसँ भिन्न होइते अछि। विचारकेँ आगू बढ़बैत ज्योति बाजल-

"दादाजी, साहित्यिक किछु प्रश्न मनमे अछि।"

'प्रश्न साहित्यक' सुनि लक्ष्मण भाय चौंक गेला, साहित्य तँ समाजक धरोहर सम्पैत छी, केतौक किए ने हुअए मुदा ओ तँ ओइ भाषा-क्षेत्रक समाजक सम्पैत छीहे। ओना, लक्ष्मण भाइक मनमे ईहो नचैत रहैन जे ओहिना नइ ने कहल गेल अछि जे 'दाने-दानेपर लिखा है, खाने वाले का नाम'। मुदा मनक विचारकेँ मनेमे दाबि लक्ष्मण भाय बजला-

"बाउ! जैठाम समाज रहत तैठाम साहित्ये ने ओकरा आँखि-सँ-पाँखि धरि देखैक-चलैक रस्ता पकड़ौत।"

अपना धुनियेँ लक्ष्मण भाय जे बाजल होथि मुदा ज्योति अपना धुनिये सुनलक। ज्योति बाजल- "की आँखि-पाँखि दादाजी?"

ज्योतिक प्रश्नमे नुकाएल जीवन देखि लक्ष्मण भाइक मन वौआए लगलैन। लक्ष्मण भाइक वौआइत मनमे उठलैन, जहिना हर मनुक्खकेँ अप्पन-अप्पन जीवनो अछि तहिना अप्पन-अप्पन बुधि-विचार-विवेको अछिए। तैठाम कोनो जीवनकेँ लगले आँकि लेब, बचपनो भऽ सकैए। विचारकेँ सोझरबैत लक्ष्मण भाय बजला-

"बौआ, कनी सोझराकऽ अप्पन विचार बाजह?"

अखन तक जे विचार दुनू गोरेक बीच चलि रहल छेलैन ओ तर पड़ि गेल आ ऊपरमे आबि गेल ज्योतिक मुँहक बात- 'साहित्य समाजक ऐना छी, से केना बुझब?'

ज्योतिक मुहसँ सुनल विचारक गम्भीरताकेँ देखि लक्ष्मण भाइक मनमे गीताक विचार जगि गेलैन। सर्वधर्मान्परित्यज्य..., माने सभ धर्मकेँ छोड़ि, तखन बँचलौं तँ अपने टा ने.! फेर लगले अपने मन धुसैक गेलैन, जइसँ प्रश्नक रूपे-रेखा लक्ष्मण भाइक बदैल गेलैन। एकरा शाब्दिकसँ बेवहारिक नइ बुझि लक्ष्मण भाय आ ज्योतिक गप-सप्प बुझब। लक्ष्मण भाय बजला-

"बुच्ची, पढ़ै छह आकि पढ़ाइ छोड़ि देलह?"

ज्योति-

“कॉलेजमे पढ़ै छी।”

लक्ष्मण भाय-

“बाबूजी की करै छथुन?”

“कोचिंग चलबै छैथ।”

“अप्पन मकान छिअह आकि भाड़ामे नेने छह?”

पनरह बर्खक अप्पन कठिन मेहनतक बलपर सिनेहानन्द अप्पन मकान बना दसटा शिक्षकक संग अपनो कार्यरत भऽ बेवस्थाकेँ, कोचिंग संचालनक सभ भार, सम्हारि रहल छैथ। ज्योति बाजल- “अप्पन मकान छी।”

लक्ष्मण भाय बजला-

“पिताक काजमे तूँ की सभ सहयोग करै छुहुन?”

लक्ष्मण भाइक विचार जेना ज्योतिक मनमे प्रहार केलक तहिना ज्योतिकेँ बुझि पड़ल। मुदा किछु छी तँ शहर-बजारक बच्चा ने छी। देखिते छी जे गामो-घरक लोक एक्के-उपे तीन-चारि घन्टाक क्रिकेट मैच देखि लइए, तहिना भावकेँ संयमित करैत ज्योति बाजल-

“किछु ने सहयोग करै छिऐन।”

लक्ष्मण भाय-

“कौलेजमे पढ़ै छह, हाइस्कूल तकक बच्चाकेँ तोहूँ पढ़ा सकै छह?”

लक्ष्मण भाइक विचारसँ ज्योति जेना मर्माहत हुअ लागल, तहिना मनमे अक्कछपन आबए लगलै। मुदा दुनू गोरेक बीच उठल प्रश्नक उत्तर बिना पेने जाएबो उचित नहियेँ बुझि पड़लै तँए पुन: प्रश्नकेँ दोहरबैत ज्योति बाजल-

“दादाजी, साहित्य समाजक ऐना छी, से केना बुझब?”

ज्योतिक पुनर्प्रश्न सुनि लक्ष्मण भाय मने-मन आँकि लेलैन जे, जे बेकती विचारक दौड़सँ आगू नहि बढ़ल, माने कर्मक दौड़मे नइ आएल, ओ समाजक साहित्य आकि साहित्येक समाज केना देखि पौत। विचारकेँ सम्हारैत लक्ष्मण भाय बजला- “औझुके ई प्रश्न नइ छी। एहेन प्रश्न सभ दिनसँ आबि रहल अछि आ सभ मानितो तँ छथिए जे साहित्य समाजक ऐना छी।”

एक तँ ओहुना ज्योतिक मन अक्कछ भइये रहल छल, तैपर लक्ष्मण भाइक मुहसँ उत्तरक विराम सुनि लेलक। एकाएक ज्योति उठैत बाजल-

"आब जाइ छी।"

❑

शब्द-संख्या: 1858

रचना-तिथि: 14 फरवरी 2024

सहोदर भाय

आइ पनरह दिनक पछाति जगरनाथसँ घुमिकऽ एलौं। ओना, गाड़ीक (ट्रेनक) रास्ता चौबीसे घन्टाक अछि मुदा अपने पनरह दिन लगि गेल। पनरह दिन लगैक कारण भेल जे जखन देखैयेक विचारसँ जगरनाथ गेल छेलौं तखन सूर्यक कोणार्क मन्दिर आ बंगलाक शान्ति निकेतन, सुन्दरवन, विक्टोरिया हाउस, इंगलिश बाजार इत्यादि नहि देखितौं तखन गेबे किए केलौं। तँए सभ देखैत-सुनैत पनरह दिन लगि गेल। ओना, पहिने जखन लोक पएरे, जगरनथिया बेंत नेने गीत गबैत जाइ-अबै छला तखन छअ मास लगै छेलैन। मुदा आब तँ गाड़ी-सवारीक सुविधा भेने चारि-पाँच दिनमे जाए-आबि सकै छैथ। गाम अबिते पत्नी कहलैन जे ललित काका अब-तबमे छैथ। जइ घड़ी जइ पहर छैथ सएह बहुत!

पत्नीक मुँहक समाचार सुनि मनमे विचार केलौं जे जखन ललित कक्काक एहेन स्थिति छैन तखन पहिने हुनकर दर्शन करब जरूरी अछि। किए तँ एहनो सम्भव अछिए जे कहीं बिच्चेमे प्राण छुटि गेलैन तखन अन्तिम भेँट नहियेँ हएत। जेबो करब तँ मात्र मृत शरीर टा देखबैन। मनमे तेते जिज्ञासा जगि गेल जे हाथो-पएर ने धुअ लगलौं आ ललित काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। ओना, गाड़ीक झमारसँ देह-हाथ दुखाइये रहल छल मुदा जँ खा-पीब कऽ आराम करए लगितौं आ जँ तइ बिच्चेमे ललित काका चलि बसितैथ तखन तँ मनक विचार मनेमे रहि जाएत। ओना, मनमे ईहो उठिये रहल छल जे जाइकाल, माने जगरनाथ जाइकाल भेँट केने रहिऐन, मुदा ओइ दिन तँ कोनो तरहक शिकायत शरीरमे नहि रहैन, बिच्चेमे की भऽ गेलैन? मने-मन रास्तामे हुअए जे झटैक कऽ नहि जाएब आ तइ बिच्चेमे जँ कहीं प्राण छुटि जानि तखन तँ गेलहो साफल नइ हएत। तँए खूब झटैक कऽ, बुझू जे दौड़िते ललित कक्काक घरपर पहुँचलौं।

ललित काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर चद्देरसँ मुँह झाँपि सुतल छेलैथ। सुतल कि छेलैथ जे जगले आँखि मुइन पड़ल-पड़ल किछु सोचि रहल छेलैथ। लगमे पहुँचते टोकलयैन-

"काका, काका, सुतल छी?"

जहिना अपने बजलौं तहिना ललित काका अप्पन मुँहपर सँ चद्देर हटा आँखि खोलि बजला-

"नइ, सुतल नइ छी, ओहिना पड़ल छी।"

ललित काका उठिकऽ बैसला। अपनो निच्चाँसँ ऊपर ओसारपर चढ़ि चौकीपर बैसलौं। मनमे एते आशा तँ जगिये गेल जे कक्काक दर्शन भऽ गेल। तँए, अखन धरिक मनक सभ घबड़ाहट मेटा गेल। बजलौं-

"अखने कनियेँ पहिने जगरनाथसँ एलौं हेन। अबिते पत्नी कहलैन तँए दौड़ल एलौं। ओना, गाड़ीक झमारसँ देह-हाथ बथैए तँए नहा-खा कऽ किछु समय आराम करब तखन मन हल्लुक हएत। अपनेक समाचार सुनि मन तेतेक घबड़ा गेल जे अपने ले परसादीओ ने लिअ लगलौं। ऐठामसँ जाएब तखन नहा-खा कऽ आराम करब, पछाइत निचेनसँ आएब, परसादियो नेने आएब आ यात्राक वृतान्त सेहो सुनाएब।"

विचारक क्रम, माने गप-सप्पक क्रममे आकि मनक चिन्ता असथिर भेने, ललित काका बजला-

"पैछला दिन जे भेँट भेलह तइ दिन जगरनाथ जेबाक चर्च कहाँ केने छेलह। असगरे गेल छेलह आकि आरो गोरे सभ गेल छेलैथ?"

ललित कक्काक विचार सुनि मने-मन विचारलौं जे जखन झूठ नहि बजै छी तखन झूठ किए कहबैन। बजलौं-

"काका, एकाएक जगरनाथ जेबाक विचार नइ भेल। विचार बहुत दिन पहिनेसँ मनमे आबि रहल छलए, मुदा मनक विचार मनेमे रहि जाइ छल आ नहि जा पबै छेलौं। ऐ बेर संयोग नीक बैसल, पैछला छअ मासक वृद्धा-पेंशन भेटल, जगरनाथ जेबाक विचार मनमे रहबे करए, केकरो किछु कहलिऐ नहि, असगरे विदा भऽ गेलौं।"

दुनू गोरे, माने ललित कक्काक संग अपने गप-सप्प करिते रही कि

सुमित्रा काकी आँगनसँ दरबज्जापर आबि बजली-

“बौआ, सुनलौं जे अहाँ जगरनाथ गेल छेलौं, परसाद कहाँ देलौं?”

सुमित्रा काकीक बात सुनि बजलौं-

“काकी, ठीके सुनलिऐ हेन, कनियेँ काल पहिने गाम पहुँचते छी कि कक्काक समाचार सुनि धड़फड़ाएले चलि एलौं, तँए परसाद नहि आनि सकलौं। बेरू पहर जखन आएब तखन परसादो, बद्धियो आ समुद्री शंख सेहो नेने आएब। अखन, गप्पो-सप्प करैक मन नइ होइए तेते थकान अछि।”

जहिना सुमित्रा काकीकेँ कहलयैन तहिना ओ मानि गेली। तइ बिच्चेमे ललित काका बजला-

“सुधीर, अपना मनमे होइत हेतह जे तीन राज्यक यात्रा केलौं अछि मुदा तीनू एक्के छल ने।”

ललित कक्काक विचार सुनि अपने गुनधुनमे पड़ि गेलौं जे बिच्चेमे ललित काका की कहि देलैन.! बजलौं-

“काका, अहाँक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं।”

मुस्कुराइत ललित काका बजला-

“साए-सबा-साए बर्ख पहिने तीनू राज्य एक्के छल जे बंगालक नामसँ जानल जाइ छल। अंगरेजे समयमे उड़ीसो आ बिहारो अलग भेल। अंगरेजी शासनक पछाइत बंगाल फेर विभाजित भेल जे पूर्वी बंगाल आ पच्छिमी बंगाल भेल। पूर्वीए बंगाल पूर्वी पाकिस्तान भेल। वएह अखन बंगला देश बनि गेल अछि।”

ललित कक्काक विचार सुनि मनमे जेना एकटा नव जानकारी आएल, जइसँ मन खुशी भऽ गेल। बजलौं-

“काका, अखन तक जे नइ बुझै छेलौं से आइ बुझलौं।”

गप-सप्प करिते रही कि तहीकाल कोरामे बच्चा नेने शारदा पहुँचल। शारदा ललित कक्काक बेटी। लगमे अबिते शारदा ललित कक्काक संग अपनो गोड़ लागि बिना किछु बजने आँगन चलि गेल। आँगन गेला पछाइत आन बेटी जकाँ शारदा कानल नहि। आँगन पहुँच पहिने गोसाँइ आगू जा गोड़ लगलकैन आ घरसँ निकैल माएकेँ सेहो गोड़ लगलक। अपने विदा भेलौं।

चारि बजे जगरनाथक सनेस नेने ललित काका ऐठाम पहुँचलौं तँ शारदो आ सुमित्रो काकी माने पत्नियोँ आ बेटियोकेँ ललित काका लग बैसल गप-सप्प करैत देखलयैन। हमरा देखिते दुनू गोरे उठि गेली। सनेसक पुड़िया हाथमे रहबे करए, सुमित्रा काकी दिस बढ़बैत बजलौं-

“काकी, सनेस लिअ।”

पुड़िया खोलि चूड़ो आ मकैया-लड़ूओ एक मुट्ठी ललितो काकाकेँ सुमित्रा काकी देलकैन आ बाँकी नेने दुनू माइ-धी आँगन चलि गेली। दुइये गोरे, माने अपने आ ललिते काका टा दरबज्जापर रहलौं। एकान्त बुझि आकि अपनत्व बुझि ललित काका बजला-

“सुधीर! देहक रोग, माने दैहिक बिमारी अपना नइ अछि।”

ललित कक्काक विचार सुनि मने-मन विचारए लगलौं जे ई की ललित काका बाजि रहल छैथ? अखन तक मानसिक रोग नइ बुझै छी। आँखियोसँ देखै छी आ शरीरक कष्टोसँ बुझि पड़ैए जे बिमारी शरीरे टामे होइए। बजलौं-

“काका, जखन देहमे रोग नइ अछि तखन तँ निरोगे भेलिऐ किने?”

अपने मानसिक रोग नइ बुझै छी मुदा ललित काका तँ फुटा-फुटा कऽ, माने अलग-अलग शरीरोक रोग आ मनोक रोग बुझै छैथ, तँए बजला-

“निरोगो नइ छी, दैहिक आ मानसिक दुनू तरहक रोग मनुक्खकेँ होइए। अपना जे रोग अछि ओ मनक छी, माने मानसिक छी।”

मने-मन तर्क-वितर्क करए लगलौं जे जइ मनकेँ देखबो ने करै छी, तइ मनकेँ रोग केना पकैड़ लइए? मनमे ईहो हुअए जे समाजमे ललित काका ओहन लोक छथिए जे झूठ-फूससँ कोसो दूर हटल रहै छैथ तँए झूठ तँ नहियेँ बजै छैथ। मुदा अस्वस्थ जकाँ, माने रोगाएल जकाँ किए लागि रहल छैथ? केना कहबैन जे काका जखन दैहिक रोग नहि अछि तखन चद्दैर ओढ़िकऽ किए सुतल छी? तहूमे गाम-समाजक लोक सेहो बजिते छैथ जे ललित काका सीरियस बिमार छैथ। अब-तबक स्थितिमे छैथ?

ओना, अखन तक हर मनुक्खमे एहेन संस्कार घर केनहि अछि, माने विचार बनले अछि जे अप्पन परिवारक कमजोरी दोसर लग, माने अनका लग नइ बाजए चाहैए। किए तँ ऐसँ अपने परिवारक हीनताइ हएत। मुदा समय

एलापर, माने बेर पड़लापर स्वत: बजा जाइते अछि। सिहरैत-थरथराइत ललित काका बजला-

“सुधीर, अखन तक ने तोरा आन बुझै छिअ आ ने तोरा परिवारकेँ बीरान बुझै छिअ, तँए तोरा लग खुलिकऽ बजै छी।”

ललित कक्काक विचार सुनि मन जेना भीतरे-भीतर पसीज गेल। मुहसँ बकार किछु नहि फुटि रहल छल मुदा चेहराक रंग ओहन बनि गेल जे गम्भीर-सँ-गम्भीर विचार सुनैले तैयार छी। जे ललित काका आँकि लेलैन। हृदय खोलि बजला-

“सुधीर, तोरा तँ बुझले छह जे भगवान चारिटा सन्तान देने छैथ। तीन टा बेटा आ एकटा बेटी। बेटी सभसँ छोट अछि आ तीनू बेटा नमहर, माने जेठ अछि?”

बुझल रहबे करए, बजलौं-

“हँ, से तँ बुझले अछि।”

ललित काका आगू बजला-

“पाँच सालसँ बेटी सासुर बसैए। दुनू बेटामे जेठका पनरह सालसँ आ मझिला बारह सालसँ बाहर रहैए, माने मुम्बईमे रहैए।”

बिच्चेमे बजलौं-

“हँ, से तँ रहिते अछि।”

ललित काका-

“केतेक मेहनतसँ दुनू भाँइकेँ पढ़ेलौं-लिखेलौं से तँ तूँ जनिते छह?”

बजलौं-

“हमहीं टा किए, समाजक लोक सेहो जनैए।”

ललित काका बजला-

“दुनू अप्पन-अप्पन पत्नी आ धिया-पुता लऽ कऽ बाहरे रहैए। सुनै छी जे दुनू भाँइ नीक कमाइए, मुदा घर (परिवार) बिसैर गेल अछि। ने कहियो गाम अबैए आ ने एकटा पाइ दइए।”

बजलौं-

"काका, एहेन अहींटा कैँ नहि अछि, बहुतोकैँ अछि। कहबी छै जे 'ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा, सब घर एक्के लेखा'। मोटा-मोटी एहेन परिवेशे बनि गेल अछि। बजैक क्रममे सभ बजैए जे श्रवण कुमार जकाँ माए-बापक सेवा करब, मुदा ओ बाजबे धरि सीमित भS गेल अछि।"

हमर विचार सुनि ललित काकाकैँ जेना बुकौर लगि गेलैन। बोलीक स्वर थरथराए लगलैन। ने किछु ललित काका बाजि रहल छैथ आ ने अपने मुहसँ किछु निकैल रहल अछि। अपना मुहसँ ऐ दुआरे किछु ने निकैल रहल अछि जे ललित कक्काक आगूक जीवन, ओहन अन्हारमे पड़ि गेल छैन जे दुनियाँक कोन बात जे अपनो देह-हाथ नहि देखि पेब रहल छैथ। एहने स्थितिमे लोक निस्सहाय, निर्बल बनि अचेत भS खसि पड़ैए।

थोड़े काल चुप्पा-चुप्पी रहला पछाइत चुप्पी तोड़ैत ललित काका बजला-

"सुधीर, अपने दुनू परानी बुढ़ भेलौं। उमेर तँ पचासेक लगभग अछि मुदा बुझले छह जे कबीरो दास कहने छैथ, 'चिन्ता से चतुराइ घटे, सोग से घटे शरीर, पाप से लक्ष्मी घटे, कह गये दास कबीर'।"

ओना, अपनो बुझल अछिए जे ललित कक्काक तेसर बेटा विकलांग छैन, माने एकटा पएर सुइख गेल छइ। तेकरे सोग भरिसक ललित कक्काक मनकैँ गछाड़िकS पकड़ने छैन। सोभाविको अछिए। जइ मनुक्खकैँ एकटा पएर काजक नहि रहत ओ उठिकS ठाढ़ केना हएत आ जखन ठाढ़े नइ भेल हेतै तखन चलि-बुलि केना सकैए? जखन चलले-बुलल नइ हेतै तखन किछु कS केना सकैए? ओना, बैसलो-बैसल बैसारी-काज कैये सकैए मुदा जीवनो तँ जीवन छी जे सोल्होअना सभ किछु बैसले-बैसल नहियेँ चलि सकैए.! लगैए तँए ललित कक्काक मुहसँ बोल नहि फुटि रहल छैन।

ओना, गामो-समाजमे देखिते छी जे एहेन-एहेन लोकक, माने अपलाँग-विकलाँगक जीवन केतेक कष्टकर होइए। जाबे तक माता-पिता जीवित रहै छैथ ताबे तक अप्पन सन्तान बुझि कोनो तरहेँ तँ पार-घाट लगा लइ छैथ मुदा माता-पिताकैँ परोछ भेने ओकर दशा केहेन होइए सेहो तँ देखिते छी।

भाए भैयारीक सेवा केते करत। हँ, एते जरूर अछि जे किछु भाए-भैयारी एहेन अछिए जे सहोदर बुझि अप्पन दायित्वक निर्वहन करै छैथ, मुदा ओ तँ अल्पांश अछि।

दुनू गोरे, माने अपनो आ ललितो काका, गप-सप्प करिते रही कि शारदा चाह नेने पहुँचल। ओना, अढ़ दबि शारदा दुनू माइ-धी, सभ बात, दुनू गोरेक बीचक, सुनियेँ रहल छेली, मुदा किछु बाजि नहि रहल छेली। चाह रखि शारदा बाजल-

"बाबू, अहाँ मनक चिन्ता हटाउ। अहाँ बुढ़ छी, तँए चिन्ता अछि जे अपना मुइला पछाइत सुनील भैयाकेँ के निमरजना करत। मुदा हम तँ से नहि छी। हम करबैन।"

बेटीक विचार सुनि ललित कक्काक मन ओहिना कलैश उठलैन जेना मौलाएल-मन्हुआएल गाछमे नव कलश चलिते कलैश उठैए। हाथसँ चाहक कप लैत ललित काका शारदा बेटीक चेहरापर नजैर दौड़ौलैन। नजैर दौड़िते ललित कक्काक मनमे जेना नव उत्साह जगलैन तहिना एक चुस्की चाह मुहमे लैत बजला-

"बाउ, तोहूँ तँ स्वतंत्र नहियेँ छह, पराधीने छह, तखन?"

संकल्पित साध्वी जकाँ शारदा कहलकैन-

"बाबू, हमरो हाथ-पएरमे शक्ति अछि। जँ केतौ बाधा-रूकावट परिवारमे हएत, तेतए ओकर मुकाबला करब।"

पिता-पुत्रीक विचार सुनि अपनो मन उत्साहसँ भरि गेल। उत्साहित होइत बजलौं-

"काका, मनक चिन्ताकेँ मनसँ हटा लिअ। अहाँकेँ एते सम्पैत अछि जेकर उपयोग नीक जकाँ हएत तँ एक जीवन, माने एक गोरेक जीवनकेँ के कहए जे अनेको जीवन नीक जकाँ चलि सकैए।"

चाह पीबैत-पीबैत ललित कक्काक मन ओहिना फुला गेलैन जेना अनुकूल वातावरण भेटलापर अपराजित फुलाइए। तैबीच सुमित्रा काकी सेहो आँगनसँ निकैल दरबज्जापर आबि आगूमे ठाढ़ भऽ बजली-

"सुधीर बौआ, सुनील सन्तान छी! अपाहिज जरूर अछि, मुदा ओकर जे बुद्धि तीक्ष्ण छै जेकर वर्णन नइ हुअए। जेठका दुनू बेटा भलेँ ओकरा भाए नहि मानि सेवा नइ करैए, किए तँ देखिये रहल छी जे एते कमाइए, अप्पन स्त्री आ बाल-बच्चा छोड़ि जखन माइयो-बापकेँ एकोटा पाइ नइ दइए तखन भाए तँ

सहजे दियादे भेल।”

सुमित्रा काकीक विचारमे सह दैत बजलौं-

“काकी, सुनीलक एकटा पएर अवाह अछि जइसँ चलै-फीड़ैमे असुविधा होइ छै, मुदा बैसलो-बैसल तँ लोक किछु कैये सकैए। तहूमे शारदा बहिन जखन सेवा करैले तैयार अछि तखन अहाँ दुनू परानीकेँ मनसँ चिन्ता हटा लेबाक चाही।”

भार मुक्ति होइ आकि कर्ज मुक्ति, जखन मनुक्खकेँ मुक्ति भेट जाइए तखन एकटा नव जीवनक आगमन होइए। बजलौं-

“काका, अपना जीबैतमे दुनू भाँइकेँ बजा, समाजक बीच पुछि लियौ। जँ नाकर-नुकर करत तँ अप्पन जे सम्पैत अछि ओकर निराकरण समाजक बीच कऽ लिअ। केकरो भरोसे कियो जन्म नइ लइए।”

ललित काका बजला-

“सएह?”

बजलौं-

“सएह ने ते आरो की।”

❑

शब्द-संख्या: 1950

रचना-तिथि: 04 सितम्बर 2024

विखण्डन

✳

मिथिलांचलक एकटा गाम कुसुमपुर। आने गाम जकाँ, कुसुमपुरो गाम अछि। जहिना दर्जनो नदी-नालासँ मिथिलांचल आच्छादित अछि, तहिना कुसुमपुरमे सेहो दू टा धार बहैत अछि। गामक बनावट भौगोलिक दृष्टिसँ उत्तरे-दछिने दिशामे अछि, जे गामोक लोक आ आनो गामक लोक द्वारा नीक मानल जाइत अछि। सभकियो बजै छैथ जे कुसुमपुर गामक बनावट नीक अछि।

कुसुमपुरकेँ नीक ऐ दुआरे लोक मानै छैथ जे आन गाम जकाँ गाम पूबे-पछिमे नहि बनल अछि। बैशाख-जेठमे जैठाम गाम-गाममे बेसी अगिलग्गी होइए, तैठाम कुसुमपुरमे एहेन घटना नइ होइए। गाम-गामक अकसरहाँ लोकक घर फूसक रहने, माने खढ़-पात आ बाँससँ बनल घर रहने, बेसी अगिलग्गी होइते छल। जइसँ सौंसे गाम जरि जाइ छल। एहेन घटना साले-साल तँ नहि कहल जा सकैए, मुदा अकसरहाँ साल होइते छल। तइ खियालसँ कुसुमपुरकेँ नीक गाम, कहले जा सकैए। जे उत्तरे-दछिने बनल रहने जँ कहियो–कोनो साल–आगि लगितो छल तँ दू-चारि टा घर जरिकऽ थैम जाइ छल। पूबे-पछिमे जे गाम बनल रहैए ओकरा लोक सुर्जमण्डल गाम कहैए।

कुसुमपुर गाम होइत जे दू टा धार–नदी–बहैए; ओ एकटा गामसँ पच्छिम होइत आ दोसर गामसँ पूब होइत। ओना, दुनू धारकेँ कोसी-कमला जकाँ उपद्रवी नहियेँ मानैत अछि, किएक तँ एकटा धार, जे गामक पूब होइत बहैए, ओकरा लोक बरसाती धार मानै छैथ आ जे पच्छिम होइत बहैए, तेकरा सभदिना धार कहैत आबि रहल छैथ। बरसाती धार ओ भेल जे अखाढ़-सौनसँ बरखा भेला पछाइत प्रवाहित हुअ लगैए आ आसीन-कातिक अबैत-अबैत, जखन बरखा हएब बन्न भऽ जाइए, तखन धारक बहाव सेहो रूकिकऽ बन्न भऽ जाइए।

कुसुमपुर गामक पच्छिम होइत जे धार बहैए ओ बागमती धार जकाँ पेटे-पेटे सभ दिन, बरसातक मौसम छोड़ि, बहैत रहैए जइसँ कोनो तरहक उपद्रव; से चाहे घर-दुआर कटब हौ आकि खेतक फसिल दहाएब, से सभ किछु ने करैए। जँ कहियो काल, खासकऽ बरसातक समयमे, धार उछलबो करैए तँ दू-सँ-अढ़ाइ दिनमे पानि सटैक जाइए। जइसँ जँ कोनो फसल खासकऽ धान जँ डुमबो करैए तँ नोकसान नहि होइए। गामक लोक ओइ डुमबकेँ नीके बुझै छैथ। नीक ऐ दुआरे बुझै छैथ जे बाढ़िमे पाँक अबैए जे धानक पौधाकेँ शक्ति दइए आ दोसर गामक जे उपद्रवी जीव-जन्तु–साँप-मूस-छुछुनैर–इत्यादि-इत्यादि रहैए ओ सोल्होअना भलेँ नहि, मुदा पतरा तँ जाइते अछि। जइसँ उपजोमे आ आनो-आनमे लाभ होइते अछि।

आन गाम जकाँ ने कुसुमपुर गाम नमहर अछि आ ने छोट। चारि साए बीघा जमीनक रकबा गामक अछि आ मात्र अढ़ाइ साए परिवारक बास अछि। ओना, एहेन गाम कुसुमपुर अछिए जइमे अनेको जाति बास करै छैथ। बहुतो एहेन गाम अछि जे एकजतिया अछि–माने गाम रहितो एक्के जातिक बास रहैए, मुदा से कुसुमपुरमे नहि अछि। कुसुमपुरकेँ बहुजतिया गाम कहि सकै छिऐ। भलेँ कोनो-कोनो जाति दुइये-चारि घर किए ने हुअए, मुदा आन गामक अपेक्षा कुसुमपुरमे बेसी जाइतिक बास अछिए। बेसी जाति रहितो गाममे कहियो ने जतिआरए झगड़ा भेल अछि आ ने अखनो होइए। तइमे एकटा गुण आन गामक अपेक्षा कुसुमपुरमे ई जरूर अछि जे एतए छुआ-छूत सेहो नइ अछि। छुआ-छूत भेल एक जातिक छुअल अन्न दोसर जातिक लोक नइ खाइ छैथ। छुआ-छूत विहीन बेवहार कुसुमपुरमे आइये भेल अछि से बात नहि, केतेको पीढ़ीसँ चलि आबि रहल अछि।

जहिना आन गामक लोक समूह बना सौनमे कामौर लऽ बैद्यनाथधाम जाइ छैथ तहिना कुसुमपुरक लोक साले-साल, कामौर लऽ कऽ तँ नहि, मुदा समूह बना जगरनाथ जाइते छैथ। जखने समूह बना लोक एक रंगक जीवन, सामूहिक जीवन बितबै छैथ तखने छोट-मोट बहुतो ओहन सामाजिक रोग अछि जे बेवहारिक रूपमे स्वत: मेटा जाइत अछि। यएह बेवहार कुसुमपुर गामक लोकमे छुआ-छूत मेटा देने अछि। ओना, गाम-गामक अपनो किछु खास रिवाज होइते अछि। देखिते छी जे एक्के जाइतिक लोककेँ कोनो गाममे पानि चलैए, माने छुआ-छूत नहि अछि, आ दोसर गाममे ओइ जाइतिक पानि नहि चलैए, माने

ओइ जातिसँ छुआ-छूत होइए। एहेन बेवहार खास-खास जातिये टामे नहि, एक जाइतिक बीच सेहो होइए। देखै छी जे एक जाति रहितो, जिनका बाहरी रूपमे दोसर-तेसर जाति एक जाति मानै छैथ, बुझै छैथ, ओहूमे कुल-मूलक आधारपर अनेको जाति बनल अछि आ एक-दोसरमे छूत-अछूतक बेवहार सेहो चलि रहल अछि। तेतबे नहि, किछु जाति एहनो तँ अछिए जे कुटुमैतीमे बेटा-बेटीक विवाह सगोत्रीमे नहि करैए, माने एक गोत्रक लड़का-लड़कीक बीच वैवाहिक सम्बन्ध नहि होइए आ किछु जाति एहेन अछि जइमे सगोत्रीय विवाह होइए।

ओहन बेवहारक बीच, माने अखुनका जे सामाजिक परिवेश बनियोँ रहल अछि आ बनियोँ गेल अछि, जइमे जाति-पाँजिकेँ लोक कोठी कन्हापर रखि, माता-पिताकेँ बिना पुछने लड़का- लड़की अपना विचारसँ विवाह करए लगल अछि। ओना, स्वेच्छासँ विवाह–लड़का-लड़कीक बीच–आइये हुअ लगल अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, मुदा पहिने सामाजिक बन्धन किछु सक्कत छल जइसँ चोरा-नुका जँ केतौ होइतो छल तँ ओ लड़का-लड़की गाम छोड़ि चुपचाप पड़ाकऽ अन्तए चलि जाइ छल, ओना आब पहिने जकाँ तँ नहि मुदा अखनो ओहन घटना होइते अछि। ओहन घटनाक पाछू बेकतीगत अधिकार सेहो बल दइये रहल अछि। माने ई जे जखन कियो अठारह बर्खक भऽ जाइए तखन ओकरा बेकतीगत स्वंत्रताक अधिकार प्राप्त भइये जाइए, तँए ओ अप्पन बेकतीगत अधिकारकेँ उपयोग करैत स्वेच्छासँ विवाह कऽ लइए। गाम-गामक समाजमे सेहो एकरूपता नहियेँ अछि। कोनो समाज एहेन घटनाकेँ सामाजिक प्रतिष्ठा कहियौ आकि पारिवारिक प्रतिष्ठा बना, तेहेन बिकराल रूप दऽ दइ छैथ जे पैघ-सँ-पैघ दुष्परिणाम होइते अछि। खाएर जे होइए ओ तँ समाज-समाजक बीचक बेवहार भेल।

कुसुमपुर गामक समाज पहिनेसँ ओहन धारक धारा जकाँ अछि, जे एक धारक धारा रहितो अनेक गतिमे गतिशील होइए, एक्के धारमे बीचक जे धारा होइए ओ जहिना अधिक तीव्र आ शक्तिशाली होइए, तहिना जेना-जेना बाम-दहिनक बदलैत धारा ओइसँ कम गतिशीलो आ शक्तिहीनो होइते अछि; आ कातक, माने किनछैरिक धारा तँ आरो क्षीण होइत दौनक–धान दौनक–मेहौता बरद जकाँ चलिते अछि। एक दिस जहिना पाइटिक बरदकेँ– दौनमे जे बरद कातमे रहैए, ओकरा दौड़ए पड़ै छै, जखन कि ओही दौनक जे मेहौता बरद होइए, ओकरा साधारणो गतिसँ कम गतिये चलए पड़ैए।

भोरमे जखन सुति-उठिकऽ चापाकलपर पहुँच दतमैन करैत रही कि सोनबरिसावाली भौजी बाल्टी नेने पानि भरए एली। चापाकलपर बाल्टी राखि सोनबरिसावाली बजली-

“बौआ, एकटा बात बुझलिऐ हेन?”

सोनबरिसावाली भौजीक विचार कोनो भाँजेपर नहि चढ़ल। किएक तँ दुनियाँ तँ दुनियाँ छी। जेतए करोड़ो-अरबो रंगक विचारो आ बातो उड़िते अछि। तइमे एकटा बात की भेल? दतमैन केलाक बाद जीभिया करैले दतमैनकेँ दाँतसँ चीरि जीभिया करैक सूर-सार करैत, जखन सोनबरिसावाली भौजी दिस तकलौं कि बुझि पड़ल जे ओ किछु कहए चाहि रहली अछि। बजलौं-

“कोन बात, भौजी?”

भौजी बजली- “पाँच दिनसँ समदर्शी बाबा अन्न-पानि छोड़ि ओछाइन धेने छैथ.!”

समदर्शी बाबा-दे ओछाइन धरब सुनि बिना किछु सोचनहि-विचारने पुछलयैन-

“किएक ओछाइन धेने छैथ?”

स्त्रीगणमे बजैक एहेन सोभाव होइते अछि जे किछु सुनल विचारकेँ बढ़ा-चढ़ा बजै छैथ आ किछु विचारकेँ दाबि दइ छैथ। सोनबरिसावाली भौजी विचारकेँ बढ़बैत बजली- “कहै छथिन जे ऐ जीवनसँ मरबे नीक, तँए मरि जाएब।”

भौजीक बात सुनि मनमे भेल जे मनुक्ख तँ मनुक्ख छैथ। सभकियो जीबए चाहि रहला अछि। कठिन-सँ-कठिन रोग–जइ रोगसँ मृत्यु होइए–भेला पछातियो लोक ओकर प्रतिकार करैत जीबए चाहि रहल छैथ, तैठाम समदर्शी बाबा जानि कऽ मरए चाहि रहला अछि, तेकर तँ किछु खास कारण हएत। फेर लगले अपने मनमे भेल जे मौगी-मेहैरिक मुँहक समाचार छी तँए सोल्होअना बिसवास नहियेँ कएल जा सकैए। फेर अपने भेल जे समाचारो तँ समाचार छी, किछु एहनो समाचार होइए जेकरा लोक घटा-बढ़ा बजैए, माने कम-बेसी करिकऽ बजैए आ किछु एहनो समाचार तँ होइते अछि जेकरा लोक सही-सही सुपत बजैए। हाँइ-हाँइकऽ जीभिया करैत कुर्ड़ा केलौं आ कलपर सँ दरबज्जापर आबि पत्नीकेँ कहलयैन-

“कनी झब-दे चाह बनाउ। एकठाम जेबाक अछि?”

पत्नीकेँ खोलिकऽ ऐ दुआरे नइ कहलयैन जे जखने खोलिकऽ बाजब तखने ओ चाह बनाएब छोड़ि पुछे-आछ करए लगती आ चाह बनाएब पछुआ देती। पत्नी बजली-

“चाह तँ बना नेने छी, अहाँकेँ दतमैन करैत देखलौं तँए छानलौं नहि। छानिकऽ नेने अबै छी।”

पत्नी चाहक गिलास हाथमे पकड़बैत आगूमे ठाढ़ ऐ दुआरे भऽ गेली जे केतए जाएब से सुनए चाहि रहल छेली। मुदा किछु पुछि नहि रहल छेली। एम्हर अपना हाथमे चाहक गिलास छल आ मन उड़िकऽ समदर्शी बाबापर नाचि रहल छल। कनी काल पत्नी ठाढ़ रहली आ बिना किछु बजने आँगन चल गेली।

चाह पीब पान खा अपने समदर्शी बाबाक ऐठाम विदा भेलौं। दरबज्जासँ उतैर कनी जोरसँ पत्नीकेँ कहलयैन-

“समदर्शी बाबा ऐठाम जा रहल छी। भऽ सकैए कनी देरियो भऽ जाए।”

आन स्त्रीगण जकाँ पत्नी किछु बजली नहि, चुपचाप सुनि लेली।

दरबज्जासँ निकैल जखन सड़कपर एलौं तखन मनमे अनेको विचार समदर्शी बाबाक प्रति उठए लगल। मनमे उठल जे समदर्शी बाबा सन लोक जानिकऽ मरए चाहि रहला अछि, एहेन विचार हुनका मनमे किन्नहु नहि उठल हेतैन। फेर अपने भेल जे भऽ सकैए सोनबरिसावाली भौजी केकरो मुहेँ सुनि नेने हेती सएह बजली। मनमे कोनो एहेन विचार उठिये ने रहल छल जे निश्चिन्त होइतौं। माने ओइ विचारकेँ विश्वासपूर्वक मानि लइतौं। गुन-धुन करैत समदर्शी बाबा ऐठाम पहुँच गेलौं।

समदर्शी बाबा दरबज्जेपर बैसल रहैथ। कनी फरिक्केसँ हुनकापर नजैर देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे कोनो चिन्ता मनमे जरूर छैन। तैबीच समदर्शी बाबाक सोझामे पड़ि गेल रही, तँए बिना किछु बजने डेग झाड़ैत हुनका लगमे पहुँच बजलौं-

“गोड़ लगै छी, बाबा।”

आसीरवाद दैत समदर्शी बाबा बजला-

“आबह-आबह, शिवनाथ। संयोग नीक छल जे तूँ आबि गेलह।”

'संयोग नीक छल' सुनि अपनो मनमे जिज्ञासा उठल जे किछु बात जरूर अछि। तँए एहेन भाषाक प्रयोग बाबा केलैन। जइ चौकीपर समदर्शी बाबा बैसल छला तही चौकीपर सोझा-सोझी तँ नहि, मुदा पँजरा दबिकऽ अपने बैसलौं। जहाँ अपने बैसलौं कि समदर्शी बाबा बजला-

"शिवनाथ, होइए मरि जाइ.!"

समदर्शी बाबाक विचार सुनि मनमे भेल जे मरबो तँ शान्ति प्राप्त करब छीहे। देखिते छी जे कियो गाड़ी–ट्रेन–मे कटि कऽ मरैए तँ कियो गरदैनमे फँसरी लगा सेहो ऐ दुआरे मरैए जे अशान्त जीवनसँ नीक शान्त भऽ जाएब। ओना, एहेन बेवहार–गाड़ीमे कटिकऽ मरब वा गरदैनमे फँसरी लगाकऽ मरब–आब पुरान पद्धतिक भऽ गेल, किएक तँ जखन मरैक आसान तरीका नहि छल तखन एहेन बेवहार लोक करै छल। हँ, जखन गाम-गाममे कृषि आधारित विष–कीटनाशक–आबए लगल, तखन केते गोरे अशान्त जीवनसँ शान्त जीवन प्राप्त करैले कीटनाशक दवाइ सेहो पीब-पीब मरला, मुदा समय रहैत जँ पता चलि जाइ छल आ प्रतिकार होइ छल तँ बँचियो तँ जाइते छल। मुदा आब–आजुक परिवेशमे–मरब तँ आरो आसान भइये गेल अछि। गाम-गाममे बिजली पहुँच गेल अछि। जइसँ छन-मे-छनाक भइये जाइए।

समदर्शी बाबाक विचार सुनि बजलौं-

"बाबा, एहेन विचार मनमे किए आबि रहल अछि। अपनो जनिते छी जे प्रत्येक मनुक्खे टा नहि, धरतीपर जेतेक जीव-जन्तु अछि, सभ एक दिन मरबे करत। मुदा ईहो ने विचार करबै जे लोक जे एहेन बात सुनत जे फल्लाँ जानि कऽ मरला, तखन ओ की कहत?"

अप्पन विचार समदर्शी बाबाकेँ कहलयैन मुदा ओ बिना किछु सोचनहि-विचारनहि धाँइ-दे उत्तर देलैन- "अपने की केलौं से सुनह आब।"

समदर्शी बाबाक विचार सुनि मनमे विचार उठल जे भरिसक बेसी तामस बाबाक मनमे छैन तँए क्रोधमे बाजि रहला अछि। समदर्शी बाबाक क्रोधकेँ कम करैक खियालसँ बजलौं- "बाबा, एकटा जरूरी विचार करए आएल छी?"

जरूरी विचार सुनि समदर्शी बाबाक मन अप्पन विचारसँ हटि, हमरा विचारपर आबि गेलैन। विचार बदैलते बजला-

"केहेन जरूरी विचार छह?"

बजलौं- "बाबा! अखन तक, माने अपना जीवनमे एहेन विचार कहियो नहि आएल छल जे एहेन समय-परिवेशसँ भेँट हएत।"

जिज्ञासा करैत समदर्शी बाबा बजला- "से की?"

बजलौं- "जहिना परिवार, तहिना समाज आ तहिना शासनोमे–सरकारकेँ–देखै छी जे बजैए किछु आ करैए किछु। जे बजैए तेकर विपरीत करैए।"

विचारक लोक समदर्शी बाबा छथिए। तहूमे, अखन धरि हुनकर जे जीवन रहलैन, से एहेन रहलैन जे ओ आँखि मुनि कऽ, भावनावश वा विचारक प्रवाहमे बहिकऽ, कहियो कोनो बात नहि बाजल होइथ। हिनकर सभ दिन एहेन धारणा रहलैन जे कोनो घटना हौ आकि विचार, ओकरा खण्डन-मण्डन करैत जइसँ सबहक हितमे नीक होइ, से रखैत आबि रहला अछि। लोक मानए वा नइ मानए, ई लोकक विचार भेल। कियो अप्पन जीवनक निर्माण करैक अधिकारी तँ अपने ने अछि। एहने विचारक आधारपर गामक–समाजक–सभ हुनका 'समदर्शी बाबा' कहितो आबि रहलैन अछि आ कहबो करिते छैन।

बजलौं- "बाबा, अनकर की कहब जे अपनो पत्नी जखन अप्पन विचार सुनैले आकि कोनो काज अढ़ौला पछाइत करैले तैयार नइ होइ छैथ, तखन दोसराक केते आशा करब।"

जेना बरखा भेलापर पाइनिक साधारणो गति बहावक रस्ता पकैड़ आगू मुहेँ गतिशील होइए जइसँ एक तरहक रास्ता निर्मित भइये जाइए आ ओइ रास्तासँ पाइनिक तेज-सँ-तेज धारा बहए लगैए, तहिना समदर्शी बाबाकेँ सेहो भेलैन। भेलैन ई जे अपने तँ अप्पन परिवारक विचार उठा बाजल छेलौं मुदा समदर्शी बाबाक विचार अपना परिवारपर पहुँच गेलैन। बजला-

"बौआ शिवनाथ! अप्पन उम्र पचासी बर्खपर पहुँच गेल अछि। ऐ पचासी बर्खक बीच अप्पन परिवारक छअ पीढ़ी देखलौं हेन। शुरूमे जखन अप्पन जन्म भेल तखन बाबा जीबैत रहैथ। वएह घरक गार्जन छला। जन्म भेलाक बाद जखन अपने पाँच बर्खक भेलौं, तखन वएह गामक स्कूलमे प्रवेश करौलैन। जखन अपने मैट्रिक पास केलौं तखन ओ मरि गेला। हुनका मुइलाक बाद पिताजी घरक गार्जन भेला। जहिना बाबाक अमलदारीमे जेठ-छोटक बेवहार आ अढ़बै-चढ़बैक विचार

परिवारमे छल, तहिना पिताजीक अमलदारीमे सेहो छल। जहिना धान दौन करै काल पाँच टा, छह टा बरद एकटा कड़ाममे बान्हल एक्के गतिये चलैए तहिना परिवारमे सेहो छल। जइसँ घरमे कहियो रक्का-टोकी नइ भेल। पिताजीकेँ मुइलाक बाद, अपने जखन घरक गार्जन भेलौं तखन जहिना बाबाक अमलदारी आ पिताक अमलदारीमे परिवार चलैक ढाठी छल तेहने ढाठी पकैड़ अपनो चलैत रहलौं। जखन बेटा जवान भेल तखन परिवारक जे किरियाकलाप छल ओ आंशिक रूपमे अपने छोड़ैत गेलौं आ बेटाकेँ दैत गेलिऐ। पछाइत पोता भेल। जहिना अपने आंशिक रूपमे परिवारक भार बेटाकेँ देलिऐ, तहिना बेटो पोताकेँ देलक। देखिते छहक जे बीस-बाइस बर्खमे परिवारक पीढ़ी आगू बढ़ि बदलैत चलैए। पोताक अमलदारीमे किछु-किछु पहिलुका बेवहार परिवारमे रहबो कएल आ किछु-किछु समयक गतिक हिसाबसँ बदलबो कएल अछि। से कोनो अपने टा परिवारमे नहि, समाजोमे बदलल अछिए। समयक गति जहिना विचारकेँ बदलैए, बेवहारकेँ बदलैए, तहिना जीवनोकेँ बदैलते अछि। ओना, जेकरा लोक धर्म बुझि करैए आ अपनाकेँ धर्मात्मा मानि जीबैए, तेकरा बदलने लोकक धर्म सेहो बदैलते अछि। एहेन बदलाव साम्प्रदायिक प्रभावसँ होइए। धर्म तँ ओहन बेवहार छी जे मनुक्ख जातिमे अदौसँ रहल अछि, अखनो अछि आ आगूओ रहबे करत। जेना-जेना मनुक्खक जीवन आगू बढ़ल आ जीवन जीबैक बेवहार आसान होइत गेल, तेना-तेना धर्मक स्वरूपमे सेहो बदलाव अबैत गेल अछि।"

समदर्शी बाबाक विचार सुनि अप्पन जे साँस रूकल छल तेकरा छोड़ैत बजलौं- "बाबा, अपने जे कहलिऐ से अपने टा किए, सभकियो जानियों रहला अछि मानि कऽ करबो तँ करिते छैथ।"

जहिना अपने बजलौं तहिना विचारसँ सहमत होइत समदर्शी बाबा बजला- "बौआ, अखन तक जे कहलियह ओ पैछला–पूर्वक–भेल। आइ जे परिवेश बनि गेल अछि, जइसँ बेकती-बेकतीमे कहक आकि बेकतीक बीच विचारो आ काजोमे कहक, तेते दूरी बनि रहल अछि जे जीवने कठिन भऽ रहल अछि।"

समदर्शी बाबाक विचार नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, तँए बजलौं- "बाबा, कनी सोझरा कऽ कहियौ।"

अप्पन प्रश्न सुनि समदर्शी बाबा कनी काल मने-मन विचार केलैन। विचार

केलाक बाद बजला-

“बौआ, अपना अमलदारी तक, माने अपनासँ पूर्वक पीढ़ी तक, साँझ-भोर सभकियो एकठाम बैस परिवारोक गप-सप्प करै छेलौं आ गामो-समाजक, मुदा पोताक अमलदारीमे अबैत-अबैत, जखन पोता जवान भऽ घर-परिवारक क्रिया-कलापमे हाथ बँटबए लगल, तखन ओइ बेवहारमे कमी हुअ लगल। परपोता जे कोचिंगमे पढ़ैए, ओना ओहो जवाने जकाँ भऽ गेल अछि। पनरह-सोलह बर्खक भइये गेल अछि। ओकरा जँ किछु करैले कहै छिऐ तँ ओ तेते बकठाँही करैए जे होइए जे ऐ जीवनसँ मरबे नीक।”

समदर्शी बाबाक विचार सुनि बजलौं-

“बाबा, अपने तँ सभ दिन अप्पन जीवन अपना हाथमे रखि चलैत एलौं, आब केते दिन जीबे करब। तँए, ऐ सभ मान-रोखकेँ छोड़ि जय शिव, जय शिव करैत शान्तिसँ शेष जीवन निमाहि लिअ।”

❑

शब्द-संख्या: 2442

रचना-तिथि: 02 दिसम्बर 2025

मनुक्खक मोल

✺

कौलेजक छात्रावास सँ ललित बैग नेने बस स्टेण्ड विदा भेल। भूगोल ऑनर्सक छात्र ललित तँए मकर संक्रान्तिक महत्व बुझि तिला संक्रान्तिक पाबैन मनबैक विचारसँ गाम चलल। छात्रावास सँ निकैलते ललितक मनमे उपैक गेल जे की छी पाबैन? भाय, जखन पावनिक आराधना करै छी आ तखनो जँ किछु पेलौं नहि, तँ पावनिक मोले की आ आराधनाक फले की? अखन तक ललित किताबक ज्ञानसँ आगू नइ बढ़ल छल, तँए अन्न रखैसँ पहिने जहिना माए-बहिन माइटिक कोठीकेँ लेब-मुइन, झाड़ि-बहाइर अन्न रखैक ओरियान करै छैथ तहिना ललितक मन पाबैन मनबैक विचारसँ गाम जेबाक ओरियान धरौलक।

छात्रावास सँ निकैलते ललितक मनमे ओहिना धक्का उठल जहिना स्मृति ज्ञान, कृत्त ज्ञान होइत विर्निगत ज्ञानक सीमापर पहुँचने मनमे उठैत अछि।

नव गाम हौ कि नव लोक आकि नव देश-दुनियाँ, मनमे अबिते हजारो-लाखो रंगक विचार जहिना जागए लगैए तहिना ललितक मनमे उठए लगल। बाल मनमे जहिना बाल सूर्य उगए लगैए तहिना ललितक मनमे उठल। दुनियाँ तँ दुनियाँ छी, ऐठाम सभ वस्तुक भरमार अछिए मुदा तइमे सँ अहाँ की हम आकि कियो अप्पन जीवन तँ अपने ने ताकिकऽ निकालब। एकाएक ललितक धियानमे आएल जे अखन तिला संक्रान्तिक पाबैन मनबए गाम जा रहल छी। जखन जइ निमित्ते केतौ जा रहल छी तँ जाइसँ पहिने ओकर स्मरण करब जरूरी अछि। ललितक मनमे उठल, अपना सभक वसन्तक सूर्यक उदयकालक सीमा परक पाबैन ने मकर संक्रान्ति छी। अखन तक शीत-पालाक पाला पड़ि दाबल-कुचलल जे सूर्य छला, आब हुनकर दिन घुमतैन। विचारमे ललित तेना डुमि गेल जे छात्रावाससँ बस स्टैण्डक रास्ता केना कटि गेलै से नहि बुझि सकल।

बस स्टेण्ड अबिते ललितक मनमे स्टैण्ड आएल। अप्पन गामक बस पकड़ैक विचारक जगह एकटा नव विचार मनमे आबि गेल आ रास्ताक जे विचार पावनिक छल ओ बिसैर गेल। तइ बीच जोरसँ हल्ला भेलइ। हल्ला भेलै जे एक आदमी बसक चक्का तर दबि मरि गेल। मरब सुनि ललितक मनमे उद्वेग उठल जे जखन ऐठाम छी, लगमे मरण भेल अछि, तखन ओइ स्थानपर नइ जाएब मानवीय मूल्य नइ भेल। जेबाक चाही, अप्पन बसक टिकट कटाएब छोड़ि ललित ओइ जगहपर विदा भेल जइ जगहपर मृत्यु भेल। रस्ते-रस्ते सुनए लगल- 'बसबला जानिकऽ चप्पा देलक अछि, दियादी झगड़ा दुनू भाँइमे छेलइ।'

कियो बाजैत, 'जानिकऽ सरकारी मुआवजा दुआरे चक्का तरमे चलि गेल।'

कियो बाजैत, 'बीच सड़कपर चलने एना भेल।'

सभकेँ अप्पन-अप्पन जहिना विचारक कतार अछि, माने चलैक रास्ता, तहिना ललितकेँ सेहो अछिए। रास्ताक विचार सुनि ललितक मन तेतेक घोर-मट्ठा भऽ गेल जइसँ ईहो बिसैर गेल जे अखन केतए जा रहल छी। एकाएक ललितकेँ मोन पड़ल जे गाम जाएब अछि, काल्हि तिला संक्रान्ति पाबैन छी। गाम दिसक बस अड्डामे ललित पहुँचल। आवागमनक सुविधा भेने जीवनमे एते तँ भेबे कएल अछि जे रस्ता थोड़ेक हल्लुक भेल अछि, माने केतौ जाएब-आएब आसान भेल अछि। बस लग पहुँचते ललितक मनमे उठल, मकर संक्रान्तिक सूर्यक उदयक पहिल दिनसँ, जेना-जेना तिले-तिल सूर्य बढ़ता तहिना तिले-तिल जाड़ो-पाला घटने सूर्यक शक्तिमे सेहो तिले-तिल बढ़ोत्तरी हेबे करत।

जखन कखनो केकरो किछु नव चीज भेटैए, से भावगत आ वस्तुगत दुनू रूपमे, तखन कनियोँ-ने-कनियोँ मनमे खुशी प्रवाहित होइते अछि। वएह खुशी पेबैले ने दुनियाँ बेहाल अछि। ई बात अलग जे स्थायी खुशी पएब मूल्यवान भेल। अस्थायी तँ अस्थाइये भेल। मुदा तैबीच पागल जकाँ पगलखना तँ अपने ने बना रहल अछि। जइसँ समाजक हाल एहेन बेहाल भइये गेल अछि जे किसानी जीवन सन पवित्र जीवन जे जीवनक मुख्य आधार छी, वएह मटियामेट भऽ रहल अछि। ऐठाम ई नइ बुझब जे स्वतंत्र जिनगी जीबैले कृषक जीवन सभसँ उत्तम अछि। भाय, सभ जनिते छी जे चिन्नी-मिसरी जे जीवन पैदा करैए, माने जे कीड़ा चिन्नी-मिसरीमे फड़ैए, जँ ओकरा मिरचाइक बीच लऽ जाएब तँ ओ मरि जाएत, माने

मिरचाइक टाँस ओकरा नइ बरदास हेतै आ ओ मरि जाएत, जे सोभाविको अछि। मुदा तँए कि मिरचाइसँ उपजल जीव, चिन्नी-मिसरीक बीच जीब पौत, सेहो तँ नहियेँ जीब पौत। ओहो मरबे करत। आब अहीं कहू जे केकरा सोभाविक कहबै आ केकरा असोभाविक। जेठमे बरखा भेने जहिना किसानक मन जगै छैन तहिना जीव-जन्तु, गाछ-बिरीछ आ माइटिक तर पड़ल अन्न-कण, माने अन्न जे बीआ बनि गेल, सभकिछु जागए लगैए, अंकुरित हुअ लगैए तहिना ललितक मनमे विचारक बरखा पेने नव-नव अनेको विचार जागए लगल। जइ तिला संक्रान्ति पावनिकेँ मनबए गाम जा रहल छी, तैठामक लोककेँ जँ किछु-ने-किछु सनेस नइ देबैन तँ ओ चीन्हता किए। केकरो कियो ओहिना चीन्हैए आकि चीन्है-जोकर जखन काज करैए तखन चीन्हैए। परिवेश एहेन भइये गेल अछि जे जहिना बोन-झाड़क बाघ-सिंह उपैट गेल, गाम-घरक हाथी उपैट गेल, तहिना एलार्म घड़ी कहियौ कि देवाल घड़ी, कि पौकेट वाच आकि हाथक घड़ी जे छल, सेहो उपैटिये गेल आ जे कनी-मनी बँचल अछि, लगैए ओहो किछु दिनमे उपैटिये जाएत। एकाएक ललितक मनक संग विचार सेहो घुमल। भूगोलक विद्यार्थी ललित तँए भूगोलक प्रोफेसर कुशल किशोर बाबूसँ विशेष सिनेह। भाय, सिनेहे ने सनेस बँटैए।

मोबाइलसँ समय आँकि ललित विचार केलक जे चारि घन्टाक पछाइत जे बस अछि तइ बसकेँ पकैड़ गाम चलि जाएब, बीचक जे समय अछि, तइमे कुशल किशोर बाबूसँ भेँट कऽ लेब जरूरी अछि। वएह ने मकर संक्रान्तिक सूर्यक दछिणायन-उत्तरायणिक जानकार लोक छैथ। तिला संक्रान्ति तँ सूर्यक तिले-तिल उत्तर दिशामे घुसकबकेँ आँकि बनौल गेल अछि। ललित घुमिकऽ वापस विदा भेल।

कुशल किशोर बाबू प्रमाणित शिक्षक भूगोलक छथिए, तँए जहिना अपनापर हुनका विश्वास छैन तहिना अप्पन अध्ययनक विषयपर, माने भूगोल विषयपर सेहो विश्वास छैन्हे। कुशल किशोर बाबूकेँ दुनियाँक भौगोलिक बनावटपर विशेष अध्ययन छैन। ओना, दुनियाँक बहुतो देशक भ्रमण सेहो केने छैथ, मुदा जीह गड़ल छैन अप्पन गाम-घर-देश-कोसमे।

ओना, कुशल किशोर बाबू कोठरीमे बैसल मने-मन विचारि रहल छला जे जइ पदचापकेँ अधार मानि लोकक गति-विधि अछि तइसँ नव पदचाप

स्थापित करी। ओना, परिवारसँ लऽ कऽ समाजक बीच खिंचा-तानी अछिए, तइ सभपर समतुल्य भऽ अपना नजैरिये कुशल किशोर बाबू देखि विचारि रहल छला, जइसँ केतौ-केतौ मुँहमिलानी सेहो भइये जाइ छैन। मुदा मतभेद नइ होइ छैन, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो होइते छैन। पैछला सूर्यग्रहणक परात सेहो अहिना भेलैन। भेलैन ई जे गहणक पछाइत किछु लोक गहण दान लिअ आएल। कुशल किशोर बाबू पूर्ण विश्वस्त छैथ जे केना सूर्यक गति अछि आ केना पृथ्वीक गति अछि, तैबीच केना गहणक स्थिति बनैए, तइमे केकरो हाथ की भेल आ ओकर गहण दान की भेल। जइक चलैत गामक लोकसँ तेते कहा-कहा भेलैन जे समाजक नजैरमे ओ बताह साबित भऽ गेला। गामो-समाज तँ गाम समाज छीहे, तेते लोक पीहकारी भरलक जे कुशल किशोर बाबू बेदम हुअ लगला, जइसँ बतहपनी आरो बढ़ि गेलैन। छअ मासक पछाइत राँचीक काँके अस्पतालमे भरती करौल गेला।

तीन मासक अस्पतालक जीवनमे कुशल किशोर बाबू, एकान्त वासक साधना कऽ लेलैन। जइसँ एकाग्रताक ओहन स्थानपर पहुँच गेल छैथ जे अप्पन जीवनकेँ अपना हाथ-मुट्ठीमे रखि, यापन कऽ रहला अछि।

ललित एक तँ विचारक झमारसँ झमाएल, दोसर पएरे बस स्टैण्डसँ किशोर बाबूक घरक बीचक रास्ता कटने, तँए चेहराक रंगक लालीमे नीलपन आबिये गेल छल।

संयोग भेल, कुशल किशोर बाबू कोठरीसँ निकैल ओसारपर एला कि ललितपर नजैर पड़लैन। ललितकेँ देखलैन जे कन्हामे बैग लटकौने केतौ जा रहल अछि, तैबीच ऐठाम अबैक की खगता भेल। एकाएक मनमे उठलैन जे खगलक खगताकेँ पुराएब सभसँ पैघ उपकार छी। ओसारपर सँ निच्चाँ उतैर कुशल किशोर बाबू आगू बढ़ला कि ताबे ललितो आगू बढ़ैत लगमे पहुँच पहुँचलैन। लग्गा भरि फरिक्केसँ ललित बाजल-

"गाम जाइ छेलौं, रस्तामे एकटा विचार मनमे उठि गेल, तँए पहिने अपने ऐठाम पहुँचलौं अछि।"

प्रणाम करब ललित बिसैर गेल, मुदा तइसँ कुशल किशोर बाबूक मनमे मिसियो भरि कुवाथ नहि भेलैन। कुवाथो किए होइतैन, मन मानि गेल छैन जे पदचापक मोल अछि। कुशल किशोर बाबू बजला- "पहिने कन्हामे लटकौल

बैगकेँ उतारि लएह।”

टेबुलपर बैग राखि ललित नमहर साँस छोड़लक। रस्ताक थाकैनसँ साँस नमहर भेल रहै आकि विचारक विकार पेटसँ ऊपर भेलै, से तँ ललित अपने जानत। मुदा कुशल किशोर बाबूक अप्पन जीवन छैन तँए अप्पन सोच-विचारक संग अप्पन चलब सेहो छैन्हे, जइ अनुकूल बाजल छला। ओ नीक जकाँ जानि रहला अछि जे जहिना कबीर कहने छैथ, ‘दो पाटन के बीच में बाँकी बचा ने कोइ’ तहिना ने वेदो एकठाम कहैए जे ‘ब्रह्म सत्यम, जगत मिथ्या’ आ दोसर ठाम- ‘सर्वं खल्विदं ब्रह्म’। यएह छी दुनियाँक जड़िक फाट। ऐ फाटकेँ पाटब आसान थोड़े अछि।

ओना, ललित तेते बेसुधि भऽ गेल छल जे कन्हामे लटकल बैगसँ धियाने हटि गेल छेलै, मुदा कुशल किशोर बाबूक आवाज सुनिते बैगकेँ टेबुलपर रखलक। बैग रखिते ललितक शरीरक शक्तिमे बढ़ोत्तरी भेलै जइसँ साँसक गतिमे सेहो शान्ति एलइ। ललितक साँसक गतिकेँ शान्त होइत देखि कुशल किशोर बाबू बजला-

“कथीक एते परेशानीमे छह, ललित?”

ललित बाजल-

“की कहूँ गुरुदेव! जखनसँ गाम जाइले छात्रावास सँ डेग उठेलौं तखनसँ अशुभे-अशुभ भऽ रहल अछि, जइसँ मन औना रहल अछि।”

बेढंग कहियौ कि बेढब, ललितक बात सुनि कुशल किशोर बाबू जहिना डायविटीजबलाकेँ साधारण मीठ, माने नमक विहीन सभकिछु मीठ होइए, तँए कहब जे करैलो मीठे होइए, से नहि, तहिना अप्पन विचारमे मधुरपन आनि बाजल-

“ललित, दुनियाँक विचार छोड़ह। केते जड़ि तकबह, पहिने अण्डा भेल कि बच्चा, आकि पहने झूठ जनमल कि सत्य, तइ फेड़मे अनेरे नइ पड़ह। देखिते छहक जे प्रकृतिक केहेन खेल अछि। केकरो ढाकी-ढाकी धिया-पुता दइए जइसँ ऑपरेशन करबए पड़ै छै आ केकरो सात गहवर देखौला पछातियो किछु ने होइए।”

कुशल किशोर बाबूक विचार ललितक मनकेँ जेना बेधलक। बेधाइत मने

ललित बाजल-

"गुरुदेव, सालसँ ऊपरे गाम गेना भऽ गेल, काल्हि तिलासकराँइत पाबैन छी, एकाएक मनमे विचार उठल जे गाम जाएब।"

चपाड़ा भरैत बिच्चेमे कुशल किशोर बाबू बजला-

"एकरा शुभ विचारे नहि, शुभ काजो कहले जा सकैए।"

अप्पन बड़प्पन आकि तात्त्विक सच्चाइ ललितक मनमे जागल से तँ ललिते बुझत, मुदा सन्तुष्ट होइत बाजल- "गुरुदेव, बस स्टैण्डमे जखन रही तखन मनमे उठल जे पावनिक अवसरपर गाम जा रहल छी, तँए किछु सनेस गौंआँ-समाजकेँ दिऐन।"

कुशल किशोर बाबू मने-मन ललितकेँ अजमा रहल छला जे ललितक विचार केम्हर बहैक रहल अछि। ललितकेँ अँकैत कुशल किशोर बाबू बजला-

"गाम-घरक बात नीक जकाँ तूँ नइ बुझै छहक तँए मनमे परेशानी बुझि पड़ै छह। अनेरे बुढ़िया-फुसिमे परेशान भऽ रहल छह।"

'बुढ़िया फुसि'क माने भेल, अधिक दिनसँ चलि अबैत फूसि, ललित बाजल- "से की गुरुदेव?"

ललितकेँ जिज्ञासु देखि कुशल किशोर बाबू बजला- "ललित, अखन बेसी गप-सप्प करैक समय ने तोरे छह आ ने अपने अछि, तँए अखन मनकेँ शान्त करैत पहिने गाम जा आ पाबैन केलाक बाद जखन एबह तखन ऐगला आरो विचार करब।"

मनमे सवुर बान्हैत ललित बाजल-

"तखन समाजकेँ सनेस की देबैन?"

अप्पन मनक विचार ललित ओहिना बाजल जहिना समाजक बीच बसनिहार सभकेँ होइ छैन जे किछु सनेस समाजकेँ दिऐन। मुदा तइले दिनानुदिनक सम्बन्धक खगता होइए। अथाह सागरक ऊपरका पानि जकाँ कुशल किशोर बाबू बजला- "ललित, तोरा सनेस ले समाज भूखल छैथ, एते दिन माए-दादी तिल आ चाउरकेँ पानिमे भीजा गुड़क संग मिला बाल-बोधकेँ पावनिक सनेस दइ छेली, आब तँ लोक तिलकुटे दोकानसँ कीनि अनैए।"

ललितक मन अपनो मानि रहल छेलै जे ठीके गुरुदेव कहि रहला अछि।

मुड़ी डोलबैत ललित बाजल- “हँ से तँ देखै छी।”

ललितकेँ निच्चाँ मुहेँ झुकैत देखि कुशल किशोर बाबू बजला-

“जहिना छह तहिना गाम जा पाबैन मना आबह, पछाइत निचेनसँ किछु विचार कहबह।”

अखन तकक जे विचार ललितक मनकेँ घेरने छल ओ तँ कमि गेल मुदा कुशल किशोर बाबूक मुहेँ ‘किछु विचार कहबह’ सुनिते नव विचार मनमे उपैक गेल, जइसँ मुहसँ अनायास खसल-

“से की?”

एक दिस समयकेँ खटियाइत देखि तँ दोसर दिस विचारक विकराल रूप देखि, कुशल किशोर बाबू सामंजस करैत बजला-

“ललित, अपना ऐठामक पाबैनमे भौगोलिक विचार सन्निहित अछि, मुदा से पछाइत कहबह। अखन पहिने असथिरसँ गाम जाह आ गामसँ भऽ आबह।”

❑

शब्द-संख्या: 1800

रचना-तिथि: 09 जनवरी 2024

बदलैत जीवन

✺

चारि बजे भोर। रघुवीर बाबाक नीन टुटि गेल छेलैन मुदा ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल बीतल दिनक भोर-सँ-साँझ धरिक, माने काल्हुक भरि दिनक काजक हिसाब जोड़ए लगला जे कोन काज पूर्ण भेल आ कोन काज छुटि गेल वा अधखड़ुआ रहि गेल। एक बेर नजैर दौड़ा भोर-सँ-साँझ धरिक काज देखलैन। नजैरपर कोनो काज एहेन नहि देखि पड़लैन जे या तँ अधखड़ुआ रहि गेल वा छुटि गेल। मनमे शान्ति एलैन। मन शान्त होइते देवालमे टाँगल घड़ीपर नजैर देलैन तँ चारि बजैत देखलैन। चारि बजैत देखि मनमे उठलैन जे ओछाइन छोड़ैक समय भऽ गेल। उठैक उपक्रम कइये रहल छला कि बारह बर्खक पोती (सुनयना) आबि प्रणाम करैत कहलकैन-

“बाबा, आइ अहाँक एकासीम वर्षगाँठक बधाइ दइ छी.!”

पोतीक विचार सुनि रघुवीर बाबा उठिकऽ बैस गेला आ मोन पाड़ए लगला जे आइ हमर एकासीम वर्षगाँठ छी.!

जे कियो अप्पन जीवनक वर्ष-तारीख डायरीमे देखैत रहै छैथ हुनका ने मोन रहै छैन जे आइ एते दिनक भऽ गेलौं, मुदा रघुवीर बाबा तँ से नहि छैथ। ई तँ ने डायरी रखने छैथ आ ने अप्पन जन्मक कोनो दिने-ठेकान लिखिकऽ रखने छैथ जेकरा देखि बुझि सकितैथ जे आइ हम्मर एकासीम वर्षगाँठ छी। शुभकामना दऽ सुनयना चलि गेल। रघुवीर बाबा मने-मन हिसाब जोड़ए लगला जे अप्पन जन्म गुलाम देशमे भेल छल, माने जखन अपना देशमे अंगरेजी शासन छल। जइ दिन देश स्वतंत्र भेल, माने 15 अगस्त 1947 इस्वी, तइ दिन अपने दू वर्ष आठ महीनाक रही। जेकरा आइ उनासी बरख भऽ गेल। माने देश स्वतंत्र भेलाक। तइ हिसाबसँ ठीके एकासीम बरख भऽ रहल अछि। एकासीम बर्खपर नजैर पहुँचते

रघुवीर बाबाक मनमे उठलैन जे बुढ़ापा आबि गेल।

अखन तकक जीवनमे, रघुवीर बाबाक जीवनमे, केतेको मोड़ एलैन, केतेको बेर बदलाव एलैन, तइसँ पहिलुका जीवन बदलैत गेलैन आ नव जीवन अबैत गेलैन। जइसँ कहियो मनमे ई नहि उठलैन जे जीवन निरस भऽ रहल अछि। जीवनमे निरसता तखन अबैए जखन एकतरहक जीवन चलैत रहल। शुरूमे जखन रघुवीर बाबा चौदह-पनरह बर्खक रहैथ, पिता जीवित रहैन, तइ समयमे रघुवीर बाबा पिताक देख-रेखमे घर गिरहस्तीमे प्रवेश केलाह। अखन तक, माने ओइ समय तक जे अपना ऐठामक गिरहस्ती-जीवन छल, ओ ओहन छल जे जहिना त्रेता युगमे राजा जनक अढ़ाइ बीतक लोहाक फाड़ लगल हर जोतलैन तेहने हर अखनो चलिये रहल छल। पाँच बीघा जमीन अप्पन बपौती छेलैन, माने पुस्तैनी छेलैन। जेकर उपजसँ रघुवीर बाबाक परिवार चलै छेलैन। आजुक समयमे मेडिकल साइंस बहुत आगू बढ़ि गेल अछि जइसँ मृत्यु दर, माने बच्चासँ सियान धरिक बहुत कमि गेल अछि, मुदा तइ समयमे, माने जइ समयमे देश स्वतंत्र भेल, 1960 इस्वीसँ पूर्व तक, मृत्यु दर बेसी छल जइसँ परिवार समटल रहै छल। मने-मन रघुवीर बाबा हिसाब जोड़िये रहल छला कि कौलेजमे पढ़ैत, माने बी.ए.मे पढ़ैत सुमन फूलक माला, जे एकासी टा हजारी गेन्दा फूलक बनल छल, दुनू हाथे पकड़ने आबि रघुवीर बाबाकेँ गरदैनमे पहिरा पएर छुबि प्रणाम करैत बाजल- "एकासीम जन्मदिनक बधाइ अछि, बाबा.!"

सुमनक मुहसँ 'बधाइ' सुनि रघुवीर बाबा बजला किछु नहि मुदा मने-मन मुस्कुरेला जरूर। सुमन चलि गेल। असगरे बैसल रघुवीर बाबा विचारए लगला जे आजुक परिवेशमे एकासी बरख बीतब पूर्ण जीवन भेल। ओना, अपना ऐठामक ऋषि-महर्षि साए बर्खक जीवनकेँ पूर्ण जीवन मानै छैथ, मुदा बेवहारिक रूपमे अधिकांश लोक एहने भेला अछि जे या तँ अस्सी बर्खसँ पहिनहि मरि गेला वा अस्सी बरख पुराकऽ मरला। बिरले कियो-कियो अस्सी बरख टपै छैथ। ओना, अपना ऐठामक जीवनो 'जीवन' थोड़े रहि गेल अछि। ने खेबा-पीबाक समतुल्य भोजन भेटै छैन आ ने क्रिया-कलापक समुचित बेवस्था अछि आ ने अस्वस्थ भेलापर समुचित चिकित्सा बेवस्था अछि। मने-मन रघुवीर बाबा विचारिये रहल छला कि अपने पहुँचलौं। अपने ऐ दुआरे पहुँचलौं जे पत्नी भोरे कहि देलैन जे रघुवीर बाबाकेँ आइ एकासीम बरख भऽ गेलैन तँए जा कऽ आसीरवाद लऽ आउ।

बच्चेसँ रघुवीर बाबाक संग अप्पन सम्बन्ध रहल अछि। ओना, ओ ने दियादी सम्बन्धमे छैथ आ ने एक जाइतिक छैथ, मुदा एकठाम घर रहने पड़ोसीक सम्बन्ध हुनका परिवारसँ अपना परिवारक बीच सभदिन रहल। जहिना पत्नी कहलैन तहिना अपने रघुवीर बाबाक ऐठाम पहुँच पएर छुबि प्रणाम करैत कहलयैन- “बाबा, अपने शतायु होइ।”

हम्मर बात सुनि रघुवीर बाबा बजला किछु नहि, मने-मन मुस्कुरेला। ओना, हुनका मनमे नाचि उठलैन जे केकरो आसीरवाद वा शुभकामना देलासँ जँ लोकक आयु बढ़ि जाइत तखन लोक जवानेमे मरैत किए। मुदा से रघुवीर बाबा बजला नहि। तैबीच सुनयना दू कप चाह नेने पहुँच गेल। चाह देखि बजलौं-

“बौआ, ओछाइन छोड़ि एम्हरे चलि एलौं तँए लोटामे पानि नेने आबह। कने कुर्ड़ी कऽ लेब।”

जहिना सुनयनाकेँ कहलिऐ तहिना ओ लोटामे पानि आनि आगूमे रखि देलक। कुर्ड़ी केलौं आ आधा लोटा पानि पीबियो लेलौं। पानि पीला-पछाइत कप उठा चाह पीबए लगलौं। तीन-चारि घोंट चाह पीलाक बाद बजलौं-

“बाबा, असीरवाद दिअ जे अहीं जकाँ हमहूँ जीबी।”

हम्मर बात सुनि रघुवीर बाबा हँसैत बजला-

“बौआ सुशील, केकरो आसीरवाद नेने, माने मुहसँ कहने, कियो ने जीबैए आ ने मरैए। जीअब आ मरब सभक अपना कर्मपर निर्भर छइ। तखन लोकमे एहेन धारणा बनले अछि जे केकरो मृत्यु भेलापर आन-आन बजिते अछि जे फल्लाँक श्रापसँ फल्लाँ मरि गेल वा फल्लाँक आसीरवादसँ फल्लाँ एते दिन जीयल।”

अपनो मनमे एहेन धारणा बनले अछि जे पैघक आसीरवादसँ आयु बढ़बो करैए आ दुर्वचन कहलासँ आयु नाश सेहो होइते अछि। चाह पीलाक पछाइत रघुवीर बाबा अप्पन जीवनक इतिहास शुरू करैत बजला-

“बौआ सुशील! अखन तक, माने काल्हि तक, अपने अप्पन आयु बिसरल छेलौं, किए तँ कहियो ऐपर धियाने ने गेल छल जे अप्पन आयु केते भेल अछि। मुदा आइ मोन पड़ि गेल जे अप्पन आयु एकासी बर्खक भऽ गेल। जखन एकासी बर्खक भऽ गेलौं तखन पाकल आम जकाँ पकि सेहो गेबे केलौं। जखन पकि गेलौं

तखन केते काल गाछमे लागल छी आ कखन खसि पड़ब तेकर कोनो ठेकान नहि अछि, तँए अप्पन जीवनक जे महत्वपूर्ण काज रहल अछि से जँ ऐगला पीढ़ीकेँ नहि जना देब, तखन लोककेँ मोन केना रहि सकब।"

बजलौं-

"हँ, से तँ नहियेँ रहि सकब।"

रघुवीर बाबा बजला-

"सुशील, अखन तक जीवनमे चारि बेर बदलाव आएल अछि। प्रत्येक बदलावक पछाइत किछु-ने-किछु सुधार जीवनमे होइते गेल। मनमे छल जे पाँचम बेर फेर बदलब, मुदा आइ जखनसँ सुनलौं जे एकासी बर्खक भऽ गेलौं तखनसँ मन ठमैक गेल अछि।"

बजलौं-

"मन ठमकल किए, बाबा?"

रघुवीर बाबा बजला-

"ठमकल ऐ दुआरे जे जँ बदलए लगब आ बिच्चेमे मरि जाइ, तखन तँ ने नव जीवन, माने पाँचम बदलावक पछातिक जीवन, पाबि सकब आ ने पहिलुके जीवन रहि सकत।"

रघुवीर बाबाक मुहसँ जीवनक बदलाव सुनि मनमे अनायास उठि गेल जे केना जीवन बदलैए? बजलौं-

"बाबा, केना-केना चारि बेर जीवन बदलल?"

हम्मर प्रश्न सुनि रघुवीर बाबा मुस्कुराइत बजला-

"बौआ सुशील! शुरूमे, माने जखन परिवारक भार कन्हापर आएल, तइ दिनमे अपने चौबीस-पच्चीस बर्खक रही। माइयो आ पितोजी जीवित रहैथ, मुदा उम्र बेसी भेने शरीरसँ कमजोर भइये गेल छला। पिताजी कहलैन जे बौआ आब हमरामे ओ शक्ति रहल नइ जे पहिलुका जकाँ काज करब। तँए, आब अप्पन परिवारक भार सम्हारह।"

बजलौं- "बाबा, गाम समाजमे देखै छी जे मरै बेर तक लोक अप्पन गारजनी छोड़ए नहि चाहै छैथ आ अहाँ.?"

रघुवीर बाबा बजला-

“बौआ, समाजमे दू तरहक लोक छैथ। एक तरहक लोक ओहन छैथ जे दुनियाँकेँ भोगए चाहै छैथ आ दोसर तरहक लोक ओहन छैथ जे दुनियाँकेँ माया बुझि ओइसँ अलग अपनाकेँ स्थापित करैत द्रष्टा बनि रहै छैथ। पिताजी आत्मज्ञानी छेला, तँए हुनका दुनियासँ ओहन राग नइ छेलैन जेना दोसरकेँ रहै छैन।”

रघुवीर बाबाक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, तँए बजलौं-

“बाबा, कनी फरिछा कऽ कहियौ।”

रघुवीर बाबा बजला- “बौआ सुशील, जखन मनुक्ख बनि धरतीपर जन्म नेने छी तखन तँ अही धरतीपर जीवन बिताएबो अछिए। जखन जीवन अछि तखन जीबैले भोजन, वस्त्र, आवास इत्यादि जे जीवनक मूल आवश्यकता अछि, तेकर जरूरत पड़बे करत।”

बिच्चेमे बजलौं- “हँ, से तँ पड़बे करत.!”

रघुवीर बाबा बजला- “जीवनक जे मूल आवश्यकता अछि, ओकरा उपयोग करब अछि, उपभोग नहि।”

बजलौं- “की उपयोग आ की उपभोग, बाबा?”

रघुवीर बाबा बजला-

“उपयोग भेल जे जीवन केना कम-सँ-कम वस्तुसँ चलि सकत, माने जेतेसँ जीवनक रक्षा हएत बस तेतबे जरूरत बुझि ओतबेक प्रबन्ध करब अछि। मुदा अधिकांश लोक, माने समाजक बेसी लोक ओहन सोभावक छैथ जे अधिक-सँ-अधिक वस्तुकेँ जमा करैक पाछू लगि जाइ छैथ। हुनका मनमे ई रहै छैन जे ऐगला पीढ़ी ओकर उपयोग करत। मुदा ओइसँ हुनकर अप्पन जीवनक दिशा विकृत भऽ जाइ छैन आ मनुक्खक जे वास्तविक जीवन अछि तइसँ ओ वंचित रहि जाइ छैथ। बौआ, मनुक्ख बनि जखन धरतीपर जन्म नेने छी तखन अपनो तँ मानवीय दायित्व अछिए किने।”

बजलौं-

“हँ, से तँ अछिए।”

रघुवीर बाबा बजला-

“सुशील! पहिल बेर, माने शुरूमे जखन परिवारक भार उठेलौं, तखन अपनो आ अप्पन समाजो-देशो आर्थिक दृष्टिसँ बहुत कमजोर छल। ओना, अपना पाँच बीघा पैतृक सम्पैत छल मुदा ने खेती करैक समुचित बेवस्थे छल आ ने ओहन सोचे छल जे खेतीमे अधिक-सँ-अधिक पैदावार केना हएत। दोसर, खेतीक लेल समुचित पाइनिक बेवस्था चाही, से नइ छल। सोल्होअना खेती बर्खापर आधारित छल। बर्खाक दुनू अवघात छल। जइ साल बेसी बरखा भेल तइ साल दाही होइ छल, माने फसिल दहा जाइत रहए। जइ साल बरखा कम होइ छल वा नइ होइ छल, तइ साल रौदी भऽ जाइ छल। जइसँ उपज प्रभावित होइ छल। एहेन स्थिति देशमे स्वतंत्रा पूर्वसँ लऽ कऽ करीब 1971 इस्वी तक रहल। जहिया बंगला देश बनल, माने पाकिस्तान दू देशमे विभाजित भेल, तहिया तक रहल। किसानक लेल सरकारी सुविधा भेटल। पाइनिक बेवस्था ले बोरिंगक सुविधा भेल। एक-तिहाइ छूटपर, माने मदैतपर किसानकेँ बैकसँ बोरिंग आ दमकल भेटल। एक ठाम जँ सभ जमीन रहैत तखन तँ एकोटा बोरिंगसँ काज चलि जाइत। मुदा से तँ छल नहि। अपना ऐठामक किसानक जमीन अनेक टुकड़ीमे, अनेक ठाम छल। तँए, दूटा बोरिंग बैंकसँ लोन लऽ कऽ अपनो गड़ेलौं। पाइनिक सुविधा भेने खेती बिसबासू भेल आ उपजमे बढ़ोतरी सेहो भेल। ई भेलह पहिल बदलाव।

दोसर बदलाव, 1974 इस्वीक पछाइत भेल। ओना, अपना मिथिलांचलमे कोसी नदीपर फाटकनुमा पुल बना नहरक योजना सेहो बनल। जइसँ किछु क्षेत्रमे सिंचाइक सुविधा तँ भेटल मुदा एहेन सुविधा किछुए क्षेत्रमे भेटल। बादमे, पाँच बर्खक पछाइत योजनामे ढिल्ली-सिल्ली भेल आ नहर खुनाइक योजना मोटा-मोटी रूकिये गेल जइसँ किसानकेँ लाभ हएब बन्न भऽ गेल। अपने बोरिंगक सहारासँ खेती करब शुरू कऽ देने रही जइसँ जेतेक उपज आधुनिक ढंगसँ, माने वैज्ञानिक ढंगसँ केलाक बाद होइत, से तँ नहि होइ छल मुदा पहिलुका हिसाबसँ उपज बढ़बे कएल।

तेसर बदलाव आएल जखन नव-नव उन्नतिशील बीजो आ खेतीक नव तरीको अपनाए कऽ करए लगलौं। जइसँ उपजोमे बढ़ोत्तरी भेल आ बारहो मास खेती सेहो हुअ लगल। आर्थिक सुधार भेने परिवारोक स्थिति सुधरल आ अपनो जिज्ञासा जगल। जिज्ञासा जगिते गाए पोसब सेहो शुरू केलौं। घासक खेती, गाएक चारा लेल, सेहो करए लगलौं आ नीक नस्लक गाएक बेवस्था सेहो केलौं।

चारिम बदलाव तखन आएल जखन आधा-छिधा मशीनक उपयोग करए लगलौं। जखन मशीन नहि छल तखन सभ काज हाथसँ करए पड़ैत रहए, मुदा जखन पाइनिक लेल बोरिंग-दमकल, खेत जोतैले ट्रेक्टर, तैयार करैले थ्रेसर भऽ गेल, तखन आरो सुधार जीवनमे भेल।

पाँचम बदलावक इच्छा मनमे ई छल जे सोल्होअना काज, खेतीक काज, मशीनेसँ करब। किएक तँ सभ तरहक, माने सभ काज करैले मशीनक उपयोग करब। से आब नहि भेल। ओहन अवस्था, माने उम्रमे पहुँच गेलौं जे आब जीवनक कोनो ठेकान नइ अछि।”

बजलौं-

“आब अखन जाइ छी, साँझमे फेर आएब।”

❑

शब्द-संख्या: 1765

रचना-तिथि: 25 सितम्बर 2025

खसैत गाछ

✳

जिनगीक अन्तिम सीढ़ीपर पहुँच पुरन ठाकुर ओइ गाछ सदृस भऽ गेल छैथ जे ने अकास दिस मुँह उठौने ठाढ़ अछि आ ने धरतीपर बिछाइन भेल पड़ल अछि।

सौन मास, बादलसँ छाड़ल मेघ, सुर्जक केतौ पता नहि, उमड़ैत-घुमड़ैत ओहन हूंकार भरैत जे बरिस कऽ धरतीकेँ जलमग्न कऽ देत, रहि-रहि बिजलोका सेहो दिशा बदैल-बदैल कखनो अपन पीरौंछ रंगें तँ कखनो हल्लुक लाली नेने तँ कखनो आल लाल रंगें तड़तड़ेबो करैत आ गोटे-गोटे बेर ठनैक-ठनैक ठनका बनि खसबो करैत। ओना, अदरे नक्षत्रसँ बर्खा अपन रूप पकैड़ नेने छल जइसँ पोखैर-झॉंखैरक संग धारो-धुर फुला अपन तेज गति पकैड़ लेलक। चर-चाँचरक संग ऊँचरस-नीचरस खेतो जल-प्लावित भेल। अस्सी-बिरासी बर्खक पुरन ठाकुर आबि दरबज्जाक मुहथैरपर ठाढ़ भऽ थर-थर कँपैत ने किछु बाजैथ आ ने कोनो चाले-चुल...।

दरबज्जाक दछिनबरिया खिड़की टुटि गेल अछि, जइ होइत हवो आ झटको घरमे अबैए, ओकरे बन्न करैले पलास्टिकक बोराकेँ बाँसक फट्ठीमे काँटीसँ ठोकि-ठोकि ठीक करैत रही।

कखन पुरन ठाकुर दरबज्जापर आबि गेल रहैथ से तँ ठीक-ठीक नै बुझि पेलौं मुदा पनरह-बीस मिनट पहिने दरबज्जाक खिड़कीक काजमे लगल रही, तइसँ पहिने नइ आएल रहैथ। तइसँ अनुमान केलौं जे दस-पनरह मिनटक भीतरे आएल छैथ।

थरथर कँपैत स्वरमे पुरन ठाकुर बजला-

"बौआ!"

ओना, एकबेरक आवाजकेँ जहिना लोक आवाज नै मानैए तहिना हमरो भेल जे भरिसक अन्तुका आवाज छी। तँए कानक बातपर मन नइ उठल। जहिना अपन-काजमे लगल रही, तहिना लगले रहलौं। दोहरा कऽ पुरन ठाकुर बजला-

"बौआ, बौआ राधेश्याम!"

नाओं सुनिते घरेसँ कहलयैन-

"के छिआ! अबै छी।"

आवाज तँ सुनि नेने छेलौं, मुदा बोलीक अकान नइ भेल छल। जँ बोलीक आकन होइत तँ आरो किछु कहितिऐन। मुदा से नइ भेल। जहिना खिड़कीक काज पसरल छल तहिना छोड़ि घरसँ निकललौं तँ पुरन काकाकेँ देखलयैन। नाट कद, गाढ कारी रंग, गोल मुँह पचकल, आँखि घँसल, धोती, गोलगला आ कान्हपर तौनी नेने ठाढ़।

देखिते पुछलयैन-

"पुरन काका, एहेन समयमे घरसँ किए निकललौं?"

देहक वस्त्र भीजल, जइसँ टप-टप पानि धरतीपर खसैत। बजला-

"बौआ, आइ हम मरि जाएब!"

ओना, मनमे भेल जे पहिने सुखल कपड़ा दिऐन मुदा पुरन कक्काक बात 'आइ हम मरि जाएब' मनकेँ ठनका देलक। ठनका ई देलक जे कोन थर्मामीटरसँ पुरन काका नापि लेलैन जे आइ मरि जेता? मरणक पीड़ा आ जन्मक पीड़ा तँ जिनगीमे लोककेँ एकेबेर होइ छै, ओ केना अनुमान कऽ लेलैन? फेर भेल जे भरिसक जाड़सँ देह ठिठुर गेल छैन तँए एहेन बात मुहसँ निकैल गेलैन। मुदा लगले भेल जे सौनक पानिमे ओहन ठिठुरन होइ कहाँ छै जेहेन माघक पानिमे होइ छइ। तही बीच पुरन कक्काक परिवार दिस नजैर उठि गेल। उठिते भेल जे भरिसक घर ने खसि पड़लैन अछि, जइसँ एहेन बात बजला।

घरपर नजैर पड़िते मोन पड़ल- पुरन काकाकेँ परिवारे कहाँ छैन, घर ते खसले छैन। हाथ पकैड़ पुरन काकाकेँ घर लऽ जा चौकीपर सँ एकटा धोती दैत कहलयैन-

"पहिने सुखल कपड़ा देहमे लगा लिअ। हमरो काज लगिचाएले अछि,

पछाइत दुनू गोरे चाहो पीब आ गपो-सप्प करब...।”

मन बहटारै दुआरे कहलयैन-

“ऐ बेर इन्द्र भगवान खुशी छैथ!”

धोती पहिरैत पुरन काका बजला-

“धु: कोन भाँजक बात बजै छह। अन्हराकेँ जेहने जगने तेहने सुतने।”

पुरन कक्काक बातक कोनो अरथे ने लगल। अपना मनमे भेल जे भरिसक देहक वस्त्र ने सुखल पहिर लेलैन मुदा मन सिमसले छैन।

पुछलयैन-

“काका, अहाँक बात नइ बुझलौं?”

पूछ होइते जेना पुरन कक्काक मनमे पुछड़ी लगि गेलैन तहिना मन कलैश उठलैन, बजला-

“बौआ! जागब आ सुतब भेल, जरूरतसँ कम-बेसी।”

पुरन कक्काक बात फेर नै बुझलौं। ऐठाम इन्द्र भगवानक गप अछि तखन बीचमे ‘जागब आ सुतब’ केतएसँ आबि गेल?

पुछलयैन-

“की जागब आ सुतल कहलिऐ, काका?”

बिहुसैत आसिन मासक सिंगहारक फूल जहिना साँझ पड़िते भकराड़ भऽ जाइए तहिना पुरन कक्काक मन फुला कऽ भकराड़ भऽ गेलैन। बजला-

“जइबेर इन्द्र भगवान बरिसला तैबेर बाढ़ि चाटि-पोछि लैत आ जइबेर सुतला तैबेर रौदी सुखा-टटा दैत तैबीच मारल जाइए खेत आ खेतक बले जीबैबला लोक। मुदा खेतपर जीनिहार लोको की भगवानकेँ गुदानै छैन, मन खुशी रहलैन तँ कोहवरक गीत सुनबै छैन आ जँ खिशियाएल रहलैन तँ मरजादियो बेर मुहेँ-काने गारिसँ एकबाहि कऽ दइ छैन। भाय! घरबैयाकेँ सुननौं ओ गारि किए लागत, हुनके बहिन-माए ने बरियातीकेँ सोझा-सोझी गरियबै छैन। सएह छैथ खेतपर जीनिहार भगवान, जे अपने शक्तिये जीबै छैथ, समुद्रक डपौरे-शंख किए ने अनघोल करौ मुदा अनठौआ बहीर जकाँ कानमे या तँ आँगुर लऽ साहोर-साहोर करत आ नइ तँ तूर-तेल लऽ असुआ कऽ सुइत रहत।”

हाँइ-हाँइ कऽ खिड़की लगा, हथौरी-काँटी, बैशला सभकेँ कातमे रखैत, बाहरब छोड़ि, जखन पुरन कक्काक आँखि-पर-आँखि देलिऐन तँ बुझि पड़ल जे चाह सुनि पुरन कक्काक मनमे तृप्ति नइ एलैन। जँ तृप्ति आबि गेल रहितैन तँ मन जरूर तिरपित जकाँ बुझाइत। मुदा से नहि, भरिसक पुरन काका अन्नक भूखल छैथ, तँए चाह सुनि तृप्ति नइ जगलैन। सोभाविको छै, अन्न आ पानि तत्काल भरि सम्हारि सकैए मुदा अन्नक सोलहन्नी भार पानि तँ नहियेँ सम्हारि सकैए। एहनो तँ भइये सकैए जे तबधल वायुकेँ आरो तबधा मनकेँ बेपीड़ित कऽ दिऐ। मुदा पुरन कक्काक मन जहिना तन-मन भग्न भेल छैन, तइसँ कनियेँ नीक ने अपनो छी। एहेन समयमे चाहोक निवेदन कम नइ भेल। जैठाम बिजलीक चुल्हि वा गैसक चुल्हि नइए, तैठाम भानसक चुल्हि माने गोरहा-चेरा जरैबलापर चाह केना बनत। चाह तँ जेहने पीबैमे रसगर लगैए तइसँ की ओ कम रसिक अछि, गाछक सुखल ठौरही, सुखाएल कड़चीक टुकड़ी आकि सुखाएल बत्तीक टुकड़ीक चुल्हि छी। एहेन समयमे चाहक चुल्हियो नरमाएले रहैए। एतबो आग्रह कम नइ भेल।

फेर भेल जे किए ने एकबेर पुरने काकाकेँ पुछि लिऐन। मुदा मनमे ईहो उठल जे बुढ़-पुरान लोक छैथ, जँ कहीं एहेन व्रती जिनगी रहल होनि जे की खाएबकेँ अधला बुझैत होथि आ कहि दैथ जे तूँ हमरा बड़ धड़खनाह बुझै छह! तखन तँ आरो पहपैट हएत। समय भिनसुरके रहै, जलखै नइ केने रही। मुदा चुल्हि पजैर गेल रहै से धुइयाँ-धुकुरसँ आगम भऽ गेल रहए। लगले मनमे बिचैड़ गेल। जखन चाहक आग्रह पुरन काकाकेँ केने छिऐन, ओना, रोटीक संग चाहक चलैन तँ नइ अछि आ ऐछो तँ गाम-घरमे अखन नइ अछि मुदा शहर-बजारमे कम पाइ कमेनिहार चाहक संग चाहकेँ तीमन बना खाइते अछि। गाममे चाह तीमनक मान्यता नइ पौलक अछि। सभ जिनगीक सभ रंग भोजन होइए, ओइ भोजनक संग ओकर जिनगी चलै छै आ जिनगीक संग रहन-सहन सेहो चलै छइ। तँए भोजन संस्कृत प्रभावित भइये जाइए जेना चाहक आगमनक संग बिस्कुटो आबि गेल...।

मोन पड़ल, घरमे बिस्कुट ऐछे कनी अहगरसँ बिस्कुटो जँ आगूमे देबैन तँ जरूर मनमे तृप्ति औतैन। जखन मनमे तृप्ति औतैन तखन ने आइए जे मरैले तैयार भेल एला हेन, से दस बर्ख आरो जीबैक इच्छा जगतैन। लगले देहक भुलकल रूप आ जाड़सँ सिरसिराइतपर नजैर पड़ल। मन ठमैक गेल।

तीन सालसँ जेतेक कपड़ा बदलने रही, ओ सभ अछिए। किए ने मोटरीए सुमझा दिऐन जे जेतेसँ देह झँपाएत तेते लऽ लिअ। सएह केलौं।

गंजी, अंगा आ चद्दैर देखि पुरन कक्काक मनमे तृप्तिक संचार भेलैन। जिनगीक मूल आवश्यकता जे अछि ओइमे वस्त्रो तँ अछिए। जँ मनसँ भोजन, रहैक घर, पहिरैक वस्त्र, बेर-बेगरतामे दवाइ-विड़ो भऽ जाए तँ के चाहत जे लगले अछियापर चलि जाइ। दुनियाँ तँ नन्दन कानन छी, जइमे के नइ बास करए चाहैए। सभ तँ चाहिते अछि।

ओना, मोटरीमे बहुत कपड़ा तँ नइ मुदा तीनटा गमछा, चारिटा लूँगी, दूटा धोती आ एकटा चद्दैर तँ छेलैहे। कपड़ा देखि पुरन काका अपन जिनगीकेँ दरजी-नप्पासँ अपन जिनगी नपला तँ बुझि पड़लैन जे आब अपन औरुदे केते दिनक बाँकी अछि, तहूमे तेहेन जिनगीमे जीब रहल छी जे होइए आइए मरि जाऊँ। मुदा जँ दसो बरिस आरो जीब तैयो वस्त्रक दुख नइ हएत। द्रोपदी जकाँ भगवान तेहेन वस्त्रक ढेरी आगूमे रखि देलैन जे जिनगीक कोन बात असमसानक अछियो धरि नइ घटत।

पुरन कक्काक मन लगले घुमि गेलैन। घुमिते उठि बैसला। बैसते मनमे एलैन राधेश्यामकेँ जे रखलाहा छल से सभटा आगूमे दऽ देलक। एकर माने ई नइ ने भेल जे मोटरीए दऽ देलक। जेतबे अखन खगता अछि तेतबे ने लेब, मुदा तइसँ ते साले दू साल ससरब...।

पछाइत फेर मनमे उपकलैन, राधेश्याम ईहो तँ नहियेँ बाजल जे ऐमे सँ एकटा निकालि लिअ आ बाँकी हमर मोटरीए मे छोड़ि दिऔ।

आगू-पाछू नजैर दौड़बैत पुरन काका गर अँटकारि कऽ बजला-

“बौआ, अपने हाथे दाए।”

‘अपने हाथे दाए’ सुनि मन तड़ैप गेल। मन तड़ैप ई गेल जे जखन वेचारेकेँ मोटरीए सुमझा देलिऐन, तखन अपने हाथे दइक माने भेल जे किछु दिऐन आ किछु रखि ली। रखैक माने भेल- झिंगुर काटत चाहे पानिक चुवाठसँ भीज कऽ सड़त आकि मूस-मुसरी खाएत तेकर कोनो ठीक थोड़े अछि, तइसँ नीक ने जे एकटा वस्त्र-विहीनकेँ वस्त्र भेटत...।

कहलयैन-

“काका, अहाँ जड़ाएल छी, जेतेसँ देह गरमाए तेते पहीरि लिअ आ जे रहि जाएत ओहो लऽ लिअ।”

हमर बात सुनि पुरन कक्काक मन ओहन इनार जकाँ भरि गेलैन जेकरा खुनैयेकाल खुननिहार कहि दैत जे ऐमे पॉच हाथ आकि सात हाथ पानि रहत। तहिना ने अपनो जिनगीक हिसाबे सभ वस्त्र भइये गेल। तइमे लूँगी तँ तेहेन अछि जे मुँह फाड़ि देबै कि एकटासँ तीनटा भऽ जाएत। ओइढ़ो लेब, बिछाइयो लेब आ पहीरो लेब।

वस्त्र विहीन खसल पुरन कक्काक मन जेना बेपीड़ितसँ पीरित दिस बढ़लैन। पिरौंछक आगमन होइते मन मुस्कियेलैन। कहि कऽ चाह आनए आँगन गेलौं। अँगना-दरबज्जाक दू आँगन अछि, तँए आँगन टपैमे कनी देरी लागल। तैबीच पुरन काका देहमे गंजी, कुरता पहीरि माथमे तौनीक मुरेठा बान्हि चद्दैर ओढ़ि लेलैन।

कागजेक टुकड़ीपर दूटा डिब्बा ट्वेन्टी-ट्वेन्टी बिस्कुट उझैल देलिऐन। बिस्कुट देखि पुरन काका बजला-

“बौआ, हमरा कोनो बेसी भूख नइ लागल अछि, तहूमे भिनसुरका उखड़ाहा छी, हम कि कोनो करखन्नाक रौतुका ड्यूटी करि कऽ आएल छी जे नीनाएल-भुखाएल रहब। मुदा हम केना...।”

पुरन कक्काक अधबोलिया बात सुनि मनमे भेल जखन पुरन कक्काक मुहसँ एहेन विचार खसल तँ मानि लइ छिऐन। मानैत कहलयैन-

“काका, बीचमे रहऽ दियौ आ दुनू दिससँ दुनू गोरे उठा-उठा खाएब।”

ओना, मनमे रहए जे अपन खाएबकेँ सरकारी करमचारी जकाँ हाजरी पुराएब आ भुखाएल पुरन काका छथिए तँए भूखक लहैरमे बेसी खेता।

चाह-बिस्कुट खेला पछाइत बुझि पड़ल पुरन काका आब पतालसँ ऊपर उठि धरतीपर आबि गेला। यएह तँ तीनू दुनियाँक खेल छी, कियो अकासमे उड़ैए तँ कियो पतालक सात सीढ़ी-निच्चॉमे दबाएल अछि। एकर माने ईहो नइ ने जे बीच बसल धरतीपर कियो ने अछि। सेहो तँ ऐछे, से कोनो आइए अछि सेहो बात नहियेँ अछि, अदौसँ रहल आ ताधैर रहत जाधैर अकास-पताल एकबट्ट भऽ धरतीपर आबि ठाढ़ नइ हएत। विचारोक दुनियाँ एहने अछि। खसल मन, टुटल

जिनगीक विचार आ ऊपर उड़ैत जिनगी जाबे एकठाम आबि एक दिस नइ चलत ताबे एकरस भऽ केना सकैए।

मुदा से नहि, चाह बिस्कुट खाइते-पीबते पुरन काका चौमासी खेत जकाँ जोतल-चौकियाएल एक रसमे बुझि पड़ला।

कहलयैन-

“काका, एना किए टाँहि देने छेलौं जे बौआ आइ हम मरि जाएब? अहीं कहू जे आइ धरि जे सुख-दुख गमेलौं ओ अपना घरमे आ मरैले चलि एलौं हमरा दरबज्जापर?”

जहिना विचार विचारकेँ छुबैत, प्रेम प्रेमकेँ छुबैत तहिना पुरन कक्काक मनकेँ छुलकैन। छुबाइते बजला-

“बौआ, तोरे सबहक–माने समाजेक–मुँह देखि अहू अवस्थामे ठाढ़ छी, नइ तँ अपन कहि के रहल। तखन तँ जइ समाजक मुँह देखि जीबै छी, सेवा करै छिऐ, वएह समाज ने मुँहक चहरो अखैन तक दैत आएल अछि।”

पुछलयैन- “से की?”

‘से की’ सुनि पुरन कक्काक मनमे मौलाएल गाछ जकाँ नव कलश जगलैन। जगिते मुँहक रंग बदललैन। रंग बदलैक कारण भेलैन जे भरिसक हमरो सन लोकक बेथा-कथा सुननिहार समाजमे कियो छैथ। मुस्की दैत बजला- “बौआ, शुरूमे जहिया ऐ गाममे आबि बसलौं, तहिया अखुनका जकाँ ने एते नमहर गाम छल आ ने एते लोके छल। पिताजीक संग दुनू भाइयो आ माइयो आबि बसल रही। अपन तँ ने खेत-पथार रहए आ ने घरे-घराड़ी, मुदा समाज मीलि रस्ते-कातमे घराड़ियो देलैन, खढ़-बाँसक घरो बना-देलैन आ रोजगारक रूपमे केश-दाढ़ी काटैक काजो देलैन।”

जिज्ञासा करैत पुछलयैन-

“तइसँ पहिने गाममे नौआ नइ छला?”

कहलैन- “नहि। पड़ोसी गामक नौआ आबि दाढ़ियो-केश आ बिआहो, मुड़नो आ सराधोक काज सम्हारै छल। मुदा संख्यामे कम रहने बेर-बेगरतामे काज खगिये जाइ छेलइ। ओना, गामो-समाजकेँ नौआक जरूरत छेलैन आ अपनो उजरल-उपटल जिनगीकेँ ठौर भेटल।”

पुछलयैन- “जेकर रोजगार लेलिऐ ओ सभ किछु कहलक नइ?”

बजला- “की कहितए। वेचारा सबहक अपने जान हल्लुक भेलै, तहूमे ओहो सभ की आन छला, बाबूक मसियौत भइये छला।”

“काजक बोइन केना भेटै छल?”

‘बोइन’ सुनि पुरन कक्काक मन बिहुसलैन। मुस्की दैत बजला-

“दू रंगक कमाइल दइ छला। जिनका केश-दाढ़ी काटै छेलिऐन ओ दू धाड़ा माने एक धाड़ा दाढ़ीक आ एक धाड़ा केशक कमाइल दइ छला आ जिनका खाली केशेटा काटै छेलिऐन ओ एक धाड़ा कमाइल दइ छला।”

पुछलयैन- “एक धाड़ा केते भेल?”

कहलैन- “बौआ, पहिने कच्ची सेर चलै छल। ओना, पक्की सेहो छल मुदा कमाइल कच्ची सेरसँ दइ छला। पक्की पान सेरक पसेड़ी छल आ कच्ची छह सेरक।”

पुछलयैन-

“तैसंग आरो किछु दइ छला?”

‘आरो किछु’ सुनि पुरन कक्काक मुहसँ हँसी निकललैन। हँसिते बजला- “समांगे जकाँ सभ बुझै छला। ओना, कमाइल दइ छला अगहनमे। मुदा मुड़न-उपनैन, बिआह-सराधमे खैयोले दइ छला आ कमाइलक अतिरिक्त लतो-कपड़ा आ सिदहो भेटै छल। जइसँ कहियो गुजर-बातमे दिक्कत नइ हुअए।”

पुछलयैन-

“दुनू भाँइक परिवार केते दिन शामिल रहल?”

कहलैन-

“जाबे बाबू-माए जीबै छला, ताबे सभ शामिले छेलौं। शामिलेमे दुनू भाँइक बिआहो-दान भेल। हम भैयारीमे छोट रही आ भैया जेठ छला। हुनका चारिटा बेटा आ दूटा बेटी भेलैन। हमरा दूटा बेटेटा भेल।”

पुछलयैन- “अखन के सभ छैथ?”

कहलैन- “भैयाक परिवार तँ दिनो-दिन बढ़िते गेलैन मुदा हमर एकटा बेटा दस-बारह बर्खमे मरि गेल आ दोसर तेहेन चालि-चलैनिक भऽ गेल–माने गांजा

पीअ लगल–जे भरि-भरि दिन ओही पाछू तेना वौराएल रहै छल जे किछ कहि नहि। एक दिन खिसिएलिऐ। दुनू परानी पड़ा कऽ सासुरेमे बसि गेल। तेकर किछु दिनक बाद घरोवाली मरि गेल। मुदा तैयो जाबे देहमे हूबा छल ताबे तँ केकरो ने गुदानलिऐ मुदा जेना-जेना हूबा घटैत गेल तेना-तेना सभ किछु बिलटैत गेल! सोल्होअना जजमैनको भातिजे सभकेँ दऽ देलिऐ। दऽ देलिऐ बड़बढ़ियाँ, मुदा तेहेन-तेहेन जनीजाति सभ घरमे आबि गेल जे कियो देखैबला नइ रहल।”

पुछलयैन- “आब की सोचै-विचारै छी?”

कहलैन- “आब की सोचब-विचारब। तखन तँ...।”

मनमे भेल, एक आदमीकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ कोन बड़ भारी काज भेल...।

कहलयैन- “अहीठाम रहि जाउ।”

‘अहीठाम रहि जाउ’ सुनि पुरन कक्काकेँ जेना जान-मे-जान एलैन। मुदा बजला किछु ने, मुस्कियाए लगला। बुझि पड़ल जेना नव जिनगी भेट गेलैन तहिना खुशीसँ मुस्कियाइते रहला।

❑

शब्द-संख्या: 2234

रचना-तिथि: 22 अक्टूबर 2015

जीवन दर्शन

फागुन मास। भिनसुरका आठ बजेक समय। शम्भुनाथ काका असगरे दरबज्जाक चौकीपर बैसल मने-मन आजुक परिवेशक विचार कऽ रहल छला। विचित्र स्थिति मनुक्खक जीवनमे उपस्थित भऽ गेल अछि..!

सलमपुर गाममे शम्भुनाथ काका जहिना सभसँ उमेरगर छैथ तहिना सभसँ विचारवान सेहो मानल जाइ छैथ। ओना, गाम-घरमे एहेन कहबी सेहो चलिये रहल अछि जे उमेर नहि जेठ होइए, बुधि बपजेठ होइए। धरतीपर जे जन्म लेलक अछि ओ समयक संग आगू बढ़ैत उमेर तँ बिताइये रहल अछि जइसँ दिन-महीना-साल होइत ओ अप्पन आयुक अन्तिम सीमा प्राप्त करिते अछि; मुदा बुधि-ज्ञान ऐसँ भिन्न अछि जे लोककेँ अध्ययन आ साधनासँ प्राप्त होइए। ओ ईहो देखि रहल छैथ जे मनुक्ख अप्पन जीवन दर्शनसँ विमुख भऽ रहला अछि।

असगरे दरबज्जापर बैसल सोचैत-विचारैत शम्भुनाथ कक्काक मनमे एलैन जे सामाजिक जीवन, माने मनुक्खक जीवन विचित्र स्थितिमे पड़ि गेल अछि। ओ देखि रहला अछि जे एक दिस मनुक्खक समाजिक जीवन हुअ आकि पारिवारिक जीवन, ओ राँइ-बाँइ भऽ टुटि रहल अछि आ दोसर दिस पारिवारिक जीवनक राग सेहो अलापिये रहल अछि। अनायास शम्भुनाथ कक्काक विचारमे अप्पन जीवनक दर्शन भेलैन।

अखन तक शम्भुनाथ कक्काक परिवार किसानी जीवनसँ जुड़ल रहल छैन। किसानक स्थिति देखि शम्भुनाथ कक्काक मन विचलित भऽ गेलैन। विचलित होइते विचार उठलैन जे किसानी जीवन मरि रहल अछि आ बाजारू जीवन हावी भऽ रहल अछि। अखनो आ अखन तकक जे इतिहास रहल अछि तहूक अनुसार किसानक देश भारतकेँ मानल जाइए। ओहुना सभ कहिये रहल

छैथ जे भारत किसानक देश छी। एहेन विचार सिर्फ भावात्मके रूप टामे नहि अछि, वास्तविक रूपमे सेहो अछिए। जखन भारतक इतिहास देखै छी तखन स्पष्ट देखि पड़िते अछि जे अखन तकक जे जीवन मनुक्खक रहल अछि ओ किसानीए आधारित रहल अछि।

आइ हमसभ एक्कैसम शदीक एक-चौथाइ समय पार कऽ चुकल छी, मुदा ग्रामीण समाजक की जीवन स्तर अछि सेहो तँ देखिये रहल छी। ओना, सरकारी आँकड़ाक हिसाबसँ, जइ समयमे देश स्वतंत्र भेल, माने 1947 इस्वी, तइ समयक अपेक्षा देशक ऊपज बढ़ल अछि। जनसंख्या सेहो दोबरसँ बेसीए भऽ गेल अछि। नव-नव खोज आ नव-नव तकनीकी साधन सेहो बढ़ल अछि मुदा गामक वास्तविक स्थिति की अछि सेहो सभ देखिये रहल छी। अपना समाजमे अदौसँ संयुक्त परिवारक चलैन आबि रहल अछि, मुदा आइ जे परिवारक बीच जे सम्बन्ध बनि रहल अछि, ओ केतए जा रहल अछि। गाम-गामक लोक गाम छोड़ि बाजार दिस भागि रहल छैथ, जेकर फलाफल देखिये रहल छी जे गाम सिर्फ घरे टासँ नहि उपैट रहल अछि, वंशगत सम्बन्ध सेहो नष्ट भऽ रहल अछि। वृद्धजन सभक जीवन अत्यन्त कष्टकर भइये गेल छैन। कियो केकरो देखनिहार नहि।

टुटैत गाम आ नष्ट होइत परिवार आ पारिवारिक जीवन देखि शम्भुनाथ काका मने-मन चिन्तामे डुमल, आँखि मुइन सोचिये रहल छला कि रीतलाल पहुँचल।

शम्भुनाथ काकाकेँ आँखि बन्न देखि रीतलाल बाजल- "काका।"

'काका' सुनि शम्भुनाथ काका आँखि खोललैन मुदा जहिना नशापान केनिहारक आँखिमे नशाक खुमारी लटकल रहैए तहिना हुनका मनमे गामक दुर्दशाक चिन्ता लटकल छेलैन, मुदा तैयो बजला- "रीतलाल।"

अखन तक रीतलाल बिसरले छल, जे एकाएक मनमे उठलै- प्रणाम कहाँ केलिऐन। तँए अपनाकेँ संयमित करैत रीतलाल बाजल- "काका, गोड़ लगै छी।"

जहिना रीतलाल बाजल तहिना शम्भुनाथ काका सेहो आसीरवाद दैत बजला- "नीके रहह बौआ। की हाल-चाल छह?"

रीतलाल बाजल- "सभ बढ़ियाँ अछि। एकटा समाचार सुनलौं, सएह कहए एलौं हेन।"

समाचार तँ समाचार छी। एक नहि हजारो-लाखो घटित घटनाक समाचार सभ दिन उठिते रहैए। तइमे एकटा कोन समाचार छी? जिज्ञासासँ शम्भुनाथ काका बजला- “की समाचार?”

रीतलाल बाजल- “काका, सुनैमे आएल अछि जे जगन्नाथपुरमे सुर्ज भगवानक मूर्ति, पोखैर खुनाइत काल निकलल अछि। जेकर दर्शन करए गाम-गामक लोक उनैट कऽ जा रहला अछि। कियो कामौर लऽ कऽ तँ कियो फुलडालीमे फूल लऽ कऽ, बहुत लोक दर्शन करए जा रहल छैथ, तँए मनमे भेल जे अहूँकेँ कही आ अपनो दुनू बापूत दर्शन करए चली।”

शम्भुनाथ काका आत्मज्ञानी लोक छैथ। दिनभरि आत्मज्ञानक बीच अपनाकेँ रखि आत्मचिन्तनमे लगल रहै छैथ। रीतलालक विचार सुनि शम्भुनाथ काका बजला- “रीतलाल, आजुक समाजक जे परिवेश बनि रहल अछि ओ ओहन बनियोँ गेल अछि आ बनियोँ रहले अछि जे लोक बिना किछु सोचने-विचारने भेड़िया-धँसान जकाँ उनैट कऽ देखए जाइये रहल अछि। तैठाम जँ अपनो सएह करी, से कहाँ धरि उचित हएत।”

शम्भुनाथ कक्काक विचार सुनि रीतलाल जोर दैत बाजल-

“काका, सुनै छी जे ओ मूर्ति अद्भुत अछि। एहेन सुन्दर मूर्ति आइ तक कोनो स्थानमे नइ अछि। साक्षात् सुर्जभगवान जकाँ मूर्ति अछि।”

रीतलालक विचारक जोर देखि शम्भुनाथ काका बजला-

“रीतलाल, अपना ऐठाम छठम-सातम शताब्दीमे जहिना चित्रकला तहिना मूर्तिकला, माने पाथरक मूर्ति बनबैक लूरि, एते उन्नतिशील भऽ चुकल छल जे ओइसँ पूर्व कहियो ने छल। जखन अपना देशपर मुसलमानी शासनक आक्रमण भेल तखन लोकसभ ओइ मूर्तिसभकेँ माइटिक तरमे गाड़ि-गाड़ि ऐ दुआरे रखलैन जे आक्रामक नहि देखि पौत आ मूर्ति सुरक्षित रहि जाएत।”

शम्भुनाथ कक्काक विचार रीतलाल आधा-छिधा बुझबो केलक आ आधा-छिधा नहियोँ बुझलक। बुझै आ नइ बुझैक प्रति मूल कारण रीतलालक भावभूमि छल। सामाजिक परिवेश अखन जे बनि गेल अछि, माने वर्तमानमे जइ तरहेँ लोकक विचार अतीतोन्मुखी भऽ रहल अछि, तइ अनुकूल रीतलालक भावभूमि सेहो बनि गेल अछि जइसँ वास्तविक बात बुझैक विचार क्षीण भऽ गेल छै आ काल्पनिक भावभूमि मजगूत। खाएर, जेहेन भावभूमि रीतलालक बनि गेल

अछि तही अनुकूल सोचै-विचारैक दिशा सेहो बनियेँ गेल छइ। अप्पन विचारकेँ स्पष्ट करैत रीतलाल बाजल-

"काका, सुनै छी जे ओ अंकुरित अछि।"

रीतलालक विचार सुनि शम्भुनाथ काका मने-मन विचार करए लगला जे की अंकुरित अछि आ की नहि अछि। एहेन विचार लोकक मनकेँ तेना घेरि नेने अछि जे उचित-अनुचित एकबट्ट भऽ गेल छइ। जहिना अंकुरित शब्द, अप्पन अर्थक दृष्टिएँ बनि गेल अछि, तहिना 'धर्म' आ 'सनातन धर्म'क सेहो बनियेँ गेल अछि। लोकक एहेन भावना, परिवेश बनने, बनियेँ गेल छैन जे उचित-अनुचितक विचार कइये ने पेब रहला अछि। शम्भुनाथ काका बजला-

"रीतलाल, कोनो काज करैसँ पूर्व ओकरा पहिने नीक जकाँ विचारि ली जे ई काज केतेक उचित आ जीवनोपयोगी अछि। जँ से नहि विचारब तँ नीक-बेजाए केना बुझि सकब। यएह अन्तर समझदार लोक आ नासमझदार लोकमे होइए। कोनो काजे वा कोनो विचारे करैसँ पूर्व ओकरा धियानसँ सोचि-विचारि लेब बुद्धिमानी छी। जे बुधियार लोक करै छैथ; मुदा जे बुधियार नहि छैथ ओ आँखि मुइन पहिने करैयेक चेष्टा करै छैथ। पछाइत हुनका बुझिमे अबै छैन जे हम नीक केलौं कि अधला। तोहूँ जनै छह आ हमहूँ जनै छी जे दुनियाँक सभ वस्तुओ आ विचारो परिवर्तनशील अछि। समयक गतिक अनुरूप ओ बदलैत रहैए। मुदा किछु एहनो तँ अछिए जे नइ बदलैए। बजैक क्रममे सभकियो बजै छैथ जे दुनियाँक सभ किछु परिवर्तनशील अछि मुदा ओ ई नहि बुझि पबै छैथ जे एहनो तँ अछिए जे परिवर्तनशील नहि अछि।"

शम्भुनाथ कक्काक विचार रीतलाल नीक जकाँ नहि बुझि पेलक तँए बाजल- "काका, अपनो बुझै छी आ लोकोक मुहेँ सुनै छी जे दुनियाँक सभकिछु परिवर्तनशील अछि। समयक गतिक हिसाबसँ ओ बदैलिते अछि।"

रीतलालक विचार सुनि शम्भुनाथ काकाकेँ हँसी लगलैन। हँसैत बजला-

"बौआ रीतलाल, दू तरहक दुनियाँ अछि। एक बाहरी आ दोसर भीतरी। बाहरी दुनियाँक वस्तु बदैलए। तहूमे किछु एहेन अछि जे नइ बदलैए। मुदा भीतरी दुनियाँ, माने मनुक्खक भीतरी दुनियाँ, सभदिन ओहिना-क-ओहिना रहैए। माने जहिना पूर्वमे छल तहिना अखनो अछि आ तहिना भविष्यमे सेहो रहत।"

विचारकेँ बदलैत रीतलाल बाजल- "काका, जखन सभ दर्शन करए

जाइये रहला अछि तखन अपनोसभ चलू।”

रीतलालक विचार सुनि शम्भुनाथ काका बजला- “बौआ रीतलाल! जाइमे कोनो हर्ज नहि, मुदा मन तँ यएह मानि रहल अछि जे ओ जाएब मात्र पाथरक दर्शन करब हएत। जखन कि मूल विषय अछि मनुक्खकेँ अप्पन जीवन दर्शन करब।”

‘अप्पन जीवन दर्शन’ सुनि रीतलाल चौंक उठल। चौंकैत बाजल- “अप्पन की दर्शन?”

शम्भुनाथ काका बजला- “अपने-आपकेँ जानि लेब सभसँ पैघ दर्शन छी। जहिना अनेको स्थानक अनेको देवता छैथ, जिनका दर्शन करए लोक जाइए, तहिना जँ कियो दोसर आदमीकेँ अप्पन जीवन दर्शन करबै छैथ तँ ओ धर्म स्थलक दर्शन सेहो भेल। जहिना कियो कोनो धर्म स्थान पहुँच दर्शन करै छैथ, तहिना जँ किनको कियो अप्पन जीवन दर्शन करबै छैथ तँ ओ सेहो दर्शन भेबे कएल। तहूमे जँ कियो बेकतीक सीमासँ आगू बढ़ि समाजक दर्शन करबै छैथ तँ ओ जहिना गंगासागरक दर्शन भेल तहिना श्वेतवाण रामेश्वरक दर्शन सेहो भेबे कएल। समाजे समुद्रक रूपमे छैथ आ बेकती स्थानक रूपमे। आ तहिना नदी जीवनक प्रवाह रूपमे सेहो अछिए।”

शम्भुनाथ कक्काक विचार रीतलाल नीक जकाँ, माने गहराइसँ, नहि बुझि पेलक। गहराइसँ नहि बुझि पेबाक कारण रीतलालक ई छल जे चिन्तनक अथाह सागरक बाट अखन तक रीतलाल ने कहियो पकड़ने छल आ ने ओइ दिशामे एक्को डेग बढ़ले छल। सोभाविक रूपेँ रीतलाल बाजल- “काका, समय बहुत भऽ गेल। अखन जाइ छी।”

❑

शब्द-संख्या: 1341

रचना-तिथि: 02 जून 2026

विचारवान

✳

जेठ मासक अन्तिम समय। गुलाब भाय आने दिन जकाँ चारि बजे भोरे उठिकऽ दुनू बरदो आ दुनू गाइयोकेँ घरसँ बहार करिकऽ खाइले दऽ लोटामे पानि नेने आमक गाछी पहुँचला। पनरह कट्ठाक आमक गाछी, जइमे कलमी-सरही मिला तीसटा आमक गाछक संग सात टा शीशोक गाछ, तीनटा गुलजामुनक गाछक संग पाँच टा गम्हारिक गाछ सेहो छैन। ओना, चारि कट्ठाक बँसवारि सेहो छैन मुदा ओ छैन दोसरठाम। जइमे बाँसे टा छैन।

गाछी पहुँचते गुलाब भाय बगबारकेँ, जेकरा गाछी ओगरवाहि देने छथिन, गाछीएक मचानपर बैसल देखलैन। मचानक निच्चाँमे लोटा रखि बगबारक संग गुलाब भाय गाछी घुमए लगला। जियालाल जे गाछीक बगबार छी, तमाकुलो चुना रहल छल आ गुलाब भाइक संग घुमियो रहल छल। गाछ सबहक आम देखि जहिना गुलाब भाय खुशी छला तहिना जियालाल सेहो खुशी छल। खुशीक कारण दुनू गोरेक छेलैन जे गाममे, लक्ष्मीपुर गाममे, गुलाब भाइक गाछी छोड़ि दोसर किनको गाछीमे आम नहि अछि। ओना, मोजरलैन सभक गाछी, मुदा सभ मोजर झड़ि गेने किनको गाछीमे आम नइ सुतरलैन। शुरूहेमे, जखन आममे मोजर भेल तखने, लाही एते जोर पकैड़ लेलक जे सबहक गाछीक मोजर लहिया कऽ झड़ि गेल।

चुटकीसँ तमाकुल दैत जियालाल बाजल-

"भाय, ऐबेर अप्पन आमक गाछी छोड़ि गाममे किनको गाछीमे आम नहि छैन, तँए बगबाइर बेसी करए पड़ि रहल अछि।"

ओना, गुलाब भाय नीक जकाँ जानि रहल छैथ जे किए अपना गाछीमे आम अछि आ अनका गाछीमे नइ छैन। मुदा तइ विचारकेँ मनेमे रखि गुलाब भाय

विचारकेँ बहलबैत बजला-

"ई सभ संयोग छी, संयोग भेल तँए अपना गाछीमे आम सुतरल आ दोसराक गाछीमे नइ सुतरल।"

मुँहक तमाकुलक पहिल खेपक थूक फेक जियालाल बाजल-

"भाय! अहाँ जेकरा संयोग कहै छिऐ ओ संयोग नहि, खेतीक अनुभव छी। अखन तक जे आमक गाछीक चलैन समाजमे रहल अछि ओ सोल्होअना भगवाने भरोसक रहल अछि। जखन कि सभ तरहेँ आजुक लोक पहिलुका लोकक अपेक्षा बुधियारो भेला अछि आ जानकार सेहो भेबे केलाह अछि। मुदा बेवहारमे ओ अखनो ओहिना छैथ जेना पूर्वक लोक छला।"

जियालालक विचार सुनि गुलाब भाय मने-मन विचार केलैन जे गाछी अप्पन छी मुदा गाछीक सभ कर्ता-धर्ता तँ जियालाले छी, तँए अपने जे आमक खेतीक तरीका बुझै छी ओ जियालालसँ छिपाकऽ राखब उचित नहि, ओना जेना-जेना समयक हिसाबसँ कहै छिऐ तेना-तेना ओ करबो करिते अछि, तँए अनका अपेक्षा अपना गाछीमे आम सुतरल अछि। गुलाब भाय बजला-

"जियालाल, आमक गाछी लगबैक सम्बन्धमे अपना समाजमे एकटा कहबी अछि जे 'चैतक गाछी आ माघक बाछी, दुनू गुणवान होइए'। माने ई जे चैतमे लगौल गाछी सभ साल फड़ैए। ओना, गाछी-कलम लगबैक दू टा समय अछि, पहिल चैत आ दोसर कातिक। चैतक गाछी लगबैमे बेसी पटौनी करए पड़ैए, जखन कि कातिकमे ओइ अपेक्षा बहुत कम पटबए पड़ैए। मुदा तइमे एते तँ अन्तर आबिये जाइए जे कातिकक लगौल गाछ कोनो साल फड़बो करैए आ कोनो साल नहियोँ फड़ैए।"

गुलाब भाइक विचारक रहस्य जियालाल बुझि रहल अछि मुदा अपनाकेँ छिपबैत गुलाब भाइक विचारमे टोन दइत बाजल-

"भाय, अहाँक ढंग, आमक गाछक सेवाक ढंग, आन-आनकेँ नहि छैन। जँ छैन्हो तँ ओ नहि करै छैथ। तँए अपना गाछीमे आम सुतरल अछि आ अनका गाछीमे आम नहि सुतरलैन।"

जियालालक विचार सुनि गुलाब भाइक मनमे उठलैन जे, जे सत्य बात अछि ओकरा छिपाएब उचित नहि। केकरो कहलासँ ओ गुण ओकरोमे आबि

जाएत जइसँ ओहो अनुभवी भऽ जाएत तइमे अप्पन की नोकसान हएत। कहलो गेल अछि जे 'धर्म किये धन ना घटे'। गुलाब भाय बजला-

"जियालाल, सालमे आम एक बेर फड़ैए। आमे टा नहि, बहुतो फल एहेन अछि- जेना जामुन, कटहर, बेल इत्यादि, जे सालमे मात्र एकबेर फड़ैए आ बहुतो फल एहेन अछि जे सालो भरि फड़ैए जेना- लताम, अनरनेबा इत्यादि। कहैले आम एक बेर फड़ैए मुदा ओकर तरद्दुत सालो भरि करए पड़ैए जे जनितो आ नहियोँ जनैत आन-आन किसान नहि करै छैथ आ अपने करै छी तँए फड़ल अछि। देखबे करै छह जे अखाढ़मे आम समाप्त भऽ जाइए, मुदा आन-आन किसान तेकर बाद किछु ने करै छैथ जखन कि अपने, भलेँ तोरे माध्यमसँ किए ने हुअए मुदा कातिकमे गाछीक तमनी सेहो करै छी आ गाछ सभमे जे बाँझी लगि गेल रहैए तेकरो पङबै छी। तैसंग माघमे सलोहाल पटौनी सेहो करै छी, तँए अप्पन गाछी सभ साल फड़ैए आ आन-आन नहि करै छैथ तँए गोटे साल फड़बो करै छैन आ गोटे साल नहियोँ फड़ै छैन।"

दुनू गोटे गप्पो-सप्प करै छला आ टहलबो करै छला। तैबीच दूटा गुलाबखास आम खसल। दुनू सिनुराएल सुपक पाकल छल। दुनू आम लऽ गुलाब भाय मचानपर रखि, पैखाना गेला। पैखानासँ आबि दुनू आम नेने घरपर विदा भेला। घरसँ कनी पाछुए रहैथ कि एकाएकी लोक सभकेँ अपना ऐठाम अबैत देखलैन। लोकक अवाहि देखि गुलाब भाइक मनमे शंका भेलैन जे किए लोकसभ आबि रहला अछि। किनको किछु भेलैन अछि की.! गुलाब भाइक मनमे शंका सेहो बढ़ल जा रहल छेलैन आ डेगे-डेग आबियो रहल छला।

घरपर पहुँचते श्याम काका बजला-

"एकसठिम वर्षक आगमनक शुभकामना, गुलाब.!"

गुलाब भाय बिसैर गेल छला जे अप्पन कएम बरख छी। मुदा श्याम कक्काक शुभकामना सुनि हुनका धक-दे मोन पड़लैन जे काल्हिये अप्पन साठिम बरख पूर भऽ गेल आ एकसठिम बरख आइ चढ़ि गेल अछि। अनायास गुलाब भाइक मनमे अप्पन जीवनक बीतल साठि बर्खपर नजैर गेलैन। तैबीच अनेको गोरे आबि-आबि कियो 'गुलाब भाय', कियो 'गुलाब काका' कहि-कहि एकसठिम बर्खक शुभकाना दिअ लगलैन। लोकक अवाहि एतेक बढ़ि गेल जे गुलाब भायकेँ अपनो बुझि पड़ए लगलैन आ आनो-आनकेँ बुझि पड़ए लगलैन जे

एतेक शुभकामना समाजमे भरिसक किनको ने देल जाइ छैन। अनकापर सँ हटि गुलाब भाइक नजैर अपनापर एलैन। तहीकाल गोपीकाका आबि शुभकामना दैत गुलाब भायकेँ कहलकैन-

"गुलाब, शतायु बर्खक शुभकाना।"

ओना, गुलाब भाइक मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे काल्हि धरि जे कियो अपनाकेँ विचारहीन बुझै छला से आइ एकाएक एना किए भऽ रहल अछि।

अप्पन पैछला जीवन दिस नजैर दौड़ेलैन जे अपनामे ओहन कोन गुण अछि जे समाजक सभकियो शुभकामना दऽ रहल छैथ?

पैछला जीवनपर गुलाब भाय जखन जोर देलैन तखन मोन पड़लैन जे आन-आन जकाँ अप्पन जीवन नहि रहल अछि। अप्पन जीवन आनसँ भिन्न रहल अछि। शुरूहेसँ अप्पन एहेन धारणा बनि गेल अछि जे मनुक्खक जीवन वएह श्रेष्ठ जीवन छी जे समत्व रूपमे चलैए, माने ई जे, जे जीवन बेकतीगत सीमासँ आगू बढ़ि सार्वजनिक जीवन बनि चलैए। जीवयोनि मे सभ अपने-अपने जीवन तक अपनाकेँ समैट चलैए। जखन कि अप्पन से नहि रहल अछि। जहिना अपनाकेँ सार्वजनिक बना, सबहक सुख-दुखमे भागीदार बनि शुरूहेसँ जेना सेवा करए लगलौं, तहिना अखनो करिते छी। जेकरा चलैत जहिना पढ़ाइ छोड़ला-बाद राजनीतिक दलसँ जुड़लौं आ नेतृत्वक बेवहारसँ अलग भऽ अपनाकेँ समाजसँ जोड़ि सेवा करए लगलौं, तहिना अखनो कइये रहल छी। मनमे मिसियो भरि कहाँ ओहन विचार अछि जे फल्लाँ अपनासँ गरीब आ पछुआएल जाइतिक छी। समान दृष्टिसँ सभ दिन ओकर संगो रहलौं आ ओकरा सुख-दुखमे सेहो संग दइते आबि रहल छी आ अखनो दइते छिऐ आ जाबे जीब ताबे सेहो दइते रहब। एकाएक गुलाब भाइक विचार ऐठाम आबि ठमकलैन।

कनीकाल ठमकला-पछाइत पुन: गुलाब भाइक मनमे उठलैन जे गाम-गामक समाज जाति-जातिमे विभाजित अछि। अपनो गाममे अछिए, मुदा अपना मनमे कहाँ कहियो आएल अछि जे फल्लाँ अछोप वा नीच जाइतिक छी तँए ओकरा ऐठाम नहि जाइ, ओकर छुअल अन्न वा पानि नहि पीबी। जेकर चलैत अप्पन समाज, माने अप्पन जाति केता बेर बाड़बो केलैन आ ढाठबो तँ करबे केलैन। मुदा कहाँ कहियो ओइ समाजक पाछू झुकलौं। बेर-बेर समाजे झुकि-झुकि पुन: अपनौलैन।

समाजक लीला, जातीय समाजक लीला, देखि गुलाब भाइक मन पुन: ठमकलैन। ठमकला-पछाइत फेर गुलाब भाइक मनमे जगलैन जे अपने समाज टा नहि, समाजे किए कहबै जे परिवार-परिवार तकमे सेहो, कहैले तँ ओ धार्मिक सम्प्रदाय छी, मुदा धर्मक जे वास्तविक रूप अछि तइसँ भिन्न अछिए। विभाजित रहितो जहिना परिवारमे तहिना समाजमे मतभेद भेने एक-दोसरसँ घृणा सेहो करिते अछि। मुदा से अपनामे कहियो कहाँ भेल। अखनो नहि अछि...।

तहीकाल रामलखन बाबा सेहो पहुँचला। पहुँचते बजला-

“गुलाब, तोहर जे जीवनक विचार रहल छह ओ सर्वोत्कृष्ट रहल छह। आजुक शुभकामनाक संग भविष्यक शुभकामना सेहो दइ छिअ जे अहिना दनदनाइत जीवन भरि विचारवान बनल रहह।”

रामलखन बाबाक शुभकामना सुनि गुलाब भाय बजला किछु नहि मुदा आँखिपर आँखि चढ़ा मने-मन विचार जरूर करए लगला जे श्रेष्ठजनक प्रसाद भेटल।

❑

शब्द-संख्या: 1273

रचना-तिथि: 05 जून 2026

❑❑❑

❑❑

❑

Notes